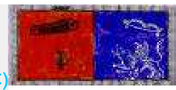
ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' २५८ म अंक १५ सितम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १२९ अंक २५८)

वि दे ह *विदेह Videha বিদেহ* ***http://www.videha.co.in*** *विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly e Magazine विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू।*

ऐ अंकमे अछि:-



Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE **विदेह आर्काइव**

Join official Videha facebook group.

Google समूह Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

२.१.१.देवेश झा-१.हिन्दू विवाह :एक समीक्षा २.'दू-पत्र' उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययन २. आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-२ ३. डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

२.२.१. नारायण यादव- भाय-बहिन २. डॉ. बचेश्वर झा-मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा 'यदुवरक देन ३. राजदेव मण्डल- वापसी (एकांकी)

२.३.रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

२.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास) धारावाहिक आ दूटा लघुकथा

१.देवेश झा-१.हिन्दू विवाह :एक समीक्षा २.'दू-पत्र' उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययन २. आशीष अनचिन्हार- हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-२ ३. डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'- उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

१

देवेश झा-१.हिन्दू विवाह :एक समीक्षा २.'दू-पत्र' उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययन

हिन्दू विवाह :एक समीक्षा

प्रमुख विचार विंदु : 1॰विवाह 2॰ कर्तव्य 3॰ यौवनक आवेग 4॰ ज्ञान

5॰ प्रतिस्पर्धाक संवेग 6॰आदर्श संबंध

30 जून 2018 के दैनिक जागरण पत्र विवाहक अदभूत दर्शन करौलक । किछू घंटाक विवाहक विधि नवोढ़ा कन्याक (नायिकाक) समग्र स्वच्छ्न्द अस्तित्वकें शून्यक धरातल पर आनबा मे सक्षम भऽ जाइत अछ । कतऽ नवयौवनक निश्चिन्त आ मस्त जीवन आऔर कत अपर पक्षक कर्त्तव्यक कारख़ाना । पत्नी एवं गृहिणीक जीवन कोनो घरक आबालबृध्द घर पधारल पत्नी रूपी बहूकेंदेखि परमानंदक अनुभूति करैत बजै छैथि- आब की ? कोन चिंता ? घरमे नव कनिया आबिये गेल छैथ, सब काज करबे करती आ सब सहबे करती, चलू मिठाई खाऊ आ खुशी मनाउ। किन्तु एतहिसँ असंतुलनक आर्त्तनादमुखरित होइत अछि जे कन्या यौवनक आवेगमे ज्ञान एवं प्रतिस्पर्धाक संवेग संबलसँ अनुस्यूत उच्चपदाकांक्षाक संग "सुपर वुमेन " बनवाक कामनासँ स्फुरित आर स्पंदित होदत रहैत छैथि ओ पत्नी तथा गृहिणीके दायित्वसँ दबिकें आहत होइत अपना जीवनके धिक्कारय लागैत छथि । जाखनाकि हमरा सभक मध्य कियो एहेन दुखद भाव नहि रखैत छथि ।

ते आवश्यक बुझना जाइत अछि जे पति-पत्नीक आदर्श संबंधके बुझबाक लेल विवाह एवं विवाह विधि केर पुरातन-नूतन रूपके बुझल-बुझाओल जाय। यथा-

हिन्दू विवाह धमर्म विवहके एक प्रकरण संस्कार मानल गेल अछि, जकरा दाम्पत्य जीवनक उत्तरदायित्व कहल जा सकैत अछि। अन्य धर्मिक अनुसारे विवाहिके पति-पत्नीक बीच एक प्रकरण समझौता सेहो कहित उचिते।

ओना विवाह एक समझौता त थिकिए, मुदा विवाहोपरांत पति-पत्नीक संबंध मे अग्निके साक्षी मनीके सात फेरा लेगाबैत छी जे हम सदा दुनू साथ रहब, मुदा अजुक जमाना किछू और अछि। हम अग्निके साक्षी मानी पवित्र बंधनमे त बंधी जइत छि मुदा समयके बदलैत क्रममे किछू दिनमे एहि पवित्र संबंध निवरहन करयमे आजुक युवाती-युवक के किछू उकरू बुझि पड़ैत अछि।

वैदिक कालमे विवाह संस्कार एक महत्त्वपूर्ण संस्कार मानल गेल अछि । ऐहि संस्कार मे स्वागत-सत्कार, विवाहक उद्घोष, वस्त्रादि उपहार, वर- वधुक प्रतिज्ञा,कन्यादान, गुप्तदान, दहेज, पाणिग्रहण, ग्रंथि बंधन, विवाहक विशेष यज्ञ, सात-परिक्रमा, शिलारोहण, ध्रुव आ सूर्यक दर्सनक, शपथ आश्वासन आदि क्रियासँ निवृत्त होमय पड़ैत अछि । हिन्दू धर्ममे गृहस्थ जीवन मानुष्य के दायित्व निर्वहाणक योग्य बनबाक एक मार्ग थीक, जाहिमे शारीरिक, मानसिक आ आर्थिक परिपक्वताक ज्ञान होइत अछि । एहि क्रममेंअनेक वरिष्ठ व्यक्ति, गुरुजन, कुटुम्ब संबंधी सबसँ धर्म, पुजा-पाठ, देवेताक आवाहन, अनुष्ठान करायबाक ज्ञान प्राप्त होइत अछि ।

ओना तँ विवाह आठ प्रकारसँ सम्पन्न होइत अछि।

1॰ ब्राह्म विवाह :- सुयोग्य वरसँ कन्याक विवाह बिना कोनो दान दहेजक करबाक प्रथा दुनू पक्षक सहमति सँ होएब ब्राह्म विवाह कहाबैत अछि ।

2॰ दैव विवाह :- कोनो सेवाक भावसँ किछू मूल्य लऽ क पहिने अपन कन्याके दानमे दैत छथिन्ह ई दैविवाह भेल।

3॰आर्ष विवाह :- ओना तँ ई विवाह पहिने कन्यादान बदला गौदानक रुपमे होइत छल। पहिने पुत्रिक विवाहक लेल वर पक्ष गायक दान करैत छलाह। एकरे आर्ष विवाह कहैत छी।

4॰ प्रजापत्य विवाह :- मैथिल संप्रदायमे कन्याक विवाह दोसर वार्गक वारसँ करा देव प्राजापत्य विवाह कहाबैत अछि ।

5॰ गंधर्व विवाह :- दुनू पक्षक सहमतिसँ कोनो रीति रिवाजक अनदेखी करैत वर- कन्याक विवाहके गंधर्व विवाह कहल जाइत अछि। एकरा ई युगमे प्रेम विवाह सेहो कहैत छी । जेना :- दूष्यन्त-शकुन्तलाक विवाह गंधर्व कहल गेल जिनक पुत्र भरत भेलाह। हुनके नाम पर हमर देश पड़ ल भारत ।

6॰ असुर विवाह :- वर्त्तमान सामयमे विवाहक जे प्रथा चलैत अछि, ओकरा असुर विवाह कही तँ कोनो हर्ज नहि । ज़ोर जबरदस्ती भगाक दान कार्यक दहेजक बिना विवाह असुर विवाह कहाबैत अछि ।

7॰ राक्षस विवाह :- कन्याक सहमतिक बिना विवाह करब राक्षस विवाह कहाबैत अछि ।

8॰ पिशाच विवाह :- कन्याक मदहोसक अवस्थामे वा वरक किछू नशाक अवस्था मे किछू खुआके लऽ जा के विवाह कराएब पिशाच विवाह कहाबैत

अछि ।

भारतीय सांस्कृतिक अनुसार विवाह कोनो शारीरिक आ सामाजिक अनुबंध मात्र नहि अछि अपितु दूनूक दाम्पत्य जीवानेकें एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक साधनाक रुपमे दर्शाओल गेल अछि । ठीके कहल गेल अछि :- “धन्यो गृहस्थाश्रम: ”।

मिथालमे पहिने सॅ विवाहक प्रथा अनेक दृष्टिकोणसॅ देवताक आवहानक उपरान्त अग्निदेवके साक्षी रुपमे संकल्प आदि करकें वरुण देवसॅ कृपालाभक बड़ अदृष्ट फल होएत अछि अहि दुनू शक्तिके एक हिएबाक एक गंभीर बात आर्य विवाहमे राखल गेल छल ।

विवाहक संबंधमे आर्ययूगसॅ पत्नीक दिशिसॅ पतिक शतायु होयबाक प्रार्थना आ पतिक दिशसॅ अभिन्न दाम्पत्य प्रेम प्रार्थना कएल गेल अछि जेना ।

राघवेन्द्रे यथा सीता विनीता काश्यपे यथा ।

पावके च यथा स्वाहा तथा त्वं मयि भर्त्तहि । आदि आदि

(धर्मविज्ञान,पृ0156)

एहिप्रकारें जेना रामक प्रति सीताक कश्यपके प्रति विनताके, अग्निक प्रति स्वाहाक, दिलीपक प्रति सुदक्षिणाक, वासुदेवक प्रति देवकीक, अगस्तक प्रति लोपमुद्राक, अत्रिक प्रति अनुसूइयाक, यमदग्निक प्रति रेणुकाक आ श्रीकृष्णक प्रति रुक्मिणीक पवित्र प्रेम छलैन्ह ओएह प्रेम आजूक वर कन्या मे मधुर प्रेम जीवनक ई प्रार्थना आर्य विवाह कालसॅ अछि जे एहि युगमे संभव नहि बुझाबैत अछि ।

एतय हमर मंतव्य अछि जे विवाह एक पति पत्नीक बीच परस्पर विश्वासक एक समझौता तॅ थिकीए संगे- संग एक प्रकारक कर्त्तव्य सेहो थीक जे विवाहोपरान्त व्यक्तिक जीवन शैलिमे कतेक प्रकारक उतार-चढाव अबैत अछि जाहि मध्य मनुष्य जीवन गाड़ीक दुनू पहियाक सदृश घुमैत ई जिनगी सुख-दुखक अनुभव करैत बितैत अछि ।

विवाहक विषयमे किछू मिलल-जुलल तथ्य युक्तिसंगत बुझि पड़ैत अछि।

यथा ___

जे पहिने एक दोसरसॅ आनठिया (अनचिन्ह)

पुन: क्रमश: एक दोसर पर आश्रित ,

उत्तरोत्तर सौंसे (संपूर्ण) जिनगिक संग ,

शनैह-शनैह परस्पर अभिन्न अपनामे,

एक उदात्त आनंदयुक्त मधुर स्पर्श ,

अकस्मात् अपनामे रुष्ट नोक- झोंक,

उच्चावच मति पर चलैत बढ़ैत विरक्ति-,

विभेद-तलाकक किनार तक।

कतहु जिद आ कतहु मानक अहम भाव ,

तथापि रकम-रकम दुनु निकट सुत्रमे बन्हैत एक पुष्प माल,

इ मधुर अज्ञातसँ ज्ञातक दिशामे ,

चलैत प्राणान्त पर्यन्त समय साध्य यात्रा ,

कनिया वरक इ कटु मधुर संबंध कखनहु,

अचार कखनहु तिक्त चटनी तँ संगही मधुर ,

रसायनक शाही भोग कखनहु लावण्य कखनहु नीम,

सब कीछु मिली भौतिक जगतक रुपें परिणत होइत अछि ।

काव्यक नवरश रुचिर भोगमे,

दु:खहुमे आनंद, परमानंद जाहिमे व्याप्त ,

दुखज जीवनक सुख ।

पुन: विवाह थीक

एक आश विश्वास मिलनमे आनंद ,

समाजमे जीवनक समर्पण ,

भल हो ओहि नवोढ़ा नारि केर ,

जे अचानक लेल अपनाके त्यागि देलैथ,

अपना लेलैथ, सर्वथा अनभिज्ञके ,

अपना ाँचर मे समा लेलैथ।

ताहिना धन्य छैथ ओ पुरुष सिंह,

जे नवागता अनचिन्हारि अबला पर ,

स्नेहिल विश्वास करैत अपना गर धरा,

समग्र ऐश्वर्य आ स्वयंके सौपि देलैथ ,

आओर की कहू-वाह रे विवाह, आह रे विवाह ।

देवेश झा

प्राध्यापक, मैथिली विभाग

एन0 डी0 कॉलेज, रामबाग ,

पुर्णिया ।

2

'दू-पत्र' उपन्यासक विश्लेषणात्मक अध्ययन

पत्रात्मक शैली में लिखल गेल एवं 1969 ई0 में साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत कएल गेल 'दू-पत्र' उपन्यास उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' क विषय तथा शिल्प दुनू दृष्तिएँ अत्यंत महत्वपूर्ण लघु उपन्यास थिक एहि उपन्यास में दुई गोट महिलाक दुई टा पत्र अछि जाहिमें एक पत्र भारतीय महिला श्रीमति इन्दु देवी नौ वर्ष सॅअमेरिका में रहैत अपन स्वामी कँ लिखने छथि ओ पहिल पत्र थिक । एकर अंग्रेजी अनुवादक प्रतिलिपि इन्दु देवी क ममियौत भाई रमेश छथि । रमेश सेहो किछू वर्ष पूर्व स्वयं अमेरिका चलि गेल छलाह ओ अपन पत्रक संग पठा दैत छथिन्ह ।

ओ दोसर महिला जे इन्दु देवी के हुनक पत्रक उत्तर दैत छथिन्ह से थिक अमेरिका निवासी जेसिका अमेरिका मे इन्दु देवी क पति सुरेन्द्र क संगी रहथि । आ ई थिक एही उपन्यासक दोसर पत्र । एहि

उपन्यासक सभ सँ पैघ विशेषता थिक पत्रक माध्यम सँ दू संस्कृतिक विवेचना दुनू पत्रमें दुनू देशक सभ्यता, सांस्कृति ओ संस्कार आदि साकार भ उठल अछि ।

पाश्चात्य सांस्कृतिक प्रतिमूर्ति जेसिका कोन रूपँ आपन पत्र में अपन सांस्कृतिक कएने छथि से वर्णनीय अछि । ओ अपने सांस्कृतिक अनुरूप पत्र लिखने छथि । तहि लेल एहि पत्रक निम्न अंश द्रष्टव्य थिक स्वामिक लग रहला सँ सुख चैन प्राय: छैक , परंतु बन्धनौं तँ कम नहीं । आ ई त ध्यान में रखक थिक जे जतै कतहु रही, अपन मायर्यादा स्वतंत्रता बड़ प्रिय अछि । ओहि पर आधार होयब हमरा आदि हुनक काज त हुनको हमर काज, नहीं तँ हुनक तरवा चटैत, नौकरानी भेली किए रहथिन्ह? ई थिक पाश्चात्य संस्कृतिक झलक ।

मुदा भारतीय सांस्कृतिक विशेषता थिक जे किछू भ जेतैक मुदा भारतीय नारी अपन पति कँ सर्वोपरि बूझिते रहत जकर उदारहण थिक इन्दु देवी द्वारा लिखल गेल पत्रक अन्तक विद्यापतिक पद । जकरा दोहराबैत इन्दु देवी पत्र कँ समाप्त करै छंयि । पति द्वारा एतेक गलती केएलाक बादो हुनका द्वारा एतेक अपमान, अत्याचार सहलाक बादो हुनका द्वारा एतेक अपमान, अत्याचार सहलाक बादो हुनको पर कोनो दोष नहिं लागल ।

अपन माथ पर सभ दोष लड कर पति कँ जुग-जुग जिवाक हेतु कामना करैत छथि । एहिठाम इन्दु देवी द्वारा लिखल पत्रक किछु अंश द्रष्टव्य अछि ——

“युग-युग जिबयु बसयु लाख कोस,

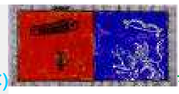
हमर अभाग, हुनक नहि दोष ।“

एहि उपन्यासक महत्व ओ विशेषता कँ प्रतिपादित करैत डॉ0 दुर्गानाथ झा श्रीश लिखने छथि- “एहि उपन्यासक महत्व अछि मैथिलि उपन्यास-क्षेत्र मे पत्रात्मक । रचना प्रणालीक नवप्रयोग एवं नवीन वस्तु-विषय ग्रहणक दृष्टि सँ ।

उपन्यासकर इन्दु , सुरेन जेसिका एवं रमेश चारि गोट मात्र पात्रक वृतान्त-प्रस्तुत कए बड़ कौशलक संग दुई संस्कृतिक तुलनात्मक विवेचना कएल अछि,विशेषतः भारतीय ओ पश्चात्य दृष्टिकोण में स्त्रीगणक सामाजिक ओ मानसिक स्थिति ओ आदेश में की अन्तर छेक, तकरा स्पष्ट करैत अन्तत: भारतीय ललनाक शालीनताक ओ श्रेष्ठताक बड़ सजीव प्रतिपादन भेल अछि | मानसिकद्वन्द ओ संघर्षक सूक्ष्म ओ कलात्मक आकलन एहि उपन्यासक प्रमुख विशेषता थिक |

दू पत्र उपन्यासक ममेके बुझबाक हेतु उपन्यासक प्रकृति एवं ओकर प्रयोजनके बुझब आवश्यक ते एहि प्रसंगे अंगरेजीक उपन्यासक प्रसिध्द समालोचक समरसेट मौंमक कथन द्रष्टव्य थिक ——

“I think it an abuse to use novel as pulpit or platform, and I believe readers are misguided when they suppose they can thus easily acquire knowledge.it



would be fine If we could swallow the powder of profitable information made palatable by the jam of fiction."

डॉ० अमरेश पाठक एहि उपन्यासक प्रसंग लिखने छयि-साधारणतः मैथिलीक उपन्यासकार लोकनि अपन सीमित अनुभव एंव उपन्यास कलाक हेतु अपेक्षित ज्ञानक अभावक कारणे ओहि पक्षक चित्रणों नहि कए सकलाह अछि जकर चित्रण दू पत्रमें संभव भए सकल अछि | चारि गोट मात्र पात्र पर सम्पूर्ण वृतांत आधारित अछि | ओ पात्र छयि -इन्दु देवी ,सुरेन्द्र जेसिका एवं रमेश |भिन्न-भिन्न परिस्थितिमें एहि पात्र सभके राखि मानसिक दून्द एवं संघर्षक चित्रण द्वारा जे चित्र व्यास जी अंकित कएल अछि से सत्यानुरूप भेल अछि | संघर्षहिक स्थितिमे पात्रक चरित्रमे निखार आबि सकैत आ अछि |जेसिका , रमेश एवं सुरेन्द्रक व्यक्तित्वक चित्रण जे कएल गेल अछि से प्रशंसनीय अछि | एहि करणवश अपन संस्कृति,सभ्यता ओ आचरण विश्वमे सर्वोपरि अछि| तहि से अपन देशक अनेकताओ में एकताक देश कहल जाइत अछि |

वस्तुतः ई उपन्यास दुनू देशक संस्कृति कें दर्शबैत भारतीय ललनाक शालीनता ओ श्रेष्ठता कें बड संजीव ओ कलात्मक ढंग स उपस्थिति करैत अछि |'दू पत्र ' पत्रात्मक शैलीमे लिखल गेल एक सफल उपन्यास थिक |

देवेश झा

एन० डी० कॉलेज रामबाग ,पूर्णिया

प्राध्यापक (मैथिली विभाग)

संदर्भ

1. दू-पत्र , पृ0-84
2. तथैव , पृ0-45

3. मैथिली साहित्यक इतिहास-श्रीश , पृ0-353

4. मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक आध्ययन पृ0-172

२

आशीष अनचिन्हार

हिंदी फिल्मी गीतमे बहर-२

गजलक मतलामे जे रदीफ-काफिया-बहर लेल गेल छै तकर पालन पूरा गजलमे हेबाक चाही मुदा नज्ममे ई कोनो जरूरी नै छै। एकै नज्ममे अनेको काफिया लेल जा सकैए। अलग-अलग बंद वा अंतराक बहर सेहो अलग भ' सकैए संगे-संग नज्मक शेरमे बिनु काफियाक रदीफ सेहो भेटत। मुदा बहुत नज्ममे गजले जकाँ एकै बहरक निर्वाह कएल गेल अछि। मैथिलीमे बहुत लोक गजलक नियम तँ नहिए जानै छथि आ ताहिपरसँ कुतर्क करै छथि जे फिल्मी गीत बिना कोनो नियमक सुनबामे सुंदर लगैत छै। मुदा पहिल जे नज्म लेल बहर अनिवार्य नै छै आ जाहिमे छै तकर विवरण हम एहि ठाम द' रहल छी-----------------

1

हसन कमालजीक लिखल आ "निकाह" फिल्म केर ई नज्म जकर बहर 2122 2122 212 अछि। मात्रा निर्धारणमे उर्दू ओ हिंदीक नियम लागल छै। (ओना तेसर शेरक दोसर पाँतिक शब्द "शायद" केर मात्राक्रम 21 करबाक लेल एकरा शाय्द मानल गेल छै) आन नज्मक अपेक्षा एकर शेर सभमे विविधता अछि तँइ हम एकरा गजल कहब बेसी उचित बुझैत छी।

दिल के अरमां आँसुओं में बह गए
हम वफ़ा करके भी तनहा रह गए
ज़िंदगी एक प्यास बनकर रह गयी
प्यार के क़िस्से अधूरे रह गए
शायद उनका आख़री हो यह सितम
हर सितम यह सोचकर हम सह गए
खुद को भी हमने मिटा डाला मगर
फ़ास्ले जो दरमियाँ थे रह गए

एहि नज्मक तेसे शेर बहुत मारुक अछि। शेरमे वर्णित "सितम" शब्द किछु भ' सकैत छै। ई प्रेमक सितम सेहो हेतै तँ व्यवस्थाक कि दैवक सितम सेहो भ' सकैए। फिल्म देखि क' एकरा मात्र प्रेमी प्रेमिका लेल बूझए बला लोक अबोध छथि से हम साफ साफ कहब।

2

राजेन्द्र कृष्णजीक लिखल आ "खानदान" फिल्म केर ई नज्म जकर बहर 2122 2122 212 अछि। मात्रा निर्धारणमे उर्दू ओ हिंदीक नियम लागल छै।

कल चमन था आज इक सहरा हुआ
देखते ही देखते ये क्या हुआ
मुझको बरबादी का कोई ग़म नहीं
ग़म है बरबादी का क्यों चर्चा हुआ
एक छोटा सा था मेरा आशियाँ
आज तिनके से अलग तिनका हुआ
सोचता हूँ अपने घर को देखकर
हो न हो ये है मिरा देखा हुआ
देखने वालों ने देखा है धुआँ
किसने देखा दिल मिरा जलता हुआ
(कल चमन था 2122 आज इक सह 2122 रा हुआ 212
देखते ही 2122 देखते ये 2122 क्या हुआ 2122)

3

"तवायफ" फिल्म केर ई नज्म जे कि आशा भोंसले द्वारा गाएल गेल अछि। नज्म लिखने छथि हसन कमाल। संगीतकार छथि रवि। ई फिल्म 1985 मे रिलीज भेलै। एहिमे अशोक कुमार, ऋृषि कपूर, रति अग्निहोत्री,पूनम ढ़िल्लन आदि कलाकार छलथि।

बहुत देर से दर पे आँखें लगी थी
हुजुर आते-आते बहुत देर कर दी
मसीहा मेरे तूने बीमार-ए-ग़म की
दवा लाते-लाते बहुत देर कर दी
मुहब्बत के दो बोल सुनने न पाए
वफ़ाओं के दो फूल चुनने न पाए
तुझे भी हमारी तमन्ना थी ज़ालिम
बताते-बताते बहुत देर कर दी
कोई पल में दम तोड़ देंगी मुरादें
बिखर जाएँगी मेरी ख़्वाबों की यादें
सदा सुनते-सुनते ख़बर लेते-लेते
पता पाते-पाते बहुत देर कर दी

एहि नज्मक सभ पाँतिक मात्राक्रम 122 122 122 122 अछि। एहि नज्मक पहिल शेरक दोसर पाँतिमे आएल "हुजुर" शब्दक सही रूप "हुजूर" अछि मुदा बहर निर्वाह लेल "हुजुर" उच्चारण लेल गेल छै। ओनाहुतो ई नज्म छै। जाहिमे बहुत नीक जकाँ बहरक निर्वाह भेल छै। एहि नज्मक ई शेर बहुप्रयोगी अछि........

मसीहा मेरे तूने बीमार-ए-ग़म की
दवा लाते-लाते बहुत देर कर दी
ई शेर जतबे सांसारिक प्रेम लेल छै ततबे राजनीतिक व्यंग्य सेहो छै। घरक कोनो सदस्यक उपराग सेहो ई शेर भ' सकैए।

३

डॉ. योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

उपन्यास- हमर गाम (आगाँ)

निवेदन

वन्धुवर जगदीश प्रसाद मण्डलक आग्रह जे 24 मार्च 2018कँ आयोजित 'सगर राति दीप जरय' लेल हम एकटा बाल उपन्यास जरूर लीखी जकर विमोचन ओतए कएल जाएत। हम पहिनहि कहि देने छलिएनि जे किछु निजी व्यस्तताक कारण हम एहि आयोजनमे सशरीर उपस्थित नहि भऽसकब।

बाल उपन्यासक एकटा खाका दिमागमे तैयारो कएल मुदा आकस्मिक चक्रव्यूहमे फँसि गेलासँ ओ तैयार नहि भऽसकल। मात्र दू दिन बचल छल जखन दोसरे किछु फुरा गेल आ चारि पाँती लीख बैसलहुँ। जे अछि, अपनेक समक्ष अछि। एकरा उपन्यास कहबै, उपन्यासिका, कथा आ कि गामक लेखा-जोखा से निर्णय अपनहि करबै।

अत्यल्प समयमे चि. उमेश मण्डल एकरा पुस्तकाकार बना विमोचन लेल तैयार केलनि ताहि लेल हुनक आभारी छी।

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'
कलकत्ता, 21 मार्च 2018

1. हमरो गाम मिथिले मे छै

हम कोनो पढ़ल-लिखल लोक नहि छी, अपितु यदि कहियै जे हमरा गाममे एकटा कैँ छोड़ि कियो पढ़ल लिखल नहि अछि तऽबेसी उचित होएत। घीच-घाँचि कए कहुना दशमा पास केलहुँ आ चल गेलहुँ दिल्ली रोजगारक खोजमे। शुरुएमे बुझा गेल जे एतए अपनाकेँ दशमा पास कहलासँ लाभ नहि नोकसाने अछि तें एहि बातकेँ नुका रखलहुँ आ जे काज हाथमे आएल से धरैत करैत गेलहुँ। अवसर देखैत काज छोड़ैत पकड़ैत कहुना दस साल बाद लगलहुँ टेम्पू चलबए। ताबत गाम दिश सेहो सड़क सब सुधरि रहल छलैक, फोर-लेन बनब शुरू भऽगेल रहै तऽसोचलहुँ जे गामे घुरि चली, ओतहि टेम्पू चलाएब। कने कमो कमाइ हैत तऽबेसिए लागत कारण गाममे कमसँ कम दिल्लीक सड़लाहा बसातसँ त्राण भेटत। कतबो किछु महग होउ, गाममे एखनहु बसात साफे छैक आ फ्री सेहो कारण एखन तक ओहिपर कोनो मालिक हक नहि जतौलक अछि।

हमर नीक कि खराप लति बूझू एतबे जे भोरमे तीन टाकाक एकटा अखबार कीन लैत छी आ टेम्पूपर जखन बैसल रहैत छी तखन ओकरा पढ़ैत रहैत छी। एक दिन एहने अखबारमे पढ़ल जे मिथिलामे नवका चलन एलैक अछि अपना अपना गामक महान विभूतिक वर्णन करैत किताब लिखब। किछु एहने किताब बजारसँ कीन अनलहुँ। देखलहुँतऽहर्षो भेल आ ताहिसँ बेसी इर्ष्यो आ ग्लानि भेल। हर्ष एहि लऽकए जे पहिल बेर बुझलहुँ मिथिलामे एहन महान विभूति सब भेलाह आ इर्ष्या आ ग्लानि एहि लेल जे हमरा अपन गाममे एहन कोनो विभूति किएक नहि भेलाह।

हमरा चिन्ता भेल- की सत्ते हमरा गाम मे कोनो विभूति नहि भेला? किछु बूढ़ पुरान सँ गप कएल। एक गोटे पूछि देलनि-

"खाली पढ़ले लीखल लोक विभूति होइ छै की?"

हम सोचए लगलहुँ। ठीके, से रहितै तऽ सिनेमा स्टार आ कि खिलाड़ी सब कें कियो चिन्हबे नहि करितै। हमरा बुझा गेल जे आन गामक विभूति सन तऽ नहि,तैयो एतेक जरूर जे हमरा गामक विभूति सब एक हिसाबें कतबो विचित्र रहथु मुदा ओहो लोकनि अपना समय मे गामक नाम कोनो तरहें उजागर करबे केलनि ।

सेहन्ता भेल जे हमहूँ अपना गामक बारेमे किछु लीखी। मुदा की लीखब? लिखबाक लुरियो तऽनहि भेल। तैयो हम ठानि लेल जे लिखबे करब। विभूति लोकनि जे छलाह, जेहन छलाह, भेलाह तऽमिथिलेक सुपुत्र/सुपुत्री ने। आ हमरो गाम जेहने अछि, अछि तऽओही माटिपर कमला बलान कोशीसँ घेराएल, रौदी दाही भोगैत अशिक्षा आ गरीबीमे उबडुब करैत। तें हम निश्चय कएल जे हिनका लोकनिक कीर्तिक गाथा लीखल जाए।एखुनका युगे विज्ञापन आ प्रचारक छिऐ, से गामक नुकाएल छिड़िआएल रत्न सबकेँ बहार करबाक चाही। हम गौआँ भऽकए यदि नहि लिखबनि तऽअनगौआँकेँ कोन मतलब छैक?

ओना तऽलिस्ट पैघ बनि गेल मुदा हम बहुत पुरान लोककेँ पहिने छाँटि कए मात्र दसटाक वर्णन एतए प्रस्तुत करए जा रहल छी। एहिमे पहिल नौटा छथि हमरा गामक नवरत्न आ दसम भेलाह विशिष्ट अतिथि

रत्न। आशा करैत छी गौआँ लोकनि हमर एहि प्रयासक प्रशंसा करबे करताह। यदि किछु अनगौआँ मैथिल समाजकेँ हमर गामक एको गोटेक कीर्ति नीक लगलनि तऽहमर प्रयास खूबे सफल बूझल जाएत। नहि तऽकमसँ कम किछु लिखित तऽरहिए जाएत जे एखनुक बूढ़ पुरानक दिवंगत भऽगेलाक बाद नवका पुस्तकेँ पूर्वजक यशक किछु ज्ञान देतैक।

हमर लिखल वस्तु सबकेँ मटिकोरबा गामक मिडिल स्कूलक हेडमास्टर साहेब बहुत कटलनि छँटलनि आ शुद्ध केलनि ताहि लेल हुनका बहुत धन्यवाद। बिना हुनकर सहयोग के ई अपने सबकेँ पढ़बा योग्य नहिए भेल रहैत।हम अपना गामक विभूतिक फोटो नहि छापि रहल छी। एकर कारण अपने सब पूरा पुस्तक पढ़लाक बाद बुझिए जेबैक।

विनीत

रामलाल परदेशी

(गामक एक उत्साही युवक)

गाम : खकपतिया

डाकघर:मटिकोरबा

जिला : मधुबनी।

2. बीए

मूल नाम: राम किसुन सिंह

पिताक नाम: अजब लाल महतो

जन्म तिथि: 1 जनवरी 1940। ई हुनकर सर्टिफिकेटमे लिखल छनि, मुदा हुनक पिताक अनुसार ओ तीन चारि बरख जेठ जरूरे छथि। जखन ओ मटिकोरबा गामक मिडिल स्कूलमे नाम लिखौलनि तऽहेडमास्टरकेँ जे बूझि पड़लै से लीख देलकै। हुनकर जन्म तऽभरदुतिया दिन भेल छलनि।

शिक्षा: यथा नाम, माने ओ बी.ए. पास छथि। ओ गौरवसँ एखनहुँ लोककेँ सुनबै छथिन जे मैट्रिक, आइ.ए. आ बी.ए.मे लगातार ओ तृतीय श्रेणीमे पास केलनि। संगहि मैट्रिकमे दू बेर, आइ.ए.मे तीन बेर आ बी.ए.मे चारि बेर फेल केलनि।

उपलब्धि: हुनक सबसँ पैघ उपलब्धि छनि हमरा गामक पहिल आ एखन तक के अन्तिम ग्रेजुएट भेनाइ। पछिला करीब पचास बरखसँ एहि रेकॉर्डकेँ पकड़ने छथि। ओहू पुरान जमानामे ग्रेजुएट भैयो कए हुनका जखन दस साल तक कतहु नोकरी नहि भेलनि तखन ओ हारि कए पुस्तैनी काज, खेती,मे लागि गेलाह।

एहन नहि जे सत्ते कतहु नोकरी नहि भेलनि। पुर्णियामे एक ठाम हाइ स्कूलमे अध्यापक भेलाह मुदा पहिले दिनक हिनक पढ़ाइ देखि कए ओतुका विद्यार्थी सबकेँ हिनक योग्यताक बेस अन्दाज लागि गेलैक आ ओ सब हड़तालपर बैसि गेल। एमहर साँझमे हिनका जे मच्छर कटलक से बोखार भऽगेलनि। दोसर दिन स्कूल जाइ के काजे नहि पड़लनि। कहुना एक हप्तापर गाम घुरि एलाह। विद्यार्थी सबकेँ विचारल बात विचारले रहि गेलैक। फेर दोसर बेर एहन योग्य शिक्षकसँ भेँट नहिए भेलनि हुनका सबकेँ।

स्वस्थ भेलाक बाद ओ नियारलनि जे मास्टरी हुनका बुते पार नहि लगतनि। चल गेलाह कलकत्ता भाग अजमबै लेल।कलकत्तामे एखनहु बीए पैघ योग्यता बूझल जाइत छलैक। ओना जाहि समय बीए बीए केलनि ताहि समय बिहारक परीक्षा पद्धतिक चर्चा आन आन ठाम शुरू भऽगेल छलैक आ किछु लोक बिहारी बीएकेँ ओकर उचित हक देबा लेल तैयार नहि छल। कलकत्तामे मटिकोरबा गामक एक गोटे कोनो सेठक ड्राइवर छल। ओ हिनक पैरवी केलक सेठ लग। किछु बेसिए बढ़ा चढ़ा कए कहि देलकै सेठकेँ। फल ई भेल जे सेठ हिनका बिना कोनो पूछताछ के अपना गद्दीपर मनेजर बना देलकनि। ई बहुत खुसी भेलाह।

मुदा भाग्यकेँ किछु दोसरे रस्ता देखेबाक छलैक। तेसर दिन सेठक एकटा मित्र आबि गेल आ ओकरा अनुपस्थितिमे ओहिना हिनका संग गपसप करए लागल। ओकरा मोनमे कोनो दुर्भाव नहि छलैक मुदा समस्या छल घेघ कतहु नुकाएल रहए ! सेठक मित्रकेँ बीएक असली घिबही बीए हेबापर कने सन्देह भऽगेलै आ एकर चर्चा ओ साँझमे अपना मित्र लग केलक। अगिला दिन जखन बीए गद्दीपर बैसलाह तखन सेठ आबि कए हुनका पछिला तीन दिनक हिसाब किताब पूछि बैसल। बीए घबरा गेलाह। ओना ओ कोनो गड़बड़ी नहि केने छलखिन मुदा हिनका ई बात सिखले नहि छलनि जे यदि किओ हिसाब किताब पूछत तऽउत्तर कोना देल जाए। एखन तक ओ खाली किताबी प्रश्नक उत्तर रटैत आएल छलाह। व्यावहारिक काजक उत्तर देब सिखबे नहि केलनि। से एतए ओ गड़बड़ा गेलाह। फल जे ओही दिन दुपहरियामे गामक गाड़ी धेलनि।

एहिना ओ पटना, दिल्ली मुम्बइ आदि कतेको छोट पैघ शहरमे सेहो भाग्य अजमौलनि मुदा भाग्य तऽहुनका गाम घीचऽचाहैत छलनि से पुर्णिया रहओ कि पटना,लखनउ कि लुधियाना, सब ठाम कोनो ने कोनो एहन परिस्थिति भइए गेलनि जे दू चारि दिनसँ बेसी नहि टिक सकलाह।

बीए सौंसेसँ बौआ कए गाममे खेती करए लगलाह। खेतीमे खूब नाम कमौलनि। दस किलो के मूर आ सात किलो के बैगन हुनके खेतमे उपजल छलनि। हमरा गाममे गुलाब आ गेंदा फूलक खेती हुनके शुरू कएल छिएनि। एखन हमर गाम एकर नीक व्यवसाय कऽरहल अछि। आब तऽदेखादेखी अगल बगलक गाम सबमे सेहो फूलक नीक खेती भऽरहलै अछि। एहि प्रयास लेल हुनका गामक पंचायतसँ विशेष पुरस्कार भेटलनि।

बीएक सबसँ पैघ उपलब्धि भेलनि गामक लोककेँ स्कूली आ कौलेजिया पढ़ाइक प्रति अविश्वास करौनाइ। तकर बाद कियो अपना धीया-पूताकेँ स्कूल कौलेज नहि पठौलक। मात्र साक्षर बनै लेल मटिकोरबाक मिडिल स्कूल तक। हमहू जे दशमा पास केलहुँ से एही कारण सम्भव भेल जे बाबूजी गुजरि गेला आ माएकेँ हम कहियो ई बूझऽनहि देलियै जे हम कतए जाइ छी आ की करै छी।

दस साल तक विभिन्न शहर सबमे घुमैत ठोकर खाइत बीएकेँ किछु नीक बुद्धि तऽभैए गेलनि। एकर उपयोग ओ केलनि गाममे झगड़लगौनाक रूपमे। हुनकर विशेषता अछि जे हुनका संग जे लोक पाँचो मिनट

बैसि गेल आ हुनकर देल एक खिल्ली पान खा लेलक ओ अपना दियादी आ कि पारिवारिक झगड़ामे जरूर फँसत। आ ओहि झगड़ाक पंचैतीमे बीए जरूरे रहता। बेसी झगड़ा गामक पंचैतीसँ उपर नहिए जाइ छैक। किछुए एहन घटना भेलैक जे बीए बादमे सम्हारि नहि सकला आ मोकदमा भऽगेलै। कतबो माँजल ओझा गुणी रहथु, किछु भूत हुनको हाथसँ छुटिए जाइ छनि ने। तहिना बूझू।

हमरा गामक सीमामे जे चारू कातक चारि पाँच गामक लोकक जमीन जाल छैक ओहो सब एहि झगड़लगौना प्रेतक चक्करमे फँसिये जाइत अछि। सबकेँ बूझल छैक जे बीए संग बैसनाइ आ हुनकर पान खेनाइ माने भेल कपारपर दुरमतिया सवार। मुदा कहाँ कियो बचि पबैत अछि? बीएक मधुर सम्भाषणक आगू सब फेल।

बीए एहि लूड़िसँ कोनो कमाइ नहि करैत छथि, ई तऽमात्र हुनकर मनोरंजन छिएनि। एहन उदार चरित्रक लोक परोपट्टामे नहि भेटत। एहि किताब लिखबाक क्रम मे एक दिन हम पूछि देलिएनि-

“एखन तक कतेक लोकक बीच झगड़ा लगा देने हेबै?”

ओ तऽ सबटा लीख कए रखने छला। एकटा पैघ लिस्ट हमरा आगू पसारि देलनि। हम चकित भऽ गेलहुँ। बीए तऽ नारदोक कान कटलनि मुदा किनको बूझल नहि। जरूर एकरा एक बेर गिनीज बुक अथवा लिमका बुक मे छपबैक कोशिश करबाक चाही। से भऽ गेला सँ अहीं कहू हमर गाम अपना जिला आ कि प्रदेश मे नाम करत की नहि?

q

3. खुरचन ठाकुर

मूल नाम: किसुनलाल ठाकुर, प्रसिद्धि खुरचन ठाकुर

पिताक नाम: तिरपित ठाकुर

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: सन उनैस सौ सतासी सालक बाढ़िमे

उपलब्धि: खुरचन ठाकुरक प्रसिद्धि खुरचने लऽकए भेल। हुनका लेल अस्तूरा बेकार छल। अनेरे लोक टाका खर्चा करत। ओ खुरचनकेँ पिजा लैत छलाह आ केहनो बढ़ल केस-दाढ़ी रहओ, काटि दैत छलाह।ओहीसँ नह सेहो काटि दैत छलाह। जखन केश छँटबैक प्रचलन बढ़लै तखन खुरचन ठाकुर अपन ओही औजारसँ केश छाँटब सेहो शुरू केलनि। केशमे ककबा सटा दैत छलखिन आ ओहि उपरसँ खुरचन चला दैत छलखिन। देखनिहारकेँ चकचोन्ही लागि जाइ छलनि जे बिना कैंची के केश कोना एतेक सुन्दर छँटा जाइत छलैक।

आ केहनो फोरा-फुन्सी रहओ खुरचन ठाकुरक डाकदरीक आगू सब जेना सरेंडर कऽदैत छल। फोराक डाकदर रूपमे खुरचन ठाकुर परोपट्टे नहि दश कोसमे नामी छलाह। कहियो कए तऽहुनका दूरापर लोकक लाइन लागि जाइत छल। खुरचन ठाकुरक खुरचनक स्पर्श होइतहि लोकक‌ँ आरामक बोध होमए लगै छलै।

बीए जखन एक बेर कोनो शहरसँ घुरलाह तऽखुरचन ठाकुर हुनका देखलक ओतुका सैलूनमे केश छँटेने। बीएकँ एखनहुँ मोन छनि खुरचन ठाकुरक हुथान। आ ओहि 'अलूरि' नापितक लेल प्रयोग कएल गेल अपशब्द सब जे बीए हमरा सुना तऽदेलनि मुदा लिखबासँ मना कऽदेलनि।

पूरा गाममे खुरचन ठाकुर एकसर, सौंसे गाम हुनकर जजमान। मुदा मात्र एकटा औजार, खुरचन, आ गाम नेहाल। एहन छलाह रन्न हमर खुरचन ठाकुर।

q

4. टहलू दास

मूलनाम : सियाराममण्डल

पिताक नाम: जगदेव मण्डल

जन्मतिथि: अज्ञात

मृत्यु: अकालकवर्ष (सम्भवतःउनैससौछियासठि)

उपलब्धि : टहलूटहलैततऽकमेछलाहमुदाहुनकचालिमेबड़काबड़काहारिजाइतछल।बूढ़लोकसबखिस्साकहैतछथि जेएकबेरककरोसारसाइकिलपरचढ़िकएहमरागामएलाह।हुनकरगामकरीबसात-आठकोस (एखुनकालोकलेलबूझूचौबीस-पचीसकिलोमीटर) दूर।साइकिल ओहि समय ककरो ककरो रहैत छलै, हमरा गाममे ककरो नहि छलै से बूझू सौंसे गाम जमा भऽगेल साइकिल देखबा लेल।

टहलूहुनकापूछिदेलखिन-

"कतेकसमयलागलसाइकिलसँहमरागामअबैमे?"

ओगर्वसँबजलाह-

"इएहगोटेकघंटाबूझिलिअऽ।"

ओहो अन्दाजे बजलाह कारण हाथमे घड़ी तऽछलनि नहि आ ने टहलूएकँ बूझल छलनि जे एक घंटा कतेक समय होइत छैक।टहलूहुनकादूसैतबजलाह-

"एतेककालमेतऽहमपएरेचलजाएबआघुरिकएचलोआएब, आयदिइन्तजामकएलरहततऽअहाँकघरपरभोजनोकऽलेब।"

सारकेँभेलनिजेअनगौआँबूझिकनेडींगहँकैतछथि।ओहुनालोक गाममे आएल ककरोसारकसंगहँसीमजाककऽलैतेछल।एहनोकतहुभेलैएजेलोकसाइकिलसँदूनोसँबेसीचलिलेत? मुदाएकरफरिछौहटिको नाहोअए?ओजमानातऽमोबाइलटेलीफोनकछलैनहिजेतुरत्तेईककरोखबरिकऽदितथिनगाममेजँचैलेलजेसत्तेमेटहलूओहिगामप हुँचलाहकिनहि।

योजनाबनलजेबड़कीपोखरिकचारूकातदूनूगोटेघुमता।सारसाइकिलसँआटहलूपएरे।पोखरिक चारू कात रस्ता साइकिलो चलबै लेल नीके छलैक। जेना कि ओहि समय सब ठाम रहैत छलै, कच्चिए मुदा समतल आ पीटल-पाटल।

जतेकतेजअपनचलिसकथिसेचलथु।यदिटहलूसत्तेमेबड़तेजचलैतछथितऽचक्करलगबैमेकमेसमयलगतनि।ओचक्करलगबैत रहताहजाबतसारमहोदयसाइकिलसँएकचक्करपूरानहिकऽलेथि।यदिसारेमहोदयपहिनेएकचक्करलगालेताहतऽओहोताबततक चक्करलगबैतरहताजाबतटहलूएकचक्करपूरानहिकऽलेथि।अन्तमेजेजतेकबेसीचक्करलगौनेरहतसेततेकसौटाकाजीतत।माने भेलजेएकचक्करकेसमयमेयदिकियोदूचक्करलगालेततऽएक चक्कर बेसी भेलैक ताहि लेल एकसौरुपैयाजीतत।यदिआधाचक्करबेसीलगाओततऽपचासरुपैयाजीतत।एहिसँकमभेलापरदूनूकेँबरोबरिएबूझलजाएत।

गौआँजमाभऽगेलदेखबालेल।सारकबहिनोकेँकहलगेलनिहुनकेपक्षमेरहैलेलजेकोनोतरहकबेइमानीकगुंजाइसनहिरहै। खेलाशुरूभेल।जतेकताकतछलनिततेकपैडिलमेलगबैतसारमहोदयसाइकिलदौड़ेलनि।मुदाटहलूतऽनिपत्ता।जाबतओएक मोहारटपथिताबतटहलूएकचक्करपूराकऽलेलनि।साइकिलआपएरेदौड़चलैतरहल।अन्तमेसारमहोदयपूरेतीनसौटाकाहारिगे लाह।

ओजेहमरागामसँपड़ेलासेफेरघुरिकिएकहियोनहिएएला।टहलूदासकएहिगुणकजानकारीगामोमेबहुतोलोककेँनहिछलैक।आबतऽहिनकरगुणकबखानसबतरिहोमएलागल।डाकविभागहिनकादौड़हाकनोकरीदेबालेलतैयारभऽगेलआएहिआशयकेचि ट्ठीसेहोहिनकापठादेलकनि।मुदाईअस्वीकारकऽदेलखिन।

“उत्तम खेती, मध्यम बान, अधमचाकरी, भीखनिदान”

बलाफकराजेरटनेरहथि।ओकोनोदशामेचाकरीनहिकरताह। नहिए केलनि।

एहनमहानछलाहटहलूदास।

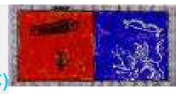
q

5. चिलमसोंट भाइ

मूलनाम : केवलराउत

पिताकनाम : बनारसीराउत

जन्म तिथि : अज्ञात



मृत्यु: करीबचालीससालपहिने।

उपलब्धि : नामगुणकाजछलनिहुनकर।चिलमसोंटनामेपड़लनिजखनहुनकाचिलमसँबीतभरिधधराउठएलगलै।गामै कगजेरीसाहुकअभिन्नमित्र।गजेरीसाहुगाजाबेचथिआचिलमसोंटकीनथिआताहिपरसोंटलगाबथि।सोंटलगबैमेकिछुगोटेआरसं गदैतछलखिनमुदाओसबहमरासंकलनलेलमहत्वपूर्णनहिछथि।

एकबेरगाममेदूटाबबाजीएला।ईदूनूएकनम्बरकेगँजेरी।ओ बरकी पोखरिक पाकरि गाछ तर अपन आसन जमा लेलनि। एकटा गौआँकेँ चेला मुड़लनि, ओहि दिनक बुतातीक जोगार सेहो केलनि आ चिलम लेल गाजाक जोगार सेहो। अपनामे मस्त ई दूनू लगलाह चिलम सोंटए।

किछु गौआँ हिनक चिलमक सोंट देखि रहल छल। अति साधारण रूपें ई सब सोंट लगा रहल छलाह। ओ टिप्पणी कैए देलक-

“अहाँ दूनूसँ नीक तऽहमर गौआँ चिलम धुकैत अछि, ओकर नामे पड़ि गेलैक चिलमसोंट भाइ।”

बबाजी सबकेँ लगलनि जे गौआँ सब हिनकर निन्दा कऽरहल छनि। ओ चिलमसोंटकेँ बजबै लेल कहलखिन।

चिलमसोंट बजाओल गेलाह। फोकट के गाजा आ तकर सोंट ई बात सोचिए कए ओ मुदित भेल छलाह। तैयो अपन गुणकेँ नुकबैत बबाजी दूनूकेँ टिटकारी देलखिन नीकसँ सोंट लगबै लेल। ओ सब पूरा दम लगा कए सोंट खिचलनि तऽएक बेर कने दू-तीन आँगुर धरि धधरा उपर उठलैक। चिलमसोंट विनम्र भावें अपन चिलम सुनगौलनि आ लगला सोंट खीचए। जेना जेना गाल धँसैत गेलनि तेना तेना धधरा उपर उठैत गेलै। अन्तमे पूरे हाथ भरि धधरा उठि गेलै। एहन चमत्कार तऽपहिने कोनो गौआँ नहि देखने छल। बबाजी सब तऽचकित आ डराएल। ओहिमे एक गोटे दोसरकेँ कहलखिन-

“एकरा चेला बना लेब ठीक रहत।”

चिलमसोंटकेँ गाजा चढ़ि गेल छलनि। ओ उनटे ओहि बबाजीकेँ भरि पाँज कऽधेलनि आ बजलाह-

“रौ सार, चिलम सोंटैक लूरि तऽछौके नहि, हमरेपर गुरुआइ करमे? हमरा चेला बनेमे? ढहलेल नहि तन। चल, आइसँ तो दूनू हमर चेला बनि जो आ हमर नोकर जकाँ काज कर। साँझुक पहर हम तोरा दूनूकेँ चिलम सोंटैक लूरि सिखाएल करबौ।”

आब तऽदूनू बबाजीक बोलती बन्द। कहुना अपनाकेँ छोड़ा कए ओ दूनू नाङरि सुटकबैत गामसँ भगलाह।

चिलमसोंट भाइ अपना काजमे अद्वितीय छलाह। इलाकामे करीब दस गामक बीच हुनकासँ हाथ मिलबै बला कियो नहि भेल छल।

q

6. नक्कू पहलमान

मूल नाम: परमेसर यादव

पिताक नाम: शीतल यादव

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: सन उनैस सौ बेरासी साल

उपलब्धि: नक्कू कने नकिआइत छलाह बजबामे तें ई नाम भेलनि। हुनका हनुमानजीक सराप आ आशीर्वाद छलनि जे कोनो कुश्ती खेलामे पहिल दू बेर तोरा हारए पड़तौ। जखन तों दू बेर हारि जेमे तखन तेसर बेर केहनो पहलमानसँ भिरमे, जितबे करमे, से ओ साक्षात भीमे किएक नहि आबि जाथु। बूझि ले हम अपनहि तोरा शरीरमे प्रवेश कऽजेबौ।

ई बात ककरहु नहि बूझल छलैक हुनकर बाबूजीकेँ छोड़ि। साधारण भिड़न्तमे हारि-जीत चलिते रहैत छलैक। लोक एतेक ठेकान नहिए करैत छल जे कोना दू बेर हारलाक बाद नक्कू निश्चिते तेसर बेर जीत जाइते छथि।

एक बेर दरभंगा राजक पोसुआ कैलू पहलमान हमरा गाम दिससँ जाइत छला। हुनका गुमान जे पूरा जिलामे हुनकासँ हाथ भिरबै बला कियो नहि छनि। ई गप ताहि दिनक छी जहिया मधुबनी जिला नहि बनल छलै आ दरभंगे जिलाक सवडिविजन छलै। हमरा गाममे कियो अगत्ती छौंड़ा हुनका टिटकारि देलक जे गामक नक्कू पहलमानसँ एक बेर हाथ भिरा लेथि। पहिने तऽओ अपन प्रतिष्ठा बूझि एकरा अनठबए चाहलाह मुदा गौआँक जिदपर अखाड़ामे उतरि गेला। नक्कू सेहो उतरला आ हनुमानजीकेँ स्मरण केलनि।

खेला शुरु भेल। कैलू आ नक्कू अखाड़ामे चक्कर्घिन्नी कटैत आ एक दोसरापर दाओ बजारैक चेष्टामे लागल। कियो दोसराक देहमे सटि नहि रहल छल। आ कि नक्कू किछु केलनि आ क्षणेमे कैलू चित, नक्कू हुनका छातीपर सवार। लोक अकचकाएले रहि गेल। तालीपर ताली परए लागल। कैलूकेँ किछु बुझाइये नहि रहल छलनि जे की भेलै, कोना भेलै, कोन दाओ लगलै जकर ओ सम्हार नहि कऽसकला।

दूनू पहलमान उठलाह, देह झाड़लनि, हाथ मिलौलनि आ अपन अपन गन्तव्य दिस विदा भेला।

नक्कू जीत गेलाह मुदा हुनका एकर कोनो गुमान नहि छलनि। हुनका बूझल छलनि जे अगिला दू कुश्ती हुनका हारबाक छनि। ओ अपनाकेँ कहियो महान नहि कहलनि, ई हुनकर नम्रता छलनि।

q

7. पण्डितजी

मूल नाम : राधाकृष्ण मिश्र

पिताक नाम: लक्ष्मण मिश्र

जन्म तिथि: उनैस सौ पचास सालक फगुआ दिन।

उपलब्धि: हमरा गामक एकमात्र ब्राह्मण पुरोहित परिवार, पण्डितजी खाली नामेसँ पण्डित छथि। हिसाबें औँठा छापे रहि गेला। भरि गामक जजमनिका सम्हारै लेल भागिनकेँ बजा अनलनि। अपने ओकरा संग खाली नोंत खेबा लेल जाइ छथि।

मुदा पण्डितजी अद्वितीय भैए गेलाह। ई भेल हुनक अद्भुत गुणक कारण। ओ महिंसलेट भऽगेला। महींसपर बैसल बाधे बाध बौआइत रहबामे ओ ककरो कान काटि सकैत छथि। बच्चहिंसँ ओ महींसपर जे चढ़ए लगलाह से एखन तक कइए रहल छथि। महींसे पोसब हुनक मुख्य व्यवसाय भेलनि। एकटा ब्राह्मण कुलमे जन्म लइयो कए ओ कोनो यादव परिवारसँ बेसी दूधक व्यापार केलनि आ ओहिना कोनो यादव परिवारसँ बेसी पानि दूधमे मिलबैत रहला। तैयो हिनक दूधक बिक्री कम नहि भेल। महींसक खरीद बिक्री केलनि, ओकर दवाइ दारू सेहो बुझैत छथि आ सब तरहें महींसक विशेषज्ञ रूपें इलाकामे प्रसिद्ध छथि। हिनका प्रसादें कतेक महींस कें प्राण बचलै। ब्लॉक के मवेसी डाकदर सेहो हिनकर ज्ञानक प्रशंसा करैत छनि।

पण्डितजी एकटा आर गुण लेल प्रसिद्ध छथि आशीर्वाद देबाक हिनक शब्दकोष बिल्कुल अलग अछि। 'जीबू जागू ढनढन पादू' तऽ हिनकर तकिया कलाम अछि मुदा जखन कियो कोनो तरहक छोट पैघ गलती कऽ बैसैत अछि तखन हिनक मुह सँ बहराएल शब्द विश्वक कोनो कोष मे भेटऽ बला नहि। आ सुननिहार केहनो मोट चामक बनल रहओ, कान मूनहि पड़ैत छैक। ओ आशीर्वाद-वर्षा लोकक धैर्यक परीक्षा सेहो लैत छैक। आ जे कने अधीर भेल तकरा तऽ भूलुण्ठित भेनहि कल्याण।

महींसक संग संग ई गायक व्यापार सेहो करैत छथि। गाय दरबज्जापर पोसैत कमे छथि, खाली खरीद बिक्रीक काज हाटपर करैत छथि। मटिकोरबा गामक हाटपर मरदुआरि कैल गाय सस्त दामपर कीनैत छथि, ओकरा दस दिन नीक जकाँ खुआ पिआ कए आ जहिना आइकालि लोक केश रंगैत अछि तहिना नवका तरीकासँ रंग चढ़ा कए कारी गायक रूपमे दुन्ना-तिगुन्ना दाममे बेचि लैत छथि। बेचबा काल ध्यान रखैत छथि जे ग्राहक बेस दूरक इलाकासँ रहए। लग पासक ग्राहककेँ ओ कारी गाय नहि बेचैत छथि। एक दू बेर गौआँकेँ सर सम्बन्धीक मारफत सुनबामे एलै जे मासे दिनक भीतर गायक रंग बदलए लगलै। मुदा ई शिकाएति सीधे पण्डितजी लग कियो नहि पहुँचेलक। आशीर्वाद-वर्षा मे भिजबाक डर जे रहैत छैक।

एखन तक पण्डितजी बेदाग अपन व्यवसायमे लागल छथि।

q

8. लम्बोदर

मूल नाम: दरिद्र नारायण झा

पिताक नाम: पलटू झा

जन्म तिथि: अज्ञात

मृत्यु: पाँच वर्ष पहिने

उपलब्धि: लम्बोदर नाम गुण पैघ उदर बला छलाह। हमहूँ देखने छिऐनि हुनकर शरीर। कण्ठसँ डाँड़क बीच मात्र एक तिहाइमे छाती आ दू तिहाइमे लम्ब उदर। से कोनो पैघ धोधि फूटल नहि, सपाट। आइ कालि हीरो सब सिक्सपैक चमकबैत रहैत अछि मुदा लम्बोदरकँ छातीआ पाँजरक सबटा हाड़ लोक सौ मीटर दूरोसँ गनि सकैत छल। हुनका बुझलो नहि छलनि जे ई शारीरिक सौष्ठवक विशेषता छिऐ।

वृत्तिएँ लम्बोदर मरणोपरान्तक संस्कार करबैत छलखिन।आ पोखरिपर भोजन करब हुनक एहि वृत्तिक अंश छल। मुदा एक बेरक खिस्सा जे बूढ़ लोक कहैत छथि से अद्भुत छल।

लम्बोदर अपन जजमनिकामे कोनो गाम गेल छलाह। ओतए चूरा-दही भोज छलैक। इन्तजाम तऽठीके छलैक मुदा हिनका सबहिक भोजन बेर किछु कुव्यवस्थाक कारण दही कने कम पड़ि गेलै कारण पोखरि पर सामान हिसाबे सँ पठाओल गेल छलै। लम्बोदर लगलाह अखरा चूरा फाँकए। जाबत घरवारी दहीक व्यवस्था केलनि ताबत ई करीब पाँच सेर चूरा सधा देलखिन। आब हाल ई छल जे जाबत दही आबए ताबत हिनका पातमे चूरा सधि जाए, ई छुच्छे दही सुड़कथि आ तकर बाद फेर अखरा चूरा फाँकथि। ई अपना दूनू कात माटिपर चेन्ह दऽकए आन लोककँ उठि जेबाक संकेत देलखिन आ अपने खाइते रहलाह। जखन करीब एक बोरा अखरा चूरा आ चारि तौला दही सधा देलनि तखन घरवारी हाथ जोड़ि कए ठाढ़ भऽगेलखिन। तैयो ई ढकार नहिए लेलनि मुदा परिस्थितिकँ बूझि घरवारीकँ कहि देलखिन-

"अहाँ पार उतरि गेलहुँ, हम आब तृप्त छी।"

एतबा कहि ओ उठि कए हाथ धोलनि, पान सुपारी लेलनि आ दस किलोमीटर टहलैत टहलैत गाम आबि गेलाह। कियो कखनहु हुनकर पेट उठल कि फूलल नहि देखलक। अगिला दिन लम्बोदर फेर कोनो भोज खेबा लेल तैयार। हिनके भोजन देखि ने कियो फकड़ा बनौने छल ___

पाँच पसेरी अखरा चूरा, दही छाँछ भरि जलखै जकरा
की हैत चटने पाभरि जोड़न? ऊँटक मुहमे जीरक फोड़न !

हमरा अपना गाममे हुनका के खुअबितए? मुदा ओ परिस्थितिकँ बुझैत छलखिन आ गामक भोजमे कहियो छूटल घोड़ा जकाँ व्यवहार नहि केलनि।

हमरा गाममे किएक ककरो बूझल रहतैक जे गिनीज बुकमे हुनकर नाम रेकॉर्डमे लिखबितए। हमसब एहि गौरवसँ चूकि गेलहुँ तें हम नियारल जे अपन संकलनमे हुनकर चर्चा जरूर करब।

q

9. नटवर लाल

मूल नाम: जयन्त कुमार लाल दास

पिताक नाम: शिव मोहन दास

जन्म तिथि: सन उनैस सौ अठतालीस के चौरचन दिन

उपलब्धि: नटवर लालक पिता अल्प वयसमे मरि गेलखिन। माताक एकमात्र सन्तान ई गामक बिगड़ल छौंड़ा सब के संगतिमे फँसि गेलाह। यद्यपि हमरा गाममे बीएक असफलताक बाद सब गार्जियन अपन धियापूताकेँ स्कूल जेबासँ परहेज करबए लागल मुदा जयन्त कुमार लाल दास स्कूल गेला जहिना कि हिनका टोलक किछु आर बच्चा सब करैत छल। कहुना अठमा तक घुसकला तकर बाद हाथ उठा देलनि।

बच्चहिंसँ हिनकामे विशेष लूरि छलनि लोककेँ ठकबाक। पहिने तऽबहुत दिन तक माएकेँ ठकलनि आ मटिकोरबा गामक हाटपर झिल्ली कचरी बतासा लड्डू खाइत रहलाह। तकर बाद अनकोपर अपन मंत्रक प्रयोग केलनि। लम्बोदरक पितियौतकेँ जजमनिकामे भेटल रंगल धोती सब ई कामति टोलक लोककेँ किना दैत छलखिन, बेसी दामपर जे तोरा रंगक खर्चा बचि गेलहु, आ धोती बलाकेँ कहि दैत छलखिन जे रंगल धोती कियो नहि कीनत, ओ तऽधन्य कहू जे हम एक गोटेकेँ फुसला कए राजी केलहुँ। धोती बेचनिहार कहियो नहि बुझलनि जे के किनलक आ कीननिहार कहियो नहि बुझलनि जे ककर धोती ई किनलक। एही तरहेँ पुरना किताब विद्यार्थीसँ लऽ कए ओकरा नवका भावें बेचथि। एहि व्यवसायमे हिनका नीक आमदनी होमए लागल। अपने ई लील टिनोपाल देल नीक धोती गंजी पहिरए लगलाह।

एहि बीच किशोर वयसमे प्रवेश करिते हिनक आदति सब बिगड़ए लागल। ई सुनसान गाछी बिरछी आ पटुआ कुसियारक खेतमे शिकार करए लगलाह। हाथमे पाइ रहितहि छलनि से शिकार भेटिए जाइ छलनि। सब गाममे सब तरहक लोक होइ छै आ हमरो गाम एहिसँ बचल नहिए छल। मुदा जखन एक गोटेकेँ किछु भऽगेलै आ ओकर बाप हिनका तंग करए लागल बियाह कऽलेबा लेल तखन ई पहिल बेर डरा कए गामसँ भागि गेला।

छओ मास बाद घुरला तऽमाएकेँ सब बात बुझबामे आबि गेल छलनि। ओ बेचारी नीक रस्ता धेलनि आ हिनकर बियाह करा देलखिन। नटवर लाल पत्नीमे रमि गेला। साले साल पुत्र रत्नक बरखा होमए लागल। तेरह साल पुरैत पुरैत हिनका लग छोट पैघ तेरहटा बच्चा छल__एकछाहा पुल्लिंग। घरमे जगह तऽनहिए छलनि, बुतातोपर आफत आबि गेलनि। ताबत माताराम उपरक रस्ता धेलनि आ ई लगला पुस्तैनी जायदादकेँ बेचि गुजर चलबए।

एहि बीच हिनकर भाग्य जागल जखन मात्रिकक एक गोटे बैंक मनेजर बनि कए राजनगर एलखिन। हिनकर दुर्दशा देखि ओहि बेचाराकेँ दया लागि गेलै आ हिनका बैंकमे चपरासीक नोकरी भेटि गेलनि। आब की छल? राति दिन हिनका आङ्गनसँ माछक सुगन्ध उठए लागल।

बैंकमे पहुचि नटवर लालकेँ अपन असली रूप देखेबाक अवसर भेटि गेलनि। हमरा गामसँ राजनगर दस किलोमीटर। ताबत ने रोड नीक भेल छलै आ ने टेम्पूक चलन भेल छलै। ई लोककेँ फुसिया फुसिया बैंकमे खाता खोलबौलनि आ तकर बाद ओकरा सबकेँ लघु बचत योजनासँ जोरि नित्य साँझमे एकटकही दुटकही, जकरा जेहन जुड़ै, से जमा करए लगला। पासबुक बनि गेलै मुदा सबटा पासबुक ई अपनहि संग राखथि। लोककेँ विश्वासमे लेने। जरूरति पड़लापर सौ पचास उधार सेहो दऽदैत छलखिन ई कहि जे बैंकसँ लोन भेटलहु। लोक लोन सधबए लागल आ अगिला किस्त उठबए लागल।

एहि बीच ई गामक संचित टाका निजी काजमे लगाबए लगला। पासबुकपर किछु चढ़ै नहि। लोककेँ किछु बुझबामे अबै नहि। प्रायः पाँच साल तक ई खेला चलैत रहल। कियो यदि कहियो पासबुकक चर्चो करए तऽई बहन्ना बना देथि जे बैंकमे राखल छै। दश किलोमीटर बिना कोनो साधन के चलि कए जाएब कठिन छलै आ लोक अनठा दैत छल।

एक बेर ककरो बेटीक बियाह लेल पाँच हजार टाका निकासी करबाक जरूरति भेलै। ओकरा हिसाबें जतेक टाका ओ जमा करैत गेल छल ओहिसँ पाँच हजार जरूरे उठाओल जा सकैत छलै। नटवर लाल किछु दिन टालमटोर करैत रहला। मुदा बेटी बला कते दिन मानितए? अन्तमे हारि कए ओ एक दिन पहुँचि गेल राजनगर बैंक।

तकर बाद जे हेबाक छलैक सएह भेलै। सबटा भेद खुजि गेलै आ बेटी बलाक खातामे मात्र अढ़ाइ सौ टाका भेटलै। गामक प्रायः सब के टाका डुबलै। सब अपन कपार पीट कए रहि गेल।

नटवर लालपर विभागीय कारवाइ भेलनि, ओ जेल गेला। एहि बीच तेरह पुत्र सेहो बढ़ैत गेलखिन आ सौंसे भारतमे छिड़िया गेलखिन। हुनका लोकनिक लेल बापक पापक बीच गाममे रहब कठिन भऽगेलनि। पत्नी सेहो अस्वस्थ रहए लगलखिन आ करीब चारि सालक बाद स्वर्ग गेलीह। पेरोलपर आबि नटवर लाल पत्नीक संस्कार केलनि।

करीब सात साल जेलमे सरलाक बाद ओ गाम घुरला। मुदा हुनका मुखरापर कोनो ग्लानिक भाव कहियो नहि एलनि। एखन गामे रहैत छथि आ बेटा सबहक पठाओल टाकापर गुजर करैत छथि।

कोशिश तऽओ एखनहु करैत छथि लोककेँ ठकबाक, पुरान आदति जे छनि, मुदा आब लोक हिनका चीन्हि गेल अछि से हिनका नहि सुतरै छनि।

q

10. झलकी देवी

मूल नाम: अज्ञात, सब दिन लोक ओकरा एही नामसँ जनैत छैक।

पिताक नाम : रतन सदाए

जन्म तिथि: ठीकसँ नहि बूझल मुदा हमर समवयस्के अछि झलकी।

उपलब्धि: झलकी अपन माए-बापक एकमात्र सन्तान। बच्चेसँ कने गौरवाह। कहियो कोनो समवयस्क छौंड़ाकेँ गुदानलक नहि। बियाह भेलाक बाद एतहि रहि गेल। पति घर-जमाए बनि गेलखिन।

झलकी सुन्नरि अछि एखनहु। जखन ओ यौवनक देहरिपर डेग देलक तखन गाममे बहुतोकेँ मोन डोललै। कसल देह, सुगठित बाँहि आ यौवनक अन्य सब लक्षणसँ युक्त जखन ओ अल्हर भावें बाध दिस जाइत छल तखन हमरा उमेरक छौंड़ा सब ओकर पछोड़ धऽलैत छल। ओकरा लेल धन सन। एक बेर चौरमे रहमतबा कने नजदीक आबि गेलै, झलकी पाछू घूमि ओकरा तेहन चाट मारलकै जे ओ ठामहि खसि पड़ल, दाँती लागि गेलै। तकर बादसँ हमरो सबकेँ बूझल भऽगेल आ झलकी अपनहुँ आश्वस्त भेल जे कियो ओकरा देहमे भिरबाक साहस नहिए करतै।

हम जखन दिल्ली चलि गेलहुँ तखनुक घटना थिक। झलकी एकसरिये छल घरमे। एहि बातक फाएदा उठा मटिकोरबा गामक भूतपूर्व मुखियाक बेटा अपन एकटा उद्दंड संगीक संग ओकरा घरमे प्रवेश केलक बलात्कारक उद्येश्यसँ। मुदा चल गेल यमलोक। झलकी कचिया हाँसूसँ दूनूकेँ दू टुकड़ी कऽदेलकै आ घरेमे गारि देलकै। ओतबे नहि, शोणित लगले कपड़ामे रातिएमे हाँसू हाथमे लेनहि सौंसे टोलमे चिकरि कए कहि देलकै जे कियो यदि गवाही देतै तऽओकरो यमलोक जाए पड़तैक। तकर बाद पोखरिमे नहा लेलक, हाँसू धोलक आ आबि कए निश्चिन्त भऽकए सूति रहल।

ओकर एहि धमकीसँ कानूनक काज तऽरुकितै नहि। अगिला दिन थाना पुलिस ओकरा ओहि ठाम पहुँचि गेलै। झलकी घरसँ बहराएल तऽगरदनिमे सातटा कचिया हाँसूक माला पहिरने। एहन रौद्र रूप तऽपुलिसो कहियो नहि देखने छल। दूनू पुलिस दरोगाक पाछू सुटकि गेल जेना मरखाहा साँढ़केँ अबैत देखि छोट बच्चा माएक पाछू सुटकि जाइत अछि।

ककरो हिम्मते नहि होइ ओकरा लग जेतै, आ कि घरमे किछु सर्च करतै। दरोगा ओकरा पुछलकै-

"तों रातिमे ककरो खून केलही?"

झलकी निडर भावें उत्तर देलक-

"एखन तऽदुइएटा कें कटलइयैए, जँ छौंड़ा सब आबहु नहि सीखत तऽदू सैइयोकेँ काटि देबै एही कचिया हाँसूसँ। जकरा जे करबाक छैक से कऽलिअए। हम ने कतहु जेबै आ ने ककरो अपना देहमे हाथ लगबए देबइ।"

दरोगा मुश्किलमे पड़ि गेल। ओ दूटा सिपाही लेने आएल छल जे खूनीकेँ हथकड़ी लगा कए घिचने आओत थाना, जेना ओ सब दिनसँ करैत आएल छल। एहन काली माइसँ भेँट हेतै तकर सपनोमे कोनो अन्दाज नहि छलै। एकेटा उपाय छलै जे महिला पुलिस बजाओल जाए नहि तऽई मौगी की कऽबैसत से नहि जानि।

दरोगा हेडक्वार्टरकेँ फोन लगेलक आ ओतहि बैसल रहल, झलकी चल गेल आङ्गन अपन काज करै लेल। ककरो हिम्मत नहि भेलै ओकरा आङ्गन ढुकै के। करीब तीन घंटाक बाद मधुबनीसँ जीपपर सवार चारिटा महिला पुलिस एलै। ओ सब जखन झलकीकेँ हथकड़ी लगा पकड़ै लेल गेलै, झलकी ओकरो सबकेँ डाँटि देलकै आ हाथ तेना ने झटकि देलकै जे एकटा महिला पुलिस खसिए पड़ल। ओ बेपरवाहि ओहि चारूसँ पुछलकै-

“तोँ सब मौगी छें ने। कह जे यदि रातिमे कियो तोहर इज्जत लूटै लेल तोरा लग पहुँचतौ तऽकी करबही? अपन बचाव करमे, ओकरा पाठ पढ़ेमे कि उतान भऽकए पड़ि रहमे?”

सब सकदम। ककरो कोनो जबाबे नहि फुरा रहल छलै झलकीक प्रश्नक। जबाब फुरेबो करतै तऽकोन भाषामे झलकीकेँ उत्तर देतै? बड़ी कालक नाटक के बाद झलकी अपनहि मोने थाना विदा भेल। कियो ओकरा देहमे नहिए भिड़लै। आगू आगू झलकी, ओहिना सातो कचिया हाँसूक हँसुली पहिरने, केश खूजल, उड़ियाइत, आ पाछू दरोगा सिपाही आ किछु गौआँ सब। जिनकर बेटा कटलनि तिनका लोक एखन तक कतहु नहि देखलक।

झलकी हाजतमे बन्द भेल, फेर मधुबनी पठा देल गेल। मोकदमा चललै मुदा सरकारी ओकील कोनो तरहक साक्ष्य जुटेबामे असमर्थ रहलाह। पूरा गाम झलकीक समर्थनमे जुटि गेल। छओ मासक बाद झलकी बरी भेल आ गाम घुरि आएल।

पछिला पंचायत चुनावमे झलकी निर्विरोध सरपंच चूनल गेल। आब ओ ब्लॉकपर आ इलाकामे झलकी देवी नामे प्रसिद्धि पाबि रहल अछि। एखन गामक पंचैतीपर ओकर रौद्र रूपक प्रभाव झलकैत रहैत छैक। फल ई जे अपराधो कम भेलैए।

हम सब लागि गेल छी प्रयास मे जे अगिला विधान सभा चुनाव मे झलकी कें एमएलए बना पटना पठाबी । हमरा सबहक विधानसभा क्षेत्र अनुसूचित जाति लेल आरक्षित छैके । ब्लॉक पर ओकर लोकप्रियता देखैत ई लक्ष्य असम्भव नहि बुझाइत अछि । ओ अपनहुँ एहि दिस ध्यान देलक अछि आ किछु पढ़ब लीखब शुरू केलक अछि।

गामक लोकक कहब छैक जे झलकी साधारण महिला नहि, कालीक अवतार अछि। जखन ई मरत तखन एकरा सारापर काली मंदिर बनाओल जाएत।

q

11. राजा-रानी

हमरा गाममे एकटा एलाह राजा। आ हमरे गामक पुत्री भऽगेलखिन हुनकर रानी। एतए हिनक मूल नाम, जन्म तिथि आदिसँ हमरा सबकें सरोकार नहि अछि, मात्र हिनक अद्भुत चरित्र लीख रहल छी जे हिनका दूनूकँ वास्तविक अर्थमे हमरा गामक पूज्य राजा-रानीक रूपमे स्थापित कऽदेलक आ इलाकाक अन्य गाम सबमे सेहो हिनकर ख्याति बहुत पसरल।

राजा तऽजहिना नाम तहिना हुनक विशाल शरीर आ उदात्त चरित्र। हुनकर चरित्रक प्रशंसा सुनि बहुतो कुमारि कन्या अपन भाग्य अजमौलनि मुदा राजाकँ तऽएकेटा पसिन्न पड़लनि। भऽगेल राजा आ रानीमे प्रेम। से एहन प्रेम जे लोककँ विश्वासे नहि होइ। बूढ़ पुरान सब बाजए लगलाह-

"हौ, ई कोनो साधारण प्रेमी-युगल नहि छथि, जरूर कोनो देव अंश छथि। गामक ई उत्तरदायित्व जे हिनका दूनूक रक्षा करए।"

बस, तहिना भेल। हिनकर आवास बनाओल गेल, सब तरहक सुख सुविधाक इन्तजाम कएल गेल। पार बाँटि गौआँ सब हिनकर भोजन पठबए लागल। जहिया जकर पार होइ ओ अपनाकँ धन्य बूझए जे आइ ओकरे अन्न-पानिसँराजा-रानी तृप्त भेलाह।

राजा-रानी एक दोसराक लेल प्राण दैत। रानी तऽअपनाकँ अति भाग्यशाली बूझथि जे सब किछु होइतो हुनकर कोनो सौतिन नहि छलनि। बहुतो लोक प्रयास केलक जे एको नजरि राजा अन्य कन्यापर दऽदेथि मुदा बेकार। राजा तऽरानीक प्रति समर्पित छलाह। आब हुनका एहन आत्मतृप्ति भेलनि जे ककरो अनका दिस तकबो नहि करथि।

जेना कि प्रकृतिक नियम छिऐक, राजा-रानीक प्रेमक फल भेल हुनकर तीन पुत्र आ एक पुत्री। पुत्र लोकनि जेना जेना पैघ होइत गेलाह, अपन अपन व्यवसाय सम्हारलनि। बचि गेलखिन पुत्री। ओहो तीव्र गतिए बढ़ए लगलखिन। रानीकँ चिन्ता भेलनि एकर बियाह कोना करौतीह। कहियो बियाह नहि करौलनि। अपने तऽतेहन राजकुमारक प्रेममे फँसलीह जे बियाहक प्रश्ने नहि उठलैक। मुदा बेटी?

रानीकँ डर छलनि जे जवान बेटीकँ देखि कतहु राजाक मोन डोलि ने जानि। मुदा राजा अपनहि अपनाकँ सम्हारने रहलाह।

ऋतुमासक समय पर बेटीकँ पुरुषक जरूरति भेलैक। ओ एम्हर-आम्हर तकलक। कतए जाएत? ओकरा माए-बापक प्रेमक खिस्सा तऽबूझल नहि छलैक। ओ लागल ओही पुरुषक चारू कात चक्कर काटए जे सबसँ लगमे ओकरा भेटलैक। ओ बिसरि गेल जे ओ पुरुष ओकर जन्मदाता छलैक।

पुरुष अर्थात हमरा गामक राजा अपनाकँ बहुत सम्हारलनि मुदा भावीकँ के रोकि सकलए? ओ नवयुवतीक चालिमे फँसिए गेलाह। ओकरा शरीरसँ उठैत मादक गन्ध हुनका मदमत्त कऽदेलक। हुनक संयमक बान्ह टुटि गेलनि। नवयुवतीक काम-पिपासा तृप्त भेलैक। ई दृश्य रानीसँ नुकाएल नहि रहलैक। रानी बजली किछु नहि मुदा बहुत दुखी जरूर भेलीह।

ई घटना हमरा सबकँ देखल अछि जे ओही राति रानी मरि गेलीह। राजा अपनाकँ दोषी मानए लगलाह। एहि नवयुवतीकँ अपन दोसर रानीक रूपमे ओ स्वीकार नहिए कऽसकलाह आ एक मासक भीतरे शोकसँ डूबल ओहो शरीर त्याग केलनि।

राजा-रानीक एहि अमर प्रेमक खिस्सा इलाकाक आनो गाममे लोक सबकेँ बूझल छैक।

q

12. अन्तमे

एखनुक समय जकाँ यदि पहिने रियलिटी शो के प्रचार भेल रहितै आ हमरा गामक लोककेँ किछु बूझल रहितैक तऽ खुरचन ठाकुर आचिलमसोंट भाइ जरूरे स्टेजपर सिनेमा स्टारक सामने अपन करतब देखा कए इनाम लूटने रहितथि। तहिना जँ ओलिम्पिक आ अन्य खेल महोत्सव सबमे भाग लेबाक अवसर भेटल रहितै आ कि मैराथनक प्रचार भेल रहितैक तऽके टहलू दासकेँ हरा सकैत छल? आइ मिल्खा सिंहक बदला टहलू दासक नाम लोक जपितए। हमरा गामक नामे ओलिम्पिक मेडल रहितए। लम्बोदरक भोजनक खोराक जरूरे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्डमे लिखा गेल रहितै। बिग बॉस सन शो लेल बीए अति उपयुक्त व्यक्ति होइतथि, सब प्रतिभागीमे झगड़ा लगा अपने जीत जइतथि। यदि कियो ढंगसँ पैरवी केने रहितै तऽहुनका सरकारक कृषि पण्डित पुरस्कार सेहो भेटि जइतनि। पण्डितजीक आशीर्वचनक शब्दकोष यदि छपि गेल रहितनि तऽ जरूरे अपने सब हमरा गामक एहि विभूतिसँ परिचित भऽ गेल रहितहुँ। छपेबाक प्रयासमे लागल छी। ईहो अद्वितीये होएत से हमरा विश्वास अछि।

फूलन देवीक ओतेक नाम भेलै मुदा हमरा बुझने साहसमे ओ झलकीक पासङ्ग नहिए होइतए। झलकी एखन अछिए आ ओकरा बहुत नाम कमेबाक छैक। हमहूँ एहिमे ओकर मदतिमे लागि गेल छी। जे समय बीत गेल से समय तऽघुराओल जेतै नहि, वर्तमानकेँ तऽसुधारी। जहिया झलकी एमएलए बनि जाएत तहिया हमर खकपतिया गामक नाम अपनहि देश मे सबतरि प्रचारित भऽ जेतै।

आब अपने सब बुझिए गेल हेबै जे हमरा गामक एहि रत्न सभक फोटो किएक नहि देल गेल। दिवंगत लोक सबकेँ फोटो अबितै कतए सँ? विभिन्न कारणसँ बीए, नटवर लाल आ पण्डितजी फोटो नहि खिचौलनि। झलकीक फोटो तऽ छैक मुदा एखन ओ फोटो छपबए नहि चाहैत अछि। ओकर लक्ष्य पैघ छै। फूलन देवीपर सिनेमा बनलै तऽ झलकी पर किएक नहि? जखन झलकी एमएलए बनि जाएत तखन अपनहि ओ ई काज कऽ लेत। ओकरो पूर्ण इच्छा छैक जे गामक नाम उजागर होअए। एकर तैयारी लेल ओकर जतेक प्रोग्राम होइत छैक तकर भीडियो बना कए हम सब रखने जाइ छी। हमरा आशा अछि जे कहियो ओकर उपयोग झलकीपर सिनेमा बनौनिहार करबे करता।
जारी....

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१. नारायण यादव- भाय-बहिन २. डॉ. बचेश्वर झा-मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा 'यदुवरक देन ३. राजदेव मण्डल- वापसी (एकांकी)

१

नारायण यादव

भाय-बहिन

मगध देशक राजा वरुणदेव छलाह। ओ महान प्रतापी, योद्धा, वीर, नीति-निपुण, कुशल प्रशासक आ प्रजा पालक राजा छलाह। वरुणदेवक न्याय प्रियता आ कला कौशलक प्रसंशा दूर-दूर तक फैलल छल। राजाक वियाह महान विदुषी आ सुन्नरि राजकुमारीक संग भेल छल। राजकुमारी दोसर देशक राजा अरुणदेवक जेष्ठपुत्री छलथिन्ह। रूप-रंग आहार-व्यवहार एतेक नीक छलख् जे राजा-पत्नी प्रति समर्पित छलाह। वियाहो बड़ धू-धामसँ भेल छल। बहुत दिन धरि दाम्पत्य जीवनक निर्वहन करैत एक पुत्र आ एक पुत्री रत्नक प्राप्ति भेलैन्ह। पुत्रक नाम शिवधर आ पुत्रीक नाम गायत्री छल। शिवधर जेठ आ गायत्री छोट छलीह। राजा वरुणदेवक लार-प्यार आ मायक वात्सल्य प्रेमसँ शिवधर आ गायत्री परिलालित होइत रहलाह।

राजा दुनू सन्तानकेँ शिक्षा ग्रहण करयवाक हेतु योग्य शिक्षकक सानिध्यमे दय देने छलथिन्ह। समयक गति ससरैत रहल। राजा किछु आवश्यक कार्यार्थ राज्यसँ बाहर गेल छलाह। रानी अपन रनिवासमे पलंगपर सुतल छलीह। तावत् देखैत छथि जे मकानक भेटिलेटरपर जे खाली जगह छलैक, ओहिपर एकटा बगड़ा आ बगरनी खोंता लगाकय सुखपूर्वक जीवन व्यतित करै छल। दुनू पत्ति-पत्नीमे बड़ प्रेम छल। वगरनी गर्भवती छलीह। दू-चारि दिन वाद ओ अंडा देलक। अंडा जुएलाक बाद बच्चा सेहो भेलैक। बगरा आ बगरनी अपना बच्चाकेँ चोंचसँ खाना खुआवैत छल। कोनो दुर्घना बस बगरनीक निधन भय गेलैक। आब बगरा दोसर शादी कय दोसर बगरनीकेँ अपना घर (खोंता)मे अनलक। बगरनी जखन नव घरमे अयलीह तँ पूर्वसँ पालित बच्चाकेँ देखलक। बच्चाकेँ देखिते बगरनी ईर्ष्यासँ जरय लगलीह। एकान्त पावि ओ गराक बच्चाकेँ चोंचसँ नींचा गिरा देलक। ई दृश्य देखि रानी व्याकुल रहय लगलीह। बड़ चिंतित रहय लगलीह। सदिखन मनमे सोचथि जे एहि जिब्बगीक कोनो ठेकान नहि। जँ कहीं हमरो निधन भय जाए तँ हमरो वाल-बच्चाक संग एहि प्रकारक घटना न घटित भऽ जाए। एहि हालतमे रानी सोचलक जे ई बात राजाकेँ कहि राजासँ प्रतिज्ञा करावी जे हमरा मुइलाक बाद ओ दोसर वियाह नहि करथि।

राजाकेँ बाहरसँ अयलाक बाद रानी सभ बात राजासँ कहि सुनौलैन्ह। आ ओहो राजासँ प्रतिज्ञा करौलैन्ह जे जँ हमरा किछु भय जाय तँ अहाँ दोसर वियाह नहि करब।

राजा रानीक बात सुनि अचंभित भय गेलाह। राजा बजलाह-

“अहाँ ई अशुभ बात कियैक बजैत छी।”

रानी बजली-

“एहि जिनगीक कोन ठेकान।”

कालक्रममे समय बितैत गेल। समयक प्रवाहमे बहुतो परिवर्त्तन भेल। रानी महामारीक प्रकोपमे पड़ि गेलीह। डाक्टर इलाज करय लगलाह।मुदा ईश्वरक मर्जीक आगा ककरो किछु नहि चलैत अछि। हदीशक एक पाँति अछि- लाइलाही इल्लाह महमदे रसूल्लाह। ईश्वरक मर्जीक वगैर एकटा पत्तो नहि हिलैत अछि। आ रानी तेहेन रूसान ने रूसलीह जे बौसव कठिन भय गेल। श्राद्ध कर्म सम्पन्न भेल। राजा अपन प्रतिज्ञाक अनुसारे विवाह करब मनसँ निकालि देने छलाह। साल-दू-सालक वाद कुटुम्ब, महामंत्री आ शुभ चिन्तकक आग्रह पर राजा विवाह करवाक हेतु विचार करय लगलाह। लोक सभक कथन छल जे राजाक राजपाट विना रारा-रानीक चलौनाइ असम्भव अछि। राजाक मन डोलि गेलैन्ह आ ओ शादी कय लेलैथ। व्याहीसँ सगही वेशी दुलारू होइत अछि। राजाक सगही किनिया रानीक रिक्त पदकेँ भरलैथ। रानी अपन काम काज सम्यलैन्ह। विाही कनियाँक बाल-बच्चाक प्रति मनहि मन ईर्ष्याक भाव राखय लगलैन्हि। राजा बुद्धिमा छलाह। ओ अपन पुत्र शिवधरकेँ शिक्षा प्रदान करवाक लेल कोनो नीक स्कूलक छात्रावासमे रखबा देने छलथिन्ह। संयोगसँ विद्यालय किछु दिनक लेल बन्द भेल छल। तँ शिवधर छात्रावाससँ घर आवि गेल छल।

एक दिनक बात छलैक। शिवधर गेन्द खेलाइत छल। गेन्द उछलि कऽ राजाक आंगनमे रानीक गोदमे आवि खसल। शिवधर दौगल अयलाह आ अपन सौतेली माँक गोदसँ गेन्द लय पड़ेलाह।

रानी नौकरानीसँ पुछलथिन्ह जे ई वालक के छल जेकरा ऐतेक हिम्मत भेलैक जे हमरा गोदीसँ गेन्द लय लेल। नौकरानी बाजलि-

“मालकिन ई बच्चा अहिंक सौतेला बेटा अछि आ एकटा बेटी सेहो अछि।”

ejournal 'विदेह' २५८ म अंक १५ सितम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १२९ अंक २५८) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

रानी ईर्ष्यासँ अभिभूत भय दु:खी रहय लगलीह। हमेशा यैह सोचथि जे राजा अपना बाद एकरे राज पाट देथिन्ह। हमरासँ जनमल पुत्रकेँ राजा नहि बनौथिन्ह। ई धृतराष्ट्र जकाँ पुत्र मोहमे पड़ि गेलीह। दिनानुदिन रानी रूग्न रहय लगलीह। कतेक डॉक्टर-वैद्य आबय लगलाह आ इलाज करय लगलाह। मुदा दवाईक कोनो प्रभाव रानीपर नहि पड़लैन्ह। राजा सेहो दु:खी रहय लगलाह। राजा आब अधिक समय रानीपर देमय लगलथिन्ह। रानीकेँ कोनो रोग रहत तखन ने दवा-दारूसँ ठीक हेतैन्ह। राजा रानीसँ बार-बार पुछथिन्ह जे अहाँ कोना ठीक होयब। रानी राजासँ प्रतिज्ञा करौलैन्ह तकर बाद कहलैन्ह जे हमरा शिवधरक कोढ़-कलेजी आनि दिअ। तखन वीमारी ठीक होयत। राजा प्रतिज्ञा कय चुकल छलाह। तेँ विवश भय जल्लादकेँ आदेश देलैन्ह जे शिवधरकेँ जंगलमे घुमयवाक हेतु लऽ जाऊ आ ओकरा मारि ओकर कोढ़-कलेजी नेने आऊ।

एमहर शिवधरक बहिन अपन सौतेली माँक मनोदशाकेँ भापि चुकल छलीह। गायत्री राजा-रानीक सम्वादसँ अवगत छलीह तेँ ओ मायक बगहना-जेवर आ किछु रूपया-पैसा लय जल्लादक पाछू-पाछू जंगल पहुँचलीह। शिवधरक बहिन कहय लगलथिन्ह जे यौ जल्लाद भाई लोकनि हमर माय अहाँ सभकेँ कतेक मानैत छलीह। अहाँ लोकनि जे धन सम्पति लेब से लीअ आ हमरा भाईकेँ छोड़ि दीऔन्ह। हमरा सौतेली मायकेँ कोनो वीमारी नहि छैक। ओर हमरा भाईकेँ मारबाक प्लान अछि। तेँ अहाँ लोकनि कोनो जानवरक कोढ़-कलेजी लय लीअ आ हमरा सौतली मायकेँ दय देबैन्ह आ कहबैन्ह जे ई शिवधरक कोढ़-कलेजी अछि।

गायत्रीक बात सुनि पहिने तँ जल्लाद लोकनि नाकर-कुकर केलैन्ह। मुदा बादमे धनक लोभसँ लोभित भय शिवधरकेँ एहि शर्तपर छोड़वाक हेतु तत्पर भेलाह जे ई कहियो अपना देश घुमि कऽ नहि आबथि।

शिवधर दुनू भाए-बहिनकेँ ई शर्त मानय पड़लैन्ह। आ गहना-जेवर रूपया पैसा लय शिवधरक जान बकैस देल गेल। शिवधर अपन देशकेँ छोड़ि दोसर देश चल गेलाह। आ शिवधरक बहिन गायत्री घुमि कऽ राज दरवारमे आवि रहय लगलीह। एमहर चांडाल लोकनि कोनो जानवरकेँ मारि, ओकर कोढ़-कलेजी लय रानीकेँ दय देलनि। रानी बड़ खुश भेलीह।

ओमहर शिवधर अपन देश छोड़ि दोसर देश चल गेलाह। राजदरवारमे जा राजा सेवा-सुश्रुषामे रहय लगलाह। राजा बेटा छलाहे बड़ पैघ संस्कारी सेहो छलाह। राजा नि:सन्तान छलाह। तेँ शिवधरकेँ अपना बेटा जकाँ मानय लगलाह। शिवधरकेँ उच्च शिक्षा देबाक

व्यवस्था कयलैन्ह। किछुए दिनमे शिवधर सर्वगुण सम्पन्न भय गेलाह। राजा सेहो वृद्ध भय गेलाह। शिवधर मे राज्योचित गुण देखि राजा हुनका अपन उत्तराधिकारी नियुक्त कय संयास धारण कय लेलथि।

एमहर राजा वरुणदेव सगही पत्नीक संग मिलि राजपाट चलबय लगलाह। वरुणदेवक पत्नी राजाकेँ अपन परिणय लीलामे जकरने रहली। राजा हर हमेशा पत्नीक जी-हुजुरीमे लागल रहैत छलाह। गंगा दशहराक दिन छल। गंगा स्नानक बहाना बना कय अपन संतौली बेटी गायत्रीकेँ संग लय गंगाकात अयलीह। दुनू माय-बेटी गंगामे स्नान करय लगलीह। रानीक नियतमे खोंट छल। ओकर गायत्रीक प्रति ईर्ष्याक भाव जागि उठल। आ रानी गंगाक तेज धारामे गायत्रीकें धकेल देलक। गायत्री गंगामे दहा गेलीह। रानी कानैत-खिझैत घर अयलीह। किछु दुरक बाद राजा शिवधर राज्य पड़ैत छल। संयोग नीक छल। शिवधर किछु सैनिककेँ लय शिकार खेलवाक प्रयोजनार्थ गंगाक किनारमे आयल छलाह। शिवधर गंगामे भसियैत वच्चियाकेँ देखि सिपाहीकेँ आदेश कयलाह जे एकरा गंगासँ ऊप्र कर।

सिपाही भसियाइत गायत्रीकेँ ऊपर कयलक। गायत्री र्निवस्त्र भय गेल छलीह। राजा ओहि र्निवस्त्र कन्याकेँ अपन चादर पहिरा अपना दरवारमे बहिकरनीक रूपमे राखि लेलथिन्ह। गायत्री अपना भाइकेँ पहचानि गेलथिन्ह। ओ सोचय लगलीह जे ई तँ हमर भाई शिवधर थिकाह। राजा शिवधरोकेँ गायत्रीक प्रति विशेष स्नेह रहैत छल।

एक समयक बात छल। राजा शिवधरक राज्यमे बड़ पैघ मेला लागल छल। राजा ओहि मेलामे भाग लेबाक हेतु चललाह। ओ बहिकरनी लग जाकय पुछलथिन्ह-

“गैबहिकरनी, मेलासँ तोरा लेल की नेने अयवौ से कह।”

वहिकरनी बजलीह-

“मालिक, हमरा वास्ते एक काठक बनल हंस नेने आयब।”

राजा शिवधर अपना राज्यक सभसँ पैघ मेलाक उद्घाटन कय बहुतो रास रस-समान खरीद बहिकरनीक हेतु काठक बनल हंस सेहो खरीदलैन्ह। नहि जानि जे बहिकरनीक प्रति राजाक स्नेह अनायासे कियैक बढ़ि गेल छल। राजा गायत्रीमे अपन बहिनक रूप देखैत छल। आ अपन बहिनहुसँ अधिक ध्यान रखैत छलाह।

संध्याक समय जखन राजा शिवधर घर पहुँचलाह तखन किछु समानक संग काठक बनल हंस सेहो बहिकरनीकेँ देलथिन्ह। गायत्रीक शयन कक्ष बहरधारामे छल। जखन निशि भाग राति भय जाइत छल, सभ कियो सुति रहैत छल तखन बहिकरनी काठक बनल हंसकेँ अपना सामनेमे राखथि आ संगहि सूप आ वारहनि सेहो राखथि। सभ वस्तुकेँ सामने राखि वाजथि-

“हे हौ हंस, ई सूप वारहनि छियैक की नहि?”

हंस बाजथि-

“हँ तँ हँ।”

वहिकरनी बाजथि-

“ई राजा हमर भाई शिवधर थिकाह की नहि?”

काठक बनल हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“हमरा भाईकेँ जल्लाद मारबाक हेतु जंगल लय गेल की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

एहि प्रकारे बहिकरनी अपन व्यतित घटना हंसकेँ सुनाबथि आ हंस सभ करूण कथामे हुँहकारी भरथि। नोकर-चाकर, सर-सिपाही आ खुपिया विभाग राजाकेँ कहलथिन्ह जे सरकार बहिकरनीकेँ अपने की खरीद देलयन्हि जे भरि राति हँ मे हँ करैत रहैत अछि। सभक निन्द हमराम कय दैत अछि।

राजा प्रतापी आ संस्कारी छलाह। ओ एक राति जखन सभकियो गाड़ी निद्रामे छल तखन अपना शयन कक्षसँ उठि बहिकरनीक बहर धाराक ओठमे आबि ठाढ़ भय गेलाह।

राजा शिवधर बहिकरनीक सभ बात सुनय लगलाह। वहिकरनी सूप, वारहनि काठक हंसक सामनेमे राखि बाजलि-

“हे हौ हंस, ई सूप वारहनि छिऐक की नहि?”

हंस बाजल-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“ई राजा शिवधर हमर भाई थिकैक की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“हम एक भाई आ एक बहिन थिकहु की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“हमर अपन माय बचपनेमे मरि गेली की नहि?”

हंस-

“हँ तँ हँ।”

बहिकरनी-

“हमर बाबूजी दोसर वियाह कयलैन्ह की नहि?”

हंस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकनी-

"हमर भाई गेन्द खेलाइत छलाह की नहि?"

हंस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी-

"गेन्द उछलि कऽ हमरा सौतेली मायक गोदीमे चल गेल की नहि?"

हंस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी-

"जल्लादक माध्यमे हमरा भायक कोढ़-कलेजी लेवाक लेल कहलक की नहि?"

हँस-

"हँ तँ हँ।"

बहिकरनी-

"हमर भाई हमरा गंगासँ छानि वाहर लौलैन्ह की नहि?"

हंस-

"हँ तँ हँ।"

वहिकरनीक मुँसँ ई शब्द सुनि राज शिवधर विह्वल भय गायत्रीक गर्दनि पकड़ि कानय लगलाह आ गायत्री सेहो गलामे गला लगा कानय लगलीह।

राजा शिवधरक खुपिया विभागक पदाधिकारी जे राजाक पाछाँ राजाक गति विधिपर नजरि रखवाक हेतु छपल छलाह। ओ तुरत महामंत्रीकेँ वस्तु स्थिति सँ जानकारी करौलैन्ह।

महामंत्री दौगल राजाक समीप आवि राजा आ गायत्रीकेँ बोल-भरोस दैत दुनूकेँ रनिवामे लय गेलाह।

२

डॉ. बचेश्वर झा

मैथिली साहित्यमे यदुनाथ झा 'यदुवरक देन

सहरसा जिलाक प्राचीन लेखक वा कवि लोकनिक विस्तृत परिचय प्राप्त करबाक साधन नहि अछि। यद्यपि हुनका लोकनिक रचना अधिकांशत: प्रकाशित होइत छल 'मिथिला मोद'मे परन्तु कोनो साहित्यकार अपन परिचयक प्रसंगमे नहि लिखैत छलाह।

यदुनाथ झा 'यदुवर'मैथिली भाषा एवम् साहित्यक विकासक लेल 'मोद युग'मे जे कोनो अनवरत साहित्य रचना करैत रहलाह ताहिमे सँ एक प्रमुख व्यक्ति रहथि 'यदुवर'सहरसा जिलाक मुरहो गामक वासी, शिक्षे संस्कृतक विद्वान डाक-तार विभागमे जीविकापन्न रहथि।

मिथिला मोदक एक सशक्त लेखक आ व्यापक अर्थमे जातीय हित चिन्तक छलाह। हिनक जन्म अनुमानत: 1888 ई. तथा मृत्यु 1932 ई.मे भेलन्हि। मोदक जन्महिसँ हिनक रचना उपलब्ध भेल छल। डॉ. जयकान्त मिश्र हिनक प्रसंगमे कहैत छथि- 'Enthusiasm for Maithili unbound, Very few well Parallel to him' मैथिली साहित्यमे गीतक जे एकटा सशक्त परम्परा अछि ताहि क्रममे यदुवरजी बहुत गीतक रचना कएने छथि। ओकर विषय वस्तु प्रतिपादन करबाक शैली आदिमे परिवर्त्तन कऽ देलन्हि। गीतहुमे हुनक नव दृष्टिकोणक अभिव्यक्ति भेल अछि। गीतक अतिरिक्त अनेको कविता, कैकटा निवन्ध मिथिलाक एक जटिल समस्या, वैवाहिक समस्याकेँ प्रस्तुत करैत कथा आदि प्रकाशित छनि। हिनक विचारधारा कतेक प्रगतिशील एवम् आधुनिक छलनि से स्पष्ट रूपेँ अभिव्यक्त भेल अछि। मैथिलीक राष्ट्रीय गीतक संकलन मैथिली गितांजलीक भूमिकामे संकलन एवम् प्रकाशन कय यदुवरजी एकटा नव दिशाक संकेत कयलन्हि जकर ऐतिहासिक महत्त्व छैक।

भूमिकामे स्पष्ट कहने छथि : ज्ञान श्रृंगारिक सम्बन्धी कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचि गेल अछि आब राष्ट्रीय विषयक कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचेबाक अछि। आब राष्ट्रीय विषयक

कविताक प्रकाशन होयब परमावश्यक अछि। एहिसँ सिद्ध होइछ जे मैथिलहुमे राष्टीय भावना एवम् आधुनिक विचारधाराक प्रादुर्भाव होमए लागल। शंकरक विवाह नामक गल्प, प्रभात प्रभा, मैथिलीक आरतीनव युगक लोकनिसँ। गृष्म ॠतु वर्णन भ्रमर आदि काव्यरचना तथा वसन्त आदि निवन्ध प्रकाशित छनि जकर उल्लेख आगाँ कयल जाय।

मैथिली समाजक व्यापक रूपैँ हित चिन्तक मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक उन्नतिक हेतु सतत संघर्षशील। यदुवरजी कतहु कतहु परंपराक पालन करितहु विषय-वस्तु एवम् शिल्प दूहूमे नवीनता आनि देलनि। देश भक्ति भावनाकँ स्पष्ट रूपैँ मुखरित कयने छथि।

सर्व प्रथम प्रस्तुत अछि हिनक किछु गीत। स्वभाविक धार्मिक प्रवृत्तिक रहबाक कारणँ भक्ति गीतक रचना करब स्वाभाविक। थोड़ शब्दमे हृदयक भक्तिभाव अभिव्यक्ति करैत- 'दुर्गाक वन्दना :

जय जय दुर्गे, दुरित निवारणी,
भव भय हारिणी रिपु संहारिणी,
जन सुख कारीणि तारीणि,
वद्धु तनु धारिणी जगदुपकारीणि,
शिव संग सतत विहारीणि,
जय नारायणी नरक निवारीणि
यदुवर अधम उधारीणि।।

तीनटा गीतमे चण्डीक वन्दना कयने छथि। जाहिमे देश भक्तिक भावनाक जे अभिव्यक्ति भेल अछि से पाँतीएसँ स्पष्ट होइछ।

"मिथिलाक मान राखू भारतमे चण्डी, एरहु सभ पाप हो रामा।।"

दोसर गीतमे भगवतीकँ उपराग दैत छथिन्ह जे जाहि भूमिसँ अहाँ जन्म लेलहुँ तकरे आइ दुर्दशा अछि आ से अहाँ देखैत छी। विषम वस्तु एवम् विचारधारामे कतेक आधुनिकता छलनि तकर उदाहरण अछि-

"मैथिलीक आर्ती नामक कविता।" एहिमे मैथिली अपन सन्तानकँ करूण स्वरँ अपन दुर्दशा दूर करबाक लेल कहैत छथिन्ह। मिथिला शिक्षित समाजकँ जे अपनाकँ प्रवुद्ध मानैत

छलाह हिन्दीए प्रिय छलैन्ह। हुनका लोकनिपर ने अंग्रेजक मातृभाषाक प्रेमक प्रभाव आ ने बंगालक नव जागरणक। अपने घरमे अपन मातृभाषा छोड़ि हिन्दीक भक्त बनि अपनाकेँ गौरवान्वित बुझनिहार मैथिल छलाह। स्वदेश, स्व भाषा, स्वजातिसँ विमुख मैथिल सन दोसर जाति भरिसके छल होएत। तँ ओहन प्रवुद्ध मैथिलक हेतु-

"की अपराध हमर अछि कहु-कहु मिथिलाक सपूत सुजान। भए रहलहुँ अछि पतन दृष्टि सौं हम अवनत दुर्दिन खरिहान।।

चूभि-चूभि मुख हमहि सिखाओल बाजब माय-बाप अछि।

विलरै छी सभ हमर आई किए हा ओ अहाँ लोकनि प्रेमादिया।।

ताकू ऑंखि उठाय कनेको थिकहुँ मैथिली माय अहाँक।

खैने लात फिरै छी घर-घर, कोनहुँ विधिए जीवन राखि।।

दोसर कविता अछि 'नवयुवक लोकनिसँ नम्र निवेदन'

कवि नवयुवक लोकनिसँ आग्रह करैत छथि जे ओ लोकनि आलस्य छोड़ि भाषा, जातिक विकासक लेल कटिवद्ध भय जाथि ताहि हेतु केओ उपहासो जौ करए तँ करए दियौ।

हँसय देखि यद्यपि केओ अहाँकेँ हँसय दियौ मरि पोख,

देश, जाति ओ धर्म हेतु निज किछु तँ समय बँचाउ,

कोनहु विधि देशक सेवाकेँ सबथल राम जँचाउ।

साहियमे भ्रमरक चर्चा उत्यधिक होइत रहल। भ्रमरक गुंजन कानकेँ तृप्त मनहि करओ, मुदा ओकर स्वभाव निन्दनीय मानल जाइछ। लोभी, मुदा यदुवरजी रूपेँ उदार चरित्र व्यक्तिवक संग तुलना कएल।

एहि मान्यताक खण्डन कय नव दृष्टिकोणक स्थापना कयलन्हि अछि। हुनक मते भ्रमर कपटी नहि अछि ओ तँ गुणक अन्वेषण करैत रहैछ। एक फूलसँ दोसर फूलपर जायब गुणक अन्वेषण करब थिक। समाजहुमे गुणवान व्यक्तिक आदर होबक चाही। गुणवान व्यक्तिक गुण ग्राहकक अभाव नहि।

"कारी देखि भ्रमर सब तोहर, करइत छथि उपहास,

कपटी रूप कहै छथि सब और दैत अछि त्रास।

कारी रूप विचित्र यद्यपि तो किन्तु सकल गुण ख्यात्

गुणिए जन करइत छथि जगमे गुणी जनक सम्मान।"

जहिना भ्रमर चर्चि तहिना कोइली आदृत। ऋृतुराज वसन्तक वर्णन। वसन्तक आगमन संदेश बाहक कामदेवक एक शसक्त सैनिक थिक कोइली। परंच यदुवरजी एहू मान्यताकेँ खण्डित कय जागरणक दूतमानलन्हि अछि। एकटा ओ कोइलीसँ भारतवासीक पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेषकेँ व्यक्त करैत कहैत छथिन्ह।

"सुमरि सुमरि तोहरा हे कोकिल, नयन नीर वरिसाबै,

भाग्यहीन भारतवासीकेँ जनु कहियो विसराउ।

सभकेँ बचन सुनाय हितक पुनि वैर, विरोध हैटाउ।"

विषय-वस्तुमे नवीनता अनवाक क्रममे उपेक्षित तुच्छ वस्तुक वर्णन कय एकटा नव दिशाक सूत्र पात कयलनि। उल्लू, रेलबे स्टेशनक सिंगनल, मोसियानी,कुकुर आदिपर काव्य रचना करब हिनक मौलिकताक परिचायक थिक। उदाहरण स्वरूप- मोसियानी :

"शान्ति भरल छुए जे मोसियानी,

तोहर गुणकेँ सभ केओ मानी,

कलमक मारि खाइओ ढेरि,

तथापि दैत छ मसि प्रतिवेरि।"

एहि प्रकारेँ यदुवरजीक काव्य रचनाकेँ सर्वत्र कोनो ने कोनो प्रकारक मौलिकता, नवीनता अछिए। स्वदेश, स्वभाषा आ सभ जातिक हित चिन्तन, ओकर उन्नतिक हेतु अथक प्रयत्न करब संगहि ओकर अधिकार प्राप्तिक लेल संघर्षशील रहब प्रधान उद्देश्य छल।

मिथिला, मैथिल एवम् मैथिलीक लेल कतेक प्रेम छलनि तकर उदाहरण स्वरूप चारिटा पाँती-

"सूनू औ बन्धुगण त्यागू ई विषधर निन्दकेँ

कर्त्तव्य पालनमे लागू, भजु मातु पद अरविन्दकेँ

गाँथि एकताक सूत्रमे, हिनका जगाउ सब मिलि कए,

निज देश मिथिला, जाति मैथिल, मातृ भाषा मैथिली...।"

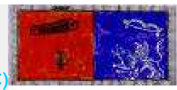
अस्तु शुभम्...।

3.

वापसी

वापसी

राजदेव मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

ISBN :

दाम : '50/-

पहिल संस्करण :2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन

तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला-सुपौल,

बिहार: 847452

वेबसाइट :http://pallavipublication.blogspot.com

ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com

मोबाइल :8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)

आवरण :श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

WAAPSI

One-Act Play by Sh. Rajdeo Mandal.

साहित्यसँ सिनेह रखनिहार

सुधीजनकेँ सादर समर्पित।

पात्र परिचय-

1. पतिलाल- (दहेजक लोभी बेकती)
2. लुतीचन- (पतिलालक ग्रामीण)
3. कंतलाल- (पतिलालक बेटा)
4. चन्देसर- (पतिलालक समधी)
5. फूलोदाय- (कंतलालक पत्नी आ चन्देसरक बेटी)
6. सुखबा- (चन्देसरक बेटा)
7. घोंघाय- (चन्देसरक ग्रामीण)
8. चटपटिया- (चन्देसरक ग्रामीण)
8.

अंकप्रारम्भ

प्रथम दृश्य

स्थान- पतिलालक दुआरि।

समय- दिन।

लुतीचनक प्रवेश

लुतीचन- (जोरसँ आवाज दैत अछि।)

काकाऽऽऽयौ काकाऽ ऽ। अँगनामे छिऐ यौ। एने आऊ कनी।

(पतिलाल भीतरसँ निकलैत अछि।)

पतिलाल- किए एते जोरसँ हल्ला करै छँह। बाज ने की बात छिऐ।

लुतीचन- काल्हि साँझमे हाट गेल छेलौं। अहाँ समधीक भाय भेटल छल। समधी बेमार अछि। ओ कहलक भेँट करबाक लेल।

पतिलाल- धुर, की भेँट करबै। बियाहमे जे दहेजक रूपैआ बाँकी रहि गेलै से अखनी तक नहि देलक। दू गोरेक सोझामे गछौटी केने छल।

लुतीचन- छोड़ि दहक आब ओइ गप्पकेँ। कहबियो छै- भेल बिआह आब करब की।

पतिलाल- केना छोड़ि देबइ। ऐ कारणे तँ अँगनामे माए बेटा दुनू मिलि कऽ हमरासँ लड़ैत रहैए।

लुतीचन- ओतए जेबहक तब ने कोनो बातो हेतह।

पतिलाल- तहूँ चल ने लुतीचन। दुनू गोरे रहबै तँ गप्पो चलबैमे ठीक रहतै।

लुतीचन- ठीके छै। हमहूँ जाएब। ओनएसँ बजारक काजो केने आएब। अहाँआऊ हम तैयार रहब।

q

(कहैत लुतीचन प्रस्थान करैत अछि।)

सीन ड्राप।

दोसर दृश्य-

समय- दिन

स्थान- (पतिलालक समधी चन्देसरक घर।

(पतिलाल आ लुतीचनक प्रवेश)

लुतीचन- दुआरिपर तँ कोय नहि अछि।

(अँगनासँ कनबाक स्वर आबि रहल अछि।)

पतिलाल- (कान लगा कऽ सुनैत अछि)

यौ समधीजी छी यौ। अँगनासँ निकलू ने। हम दुआरिपर ठाढ़ छी।

(कनबाक स्वर मद्धिम भऽ जाइत अछि। चन्देसरक जेठ बेटा सुखबा आँखि पोछैत निकलैत अछि।)

सुखबा- आऊ बाबू, अँगने आऊ।

बाबूजी नहि रहला। चलि गेला स्वर्ग। आब हुनकासँ भेँट नहि होएत।

पतिलाल- ओह! जुलुम भऽ गेलइ। की भेल छेलै?

सुखबा- (कनैत स्वरमे) किछो नहि भेल रहै। दू-तीन दिनसँ बोखार लगै छेलै। आइ एकाएक छातीमे दरद उठलै आ जाबे सचेत भऽ कऽ असपताल लऽ जैतौं ताबे पराने छुटि गेलइ।

पतिलाल- अच्छा सबुर करह। कनलासँ किछ नहि हेतह। की करबहक, भगवानकेँ इएह मंजूर छेलइ। होनीकेँ कियो नहि रोकि सकैत अछि। धरतीपर एतबे दिनक दाना-पानी लिखल छेलैन। धीरज तँ बान्है पड़तह।

सुखबा- हँ, से तँ ठीके। आब दोसर उपाये कोन छइ। मुदा पहिनेसँ एहेन बातक कनियोँ शंका नहि छेलइ।

पतिलाल- हौ, एहेन मृत्यु तँ सभसँ नीक। किनको सेवो-टहलक अवसर नहि भेटलैन।

सुखबा- ई तँ दोसर बात भेल बाबू। मुदा अचानक जे कोनो भरिगर भार कपारपर पड़ि जाइ छै तँ...।

पतिलाल- शान्तिसँ काज करबहक तँ सब चीजक रास्ता लगि जेतइ।

सुखबा- चलू बाबू। अहाँ सभ लहाश लग बैसब। ओइठाम कियो नइ छइ। दाह-संस्कारक लेल हमरा कतेक चीजक इन्तिजाम करए जाए पड़त।

पतिलाल- चलह।

(सुखबा आगू आ पाछूसँ पतिलाल आर लुतीचन विदा होइत अछि।)

०

सीन ड्रॉप।

दृश्य- तीन

समय- दिन।

स्थान- चन्देसरक घरक एक भाग

(चौकीपर चन्देसरक लहाश अछि। एकटा औरतिया ओइठाम बैसल अछि। सुखबा, पतिलाल आ लुतीचनक प्रवेश।

(पतिलालकेँ देखते औरतिया नोर पोछैत विदा भऽ जाइत अछि।)

सुखबा- अहाँ सभ अहीठाम बैसू आ हमरा लकड़ीक इन्तिजाम करैले जाए दिअ। (कहैत विदा भऽ जाइत अछि। पतिलाल माथपर हाथ दऽ एक कातमे बैस जाइत अछि।)

लुतीचन- मन किएक दुखित करै छी। बुढ़ छेलैथ नीके भेलैन जे मरि गेला।

पतिलाल- से तँ ठीके कहै छी। मुदा पत्नी आ बेटाकेँ की जवाब देबै? ओ तँ हमरे दिस हुड़कान मारै छइ।

लुतीचन- की हुड़कान मारैए?

पतिलाल- धुर तूँ की बुझबीही। गुड़क मारि तँ धोकड़े बुझै छइ। पत्नी कहैत रहैए जे लोककेँ केते दहेज देलकै। मुदा अहाँकेँ ठकि लेल। गछलो टका नहि देलक। अहाँ बुड़बक छी। मुरुख छी।

लुतीचन- अच्छा, सुनू एकटा बात कहै छी।

पतिलाल- कह ने रौ। कोनो उपाय लगा ने।

लुतीचन- समधीक कान दिस देखै छिऐ।

(लहाश दिस इशारा करैत)

दुनू कानमे सोनाक कनौसी अछि निकालि कऽ जेबीमे रखि लिअ। कियो ऐठाम नहि छै जे देखबो करत।

पतिलाल- बात तँ तूँ ठीके कहै छँह मुदा बुझि जेतौ तब की हएत?

लुतीचन- ऐठाम आइ केतेक लोक एतै आ जेतइ। ओइमे की पता चलतै जे के लेलक। आ जँ बेसी डर बुझाइत अछि तँ अपना गामे दिस चलि देबइ।

पतिलाल- ठीके कहै छँह। इएह अन्तिम उपाय अछि।

(उठि कऽ समधीक लहाश लग जाइत अछि।)

q

सीन ड्रॉप।

दृश्य- चारि

समय- दिन।

स्थान- चौबटिया।

(पतिलाल आ लुतीचन लफड़ल चौबटिया लग पहुँच गेल अछि। पाछूसँ सुखबा अपना दूटा गौंआँ घोंघाय आ चटपटियाक संगे प्रवेश करैत अछि।)

सुखबा- (हल्ला करैत) यौ बाबूऽऽऽ। कनी ठाढ़ रहू।

(पतिलाल आ लुतीचन ठाढ़ होइत अछि)

घोंघाय- (हकमैत) यौ किएक भागल जाइ छी?

पतिलाल- भागल कहाँ जाइ छी। हम तँ गाम जाइ छेलौं।

घोंघाय- गाम किएक जाइ छिऐ?

पतिलाल- जाइ छी गामपर सँ बेटा-पुतौहकेँ भेज देबइ। ओ सभ एता तँ दाह-संस्कारमे भागो लेता।

चटपटिया- अहाँक घरपर समाद भेज देने छी। ओ सभ अबिते हेता। अहाँ परेशान नहि होउ।

पतिलाल- परेशान केना नहि हएब। दूटा माल-जाल अछि। घर-अँगनाकेँ सुनहट छोड़नाय नीक बात हेतइ। हम जाइ छी।

चटपटिया- एकटा गप्प सुनि लिअ समधीजी तब जाएब।

पतिलाल- जल्दी कहू।

चटपटिया- केना कहब, कहितो अनोन सन लगैत अछि आ नहि कहब सेहो नहि बनतै।

पतिलाल- सोझ मुहेँ कहू ने। जे कहैक अछि।

चटपटिया- देखियौ, अहाँ ई नहि सोचबै जे कोनो आरोप लगबै छी। ओना, कर-कुटमैतीमे एहेन बात बाजब अनुचिते होइ छइ। मुदा जँ नहि बाजी तँ आरो अनुचित। सन्देह आ शंकाकेँ साफ कऽ ली, सएह उत्तम होइ छइ।

घोंघाय- तूँ तँ तेतेक गप्पकेँ घुमा-फिरी करै छहक जे एहिसँ नीक हमरा बाजए दएह।

पतिला- हँ-हँ, अहीं बाजू।

घोंघाय- यौ समधीजी, लहाश लग अहीं बैसल छेलौं। तखनी ओइठाम कियो नहि छेलै। सोनाक कनौसी कानमे नहि छइ। अँगनाक स्त्रीगण सभ बजैए जे समधीक कानक कानौसी अहीं निकालि लेलिऐ।

(पतिलाल चुप्पी साधने ठाढ़ अछि।)

चटपटिया- चुप रहने काज नहि चलत समधीजी। सोनाक कनौसी छेलै तँए पुछै छी। अहाँकेँ एना नहि करबाक चाही।

पतिलाल- ठीके कहै छी। हमरा एना नहि करबाक चाही। मुदा समधीजी जे हमरा संगे केलक से हुनका करबाक चाही?

(पतिलालक बेटा कंतलाल आ पुतौह फूलोदाय प्रवेश करैत अछि।)

चटपटिया- ओ तँ बेचारे स्वर्ग चलि गेला। ओ अहाँ संगे की केने छला?

पतिलाल- अखनी तक दहेजक रूपैआ जे गछौटी केने छल से बाँकीए अछि। ओना, अपने तँ दुनियेँसँ चलि गेला।

मुदा ओ रूपैआ हमरा के देत?

चटपटिया- ओ! तँए ओकरा बदलामे कानक कनौसी घींच लेलिऐ।

पतिलाल- तँ की करितौं। पत्नी आ बेटा कहैत अछि जे अहाँ मुरुख छी। बिआहमे ठका गेलौं। अहाँ मनुख नहि छी।

कंतलाल- बाबूजी, अहाँ एतेक नीचा गिर जाएब से पता नहि छल।

फूलोदाय- (पति कंतलाल दिस तकैत)

अहाँक बाबूजी पकिया आदमी अछि। जीयतक तँ बाते छोड़ू, मुइलोसँ सूइद समेत तसील लैत अछि।

कंतलाल- हुनकर सोनाक कनौसी अपास कऽ दियौ। आब ऐ विषयमे हम कहियो नहि बजब।

पतिलाल- ठीके छै, जखन तोरो वएह विचार छौ तँ वापस कऽ दइ छिऐ।

(पतिलाल सोनाक कनौसी सुखबाक हाथमे दैत अछि।)

घोंघाय- अच्छा, आब सब गप्प छोड़ू। चलै चलू, दाह संस्कारमे।

पतिलाल- आब कोन मुहेँ ओइठाम जाएब। सोना तँ हम वापस कऽ देलौं। मुदा हमर प्रतिष्ठाक वापसी तँ नहि भऽ सकैत अछि।

फूलोदाय- चिन्ता नहि करू बाबूजी। अहाँ चलू। हमर घर-पलिवार छिऐ। हम सब बात सम्हारि लेबइ।

कंतलाल- बाबूजी, अहाँ तँ घिनेबे केलौं। सासुरमे हमरो घिना देलौं।

पतिलाल- देखियौ, जेकरा लेल कानलौं, तेकरा आँखिमे नोरे नहि। आब ऐठाम हम ठाढ़ नहि रहि सकै छी।

(तेजीसँ प्रस्थान)

٩

सीन ड्रॉप।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रबीन्द्र नारायण मिश्र- तीनटा आलेख, दूटा लघुकथा आ उपन्यास नमस्तस्यै (आगाँ)

रबीन्द्र नारायण मिश्र

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

तीनिटा आलेख

संपत्ति हस्तांतरण

संपत्ति हस्तांतरणअधिनियम, 1882 १ जुलाइ १८८२सँ लागू भेल।संपत्ति हस्तांतरण अधिनियम स्वैच्छिक हस्तांतरण-बिक्री, बन्हक (भरना), उपहार, अदला- बदली, चार्जपर लागू होइत अछि।विरासात, दिवालिआपन, जव्ती, न्यायलयक आदेशक अनुपालन हेतु,, वा इक्षा पत्र द्वारा कानूनक अनुपालनक हेतु कएल गेल संपत्तिक हस्तान्तरणपरसंपत्ति हस्तांतरण अधिनियमलागू नहि होइत अछि।

क्यो अपन संपत्ति किएक बेचैत अछि? पैसाक प्रयोजन भेला पर-जगजाहिर जबाब अछि।बेचएबलाकेँ उचित पैसा भेटि जाइक आओर किननाहरकेँ सही सलामत संपत्ति जेना जमीन, मकान, फ्लैट, भेटिजाइक जाहिपर किननाहर निर्वाध रूपसँ मालिकाना हक प्राप्त कए सकए, ओकर स्वेक्षा एवम् कानून सम्मत तरीकासँ ओकर ऊपभोग कए सकए।एहन नहि होइक जे कीननाहर सभटा पैसा दए दैक मुदा कीनल गेल संपत्तिपर क्यो आन अपन हक लए ठाढ भए जाइक, किंबा बलपूर्बक ओहि संपत्तिपर कब्जा बनओने रहए।कएबेर एहनो होइत अछिजे एकहिटा संपत्ति कैगोटाक हाथे बेचि देल गेल हो किंवा ओहि संपत्तिपर बैंक वा कोनो आओर व्यक्तिक कर्जा होइक आओर ओहि तरे ओ संपत्ति बन्हक पड़ल हो।ताहि हेतु ई आवश्यक अछि जे कोनो संपत्ति कीनबासँ पूर्व क्रेता उचित पूछताछ कए सुनिश्चित कए लेथिजे ओहि संपत्तिपर कोनो लफड़ातँ नहि अछि।

संपत्तिक हस्तान्तरणक समयमूलतः निम्नलिखित बातक ध्यान राखब जरूरी थिकः

१.बेचनाहरकेँ ओहि संपत्तिपर पूर्ण कानूनी अधिकार हेबाक चाही, ताहि हेतु ओकरासँ संपत्तिक मूल दस्तावेजक मांग जरूर करबाक चाही, मात्र फोटोकाँपी देखिकए सौदा नहि तय कए लेबाक चाही।

२.सब-रजिष्ट्रारक कार्यालयसँ एहि बातक पक्काजानकारी लेबाक चाहीजे ओ संपत्ति भरना/बन्हकतँ नहि अछि।

३.सब-रजिष्ट्रारक कार्यालयसँ एहि बातक एहि बातक जानकारी सेहो लेबाक चाहीजे ओ संपत्ति कहीं पहिने ककरो हाथे बेचि देल गेल तँ नहि अछि?

४.एहि बातक जानकारी लेबाक चाहीजे बेचनाहर ओहि संपत्तिकँ कतएसँआ केना प्राप्त केलक, ताहि दस्ताबेजकँ देखि कए सुनिश्चित करबाक चाही जे बेचनाहर सही आदमीसँ ओ संपत्ति कीनने अछि, माने जे जकरासँ ओ ओहि संपत्तिकँ कीनलक तकर ओकरा बेचबाक पूर्ण अधिकार रहैक कि नहि, अन्यथा काल्हि भेने क्यो सामने आबि कए कहि सकैत अछिजे ओहि संपत्तिमे हमरो हिस्सा छल, तकरा क्यो आन कोना बेचि देलक? एहन नहि हो जे पैसा खर्चा केलाक बाद लफड़ा भए जाए।

कोनो संपत्ति कीनबासँ पहिने की करबाक चाही?

१. पहिने ई पता करी जे ओ संपत्ति बेचनहारकँ कतएसँ प्राप्त भेल? की ओ ओकरा कानून एवम् दस्ताबेजकअनुसार अधिकार प्राप्त व्यक्तिसँ कीनने अछि? ताहि हेतु विक्रयक अनुवंधक बजाप्ता निवंधन (सेल डीडक निबंधन) भेल अछि कि नहि? तकर प्रमाणस्वरूप दस्ताबेज देखल जाए।

२. बेचनहारकओहि संपत्तिपर कब्जा अछि के नहि?

३. ओहि संपत्तिकँ बन्हक राखि कर्ज तँ नहि लेल गेल अछि, जँ लेल गेल अछि तँ कर्जक आपसी भेल कि नहि,

४. संपत्तिक उपर कोनो टैक्सबाँकी तँ नहि अछि?

५. जौं संपत्ति स्वअर्जित नहि अछि तँ ओहिमे आनो लोकक हिस्सा छैक कि बेचनहारएसगरे ओकर हकदार अछि,

६. संपत्तिक दाखिल खारिज बेचनिहारक नामे अछि कि नहि,

७. संपत्तिक वास्तविक नापीक अनुसार ओकर रकबा दस्तावेजमे देल गेल विवरणसँ मेल खाइत अछि कि नहि?

संपत्ति बेचनिहारक ओहि संपत्तिपर अधिकार सुनिश्चित कएलेलाक बाद कीननाहर एवम् बेचनिहार आपसमे एकटा सहमति पत्र पर हस्ताक्षर करताह।ओहिमे क्रय विक्रयक सभटा शर्त लिखल जाएत, जेना संपत्तिक मूल्य, भूगतानक शर्त।उचित मूल्यक स्टांप पत्रपरसहमति पत्र पर बेचनाहर किननाहरक अतिरिक्त दूटा गवाहक हस्ताक्षर होएब जरूरी थिक।

कोनो संपत्तिक हस्तान्तरण हेतु निवंधनसँ पूर्व ओहि राज्यमे लागू कानूनक तहत सटांप पेपर लेब आवश्यकथिक।आइ-काल्हि स्टांप पेपर आनलाइन भेटि जाइत अछि।ताहि हेतु आनलाइन भूगतान कए ओकरजानकारी आनलाइन स्टांप पेपर विक्रेताकँ देब जरूरी थिक। पेमेंटक सूचना प्राप्त होइते ओहि सुविधाकेन्द्र द्वारा स्टांप पेपरकँ आनलाइन निकालिलेल जाइत अछि।एहि तरहे आसानीसँ भारी मूल्यक स्टांप पेपरकँ प्राप्त कएल जा सकैत अछि।

स्टांप ड्युटीक गणना हेतु बेचल जा रहल संपत्तिक सर्किल रेटक आधार पर कएल जाइत अछि।जौं जमीनपर मकान सेहो बनल अछि तँ ओकर अलग-अलग गणना कएल जाइत अछि। विक्रय मूल्य, सरकारी सर्किल रेटदुनूमे जे ज्यादा होएत ताहि हिसाबसँ स्टांप ड्युटी लागत। तकर अलाबा निवंधन शुल्क सेहो अलगसँ देबए पड़ैत अछि।जौं सर्किल रेटक हिसाबसँ उचित स्टांप ड्युटी नहि देल जाइत अछितँ निवंधन खारिज भए सकैत अछि।

मुख्तारनामा(power of attorney) :

मुख्तारनामा/वकालतनामा (पावर आफ अटर्नी)क आधारपर कएल गेल संपत्तिक हस्तानान्तरण :

माननीय उच्चतम न्यायलय सूरज लैम्प एवम् इन्डस्ट्रीज बनाम हरियाणा सरकार एवम् अन्यक मामलामे निर्णय देलक अछि जे मुख्तारनामा (पावर आफ अटर्नी)क आधारपर संपत्तिक हस्तानान्तरण गैरकानूनी थिक।मुख्तारनामा (पावर आफ अटर्नी) मूलतः निकट सम्बन्धीजेना पिता, पुत्र, पत्नी वा खास मित्रक पक्षमे एहि हेतु कएल जा सकैत अछिजे संपत्तिकमालिक कोनो खास वजहसँ ओहि संपत्तिकक्रय विक्रयक निवंधनमेउपस्थित नहि भए सकैत अछि, (जेना कि क्यो विदेशमे हो)

(R.V. Raveendran, A.K. Patnaik, H.L. Gokhale IN THE SUPREME COURT OF INDIA CIVIL APPELLATE JURISDICTION SPECIAL LEAVE PETITION (C) NO.13917 OF 2009)

निवंधनक समय कीननाहर, बेचनाहरक अलाबा दूटा गवाहक उपस्थिति जरूरी अछि। ओहि गबाहक हस्ताक्षरकबाला (सेल डीड) पर जरूरी थिक। संपत्तिक क्रय विक्रयक निवंधनक समयमे कोनो कारणसँ बेचनिहार किंवा कीननाहर स्वयं उपस्थित नहि भए सकैत अछि तँ कोनो सम्बन्धी वा मित्रकेँ उचित मुख्तारनामा(power of attorney) दए ई काज करावोल जा सकैत अछि।

जौं विक्रय मूल्य पचास लाखसँ बेसी अछि तँ कीननाहरक ई कर्तव्य अछि जे विक्रय मूल्यक एक प्रतिशत काटि कए उचित चालान प्रपत्र द्वारा आयकर विभागमे आनलाइन वा बैकमे जमा कए देथि अन्यथा ओ आयकर विभागक चपेटमे आबिसकैत छथि। एहि तरहेँ काटल गेल टाका आयकर विभाग द्वारा आयकर रिटर्न भरलापर कुल देय आयकरमे मिन्हा कए देल जाइत अछि।

सेल डीडक मसौदा :

सेल डीडक मसौदा तैयार करबामे प्रचुर सावधानी राखब जरूरी थिक। ओहिमे संपत्तिक चौहद्दी, रकबा, खाता नंबर, खेसरा नंबर, सहित ओकर पूर्बक मालिकक वर्णन हेबाक चाही।विक्रयमूल्य सहित वेचनिहार एवम् कीननाहरक विवरण हेबाक चाही।बेचनिहार द्वारा स्पष्ट घोषणा हेबाक चाही जे ओ ओहि संपत्तिक पूर्ण मालिक अछि, जे ओहि पर कोनो आन व्यक्तिक अधिकार नहि अछि, जे कोनो तरहक कानूनी विवाद ओहि संपत्तिपर नहि अछि, जे ओ संपत्तिपर कोनो कर्ज नहि बाँकी अछि, आदि, आदि। सेलडीडमे इहो लिखल जेबाक चाही जे ओ संपत्ति बेचनिहारक स्वअर्जित अछि, जौं से नहि अछि आओर ओ संपत्ति संयुक्त परिवारक पुस्तैनीसंपत्तिक हिस्सा अछि तखन ओकरा दियादी बटबाराकसंगे ई प्रमाण देबाक चाही जे ओ संपत्ति ओकरे हिस्साक अछि आओर ओहिपर कोनो आन पटिदारक हक नहि छैक।जौं ओहिमे आनो पटिदारक हिस्सा सामिल छैक, तखन ओहि संपत्तिक विक्रय पत्र (सेल डीड) पर सभ पटिदारक दस्तखत जरूरी अछि आन्यथा भविष्यमे ओहिपर कानूनी झंझटि भए सकैत अछि।सेलडीड (विक्रय पत्र)क निवंधनक बाद कीननाहर द्वारा बेचनिहारकेँ विक्रय मूल्यक पूरा भूगतानक बादेसेलडीड (विक्रय पत्र) कीननाहरकेँ देलजाइत अछि।

जमीन-मकानक क्रय विक्रय सामान्यतः कमे काल होइत अछि जाहिमे जीवन भरिक कमाओल धन लागि जाइत अछि। तँ जरूरी अछि जे ई काज पूर्ण सावधानीक संगे कएल जाए। कागज-पत्तर ठीकसँ बनाओल जाए आ कीनल संपत्तिक कब्जा ठीकसँ लेल जाए जाहिसँ बादमे कोनो प्रकारक झंझटिमे नहि पड़ी।q

क्रान्तिदूत : कबीरदास

ओहि युगमे जखन धार्मिक कट्टरवाद चर्मोत्कर्षपर छल, जखनकि जाति-पातिक भेदबाव समाजक मान्यता प्राप्त केनहि छल संगहि समस्त विधि-विधानकँ प्राभावित केने छल,कबीर दास एकहिबेर विद्रोहक विगुल बजा देलाह! ओहि युगमे जखन उच्च जातिक लोकक संपूर्ण समाज पर वर्चस्व छलैक, जखन धार्मिक, सामाजिक एवम् आर्थिक शक्ति पूर्णतः किछु व्यक्तिक हाथमे सिमटल छल, -कबीरदास बाजि उठलाहः

एक बूंद एक मल-मूतर, एक चाम एक गूदा।

एक जातिसे सव उपना, कौन वाभन कौन सूदा।।

व्यक्ति-व्यक्तिमे भेदभाव करब कबीरदासकँ एकदम पसिन नहि छलनि। एहि दृष्टिसँदेखल जाए तँ ओ भक्तिकालक महान साम्यवादीछलाह।मानव-मानवमे विभेद उतपन्न करएबला धर्म, अन्धविश्वास वो वाह्य आडंवरक प्रति जतेक कठोर रुखिकबीरदास अपनओलनि ततेक किओ नहि अपना सकल।हुनकर कहब छलनि जे मानव मात्र एकहि ईश्वरक अंशअछि। प्रकृति सभकँ एकरंग वनओने अछि, सभक सोनित एकहि रंग अछि, तखन ई विभेद किएक?

एकै पवन एक ही पानी, करी रसोई न्यारी जानी।

माटी सूँ माटी लै पोती, लागी कहौ कहाँ धूँ छोती।।

कबीरदासकँ जाति विभेद एक्कोरत्ती पसिन नहि छलनि।जन्मभरि ओ पाखंड, सामाजिक अन्याय, जातीय विद्वेष, एवम् आर्थिक शोषणक विरोधमे लड़ैत रहलाह।वाभन, शुद्रक कथे कोन ओ तँ हिन्दू, मुसलमानक विभेदकँ सेहो स्वीकार नहि करैत छलाह।

जौं तूँ वाभन वभनी जाया, तौ आन बाट है क्यो नहि आया।

जौं तूँ तुरक तुरकनी जाया, तौ भीतर खतना क्यो न कराया।।

कबीरदास उपदेशकवा पुजारी नहि छलाह।जीविकाक हेतु वो जुल्हाक धंधा करैत छलाह, जकरा सामाजिक धरातलपर पैघ काज नहि मानल जाइत छलैक।स्वयं कपड़ा बूनब एवम् दोसर हेतु मजूरीकए कपड़ा बूनबामे अन्तर छैक।कबीरदास कोनो मालिकक काज नहि करैत छलाह।ओ गृह उद्योगक स्वाभिमानक रक्षा करैत पेट भरैत छलाह।ओ अपन व्यवसायमे ततेक रमि गेल छलाह जे हुनक काव्यमे सदति ओही प्रकारक वस्तुसभक वर्णन अछि।एवम् प्रकारेण व्वसायजनित प्रतिष्ठाक सेहो हुनका कोनो परवाह नहि छलनि।

ओ सगर्व कहलाहः

जाति जुलाहा मति को धीर, हरषि-हरषि गुण रमै कबीर।

मेरे राम की अभै पद नगरी, कहे कबीर जुलाहा।

तू वाभन मैं कासी का जुलाहा।।

कबीर दास मौलिक विचारक छलाह।धर्मक वास्तविक तात्पर्यकेँ ओ बुझलाह आओर साधारण जनता धरि ओकरेभाषामे तकरा रखलाह।ताहि हेतु हुनका कोनो दुर्गति वाँकी नहि रहलनि।प्राणोक रक्षा कठिन भए गेलनि।परंतु ओ निर्भयतापूर्वक अपन विचारपर अडिग रहलाह। तत्कालीन समाजक किछुशक्तिशाली लोक कबीरदासक प्रवल विरोध कएलक। तैँ कबीरदासकेँ कहए पड़लनिः

कबिरा खड़ा बजारमे, लिआ लकुटि हाथ।

जो घर जारे आपना, धरै हमारे साथ।।

तमाम विरोधक बाबजूद कबीरदास रूकलाह नहि, अपन विचार लए कए आगू बढ़ैत रहलाह एवम् समयक कसौटीपर सही उतरलाह।

भक्त कबीरक ई अनुभव छलनि जे शास्त्र मर्यादाक संग संप्रदाय निष्ठा जुड़ल होइत अछि।शास्त्र एवम् संप्रदायक सीमानमे रहि कए मानव मात्रक हेतु भक्तिक सर्वसुलभ पथ प्रस्तुत नहि कएल जा सकैत अछि।भक्तिपथक दूटा महान अवरोधथिक-शास्त्र एवम् संप्रदाय जे भक्ति भावनाकेँ सरल सहज रहए नहि दैत अछि।कबीर सहजमे आस्था रखैत छलाह। हुनक लगाव कोनो प्रकारकरुढ़ि एवम् अन्ध मर्यादासँ नहि छलनि।अनुभवकक तराजूपर तथ्य एवम् सत्यकेँ परखि कए ग्रहण त्याग करब हुनकर जीवनक्रम छलनि। धार्मिक अन्धविश्वास एवम् ढ़ोंगकेँ ओ प्रवल विरोधी छलाह।

कंकड़ पाथर जोड़ि कए मस्जिद दिओ बनाय।

ता चढ़ि मुल्ला बांग देइ क्या बहिरो भयो खुदाइ।।

संगहि ओ इहो कहलाहः

पाथर पूजे हरि मिले तौँ मैं पूजूँ पहाड़।

तासे तो चक्की भली पिसे खाय संसार।।

प्रखर मानवतावादी कबीर धार्मिक प्रपंचकेँ चुनौती देलाह। निर्भीक एवम् तटस्थ भावसँ ओ समाजमे वढ़ि रहल ढ़ोंगक विरोध केलाह-

यह सब झुठी बंदगी, बिरथा पंच नबाज।

साँचै मारै झुठि पड़ि, काजी करै अकाज।।

करसे तो माला जपै, हिरदै बहै डमडूल।

पग तो पालामे गिरया, भजण लागी सूल।।

जप-तप संजम पूजा अरचा, जोतिग जग बौराना।

कागद लिखि-लिखि जगद भूलाना, मन ही मन न समाना।।

कबीरदास युग निर्माता छलाह। ओ पारंपरिक लीकसँ हटि कए समाजकेँ एकटा क्रांतिक मार्गपर अनलाह।गरीब-धनीक, ब्राह्मण-शूद्र, आदिक बीचमे वर्ग समन्वयक सहज मार्ग प्रस्तुत केलाह।मानवतावादक प्रचार कए धर्मक वास्तविक अर्थकेँ लोक बूझए, तकर प्रयास केलाह।ओ अपन समस्त जीवनकेँ परोपकार एवम् मानव कल्याणमे लगा देलाह।

मानवमात्रक कष्ट निवारणक हेतु ओ चिंतित रहैत छलाह।

सुखिआ सब संसारहै, खाबे **अरु** सोबै।

दुखिआ दास कबीर है, जागे अरु रोबे।।

अस्तु, ई तय अछि जे कबीरदास संत आ कवि तँ छलाहे सभसँ बढ़िकए ओ क्रान्तिकारी छलाह।समस्त समाजमे ओ एकटा नवचेतना आनए चाहैत छलाह।वर्ग विभेदकेँ नष्टकए समाजमे मानवतावादक स्थापनाचाहैत छलाह।ईश्वर एक छथि, मनुक्ख एक अछि, विभेद मानव निर्मित अछि-से हुनकर मंत्रवाक्य छल।

समाजक स्थितितँ तेहने छल जे ईश्वरक केबार किछुए लोक हेतु खुजैत छल।तेहन समाजमे ताल ठोकि अपनविचार कहि देब एवम् ओकरा व्यवहारमे आनब एकटा क्रान्ति नहि तँ की छल?प्रयोजन अछि समाजमे एहने व्यक्तित्वकेँ, जे हमरा लोकनिकेँ वर्तमान सामाजिक अन्त्रद्वंदसँ मुक्ति दए सकए।q

मकर संक्रांति

मकर संक्रान्ति सम्पूर्ण भारत ओ नेपालमे सर्वत्र कोनो-ने-कोनो प्रकारसँ मनाओल जाइत अछि। पौष मासमे जखन सूर्य मकर राशिमे अबैत छथि तखने ई पावनि मनाओल जाइत अछि। प्रतिवर्ष मकर संक्रान्ति १४ वा १५ जनबरीकेँ पड़ैत अछि।

तमिलनाडूमे मकर संक्रान्तिकेँ 'पोंगल' कहल जाइत अछि। कर्नाटक, केरल एवम् आँध्रप्रदेशमे एकरा संक्रान्तिये कहल जाइत अछि। पंजाब आ हरियाणामे 'लोहड़ी' कहल जाइत अछि एवम् एक दिन पहिने अर्थात् १३ जनबरीकेँ मनाओल जाइत अछि। उत्तर प्रदेशमे एकरा मूलत: दानक पावनिक रूपमे मनाओल जाइत अछि। प्रयागमे प्रतिवर्ष १४ जनबरीसँ माघमेला प्रारंभ होइत अछि। माघ मेलाक प्रथम स्नान १४ जनबरीसँ प्रारंभ भए कए अन्तिम स्नान शिवरात्रिकेँ होइत अछि। महाराष्ट्रमे

एहि दिन विवाहित महिला अपन पहिल संक्रान्तिपर तूर-तेल वा नून अन्य सुहागिनकेँ दइ छथि। बंगालमे एहि दिन स्नानक बाद तिल दान करबाक प्रथा अछि।

एहि अवसरपर गंगासागरमे प्रतिवर्ष विशाल मेला लगैत अछि। असममे मकर संक्रान्तिकेँ 'माघ-विहू' अथवा 'भोगाली विहू'क नामसँ जानल जाइत अछि। राजस्थानमे एहि पर्वपर सुहागिन महिला अपन सासुकेँ वियनि दए आशीर्वाद प्राप्त करैत छथि। संगे कोनो सौभाग्य सूचक वस्तुकेँ चौदहक संख्यामे पूजन एवम् संकल्प कए चौदहटा ब्राह्मणकेँ दान दइ छथि।

मकर संक्रान्तिक माध्यमसँ भारतीय सभ्यता एवम् संस्कृतिक विविध रूपमे आभास होइत अछि। एहेन धारणा अछि जे मकर संक्रान्तिक दिन शुद्ध घी एवम् कम्बलक दान केलासँ मोक्षक प्राप्ति होइत अछि।

माघे मासे महादेव: यो दास्पति वृहकम्वलम्

स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते माक्ष प्राप्पति।।

पुराणक अनुसार मकर संक्रान्तिक पर्व व्रह्मा, विष्णु, महेश, गणेश, आधशक्ति आ सूर्यक आराधना एवम् उपासनाक पावन व्रत अछि जे तंत्र-मंत्र-आत्माकेँ शक्ति प्रदान करैत अछि। संत-महर्षि लोकनिक अनुसार एकर प्रभावसँ प्राणीक आत्मा शुद्ध होइत अछि, संकल्प शक्ति बढ़ैत अछि, ज्ञान तंतु विकसित होइत अछि। मकर संक्रान्ति अही चेतनाकेँ विकसित करएबला पावनि अछि। ई सम्पूर्ण भारतमे कोनो-ने-कोनो रूपे मनाओल जाइत अछि।

पुराणक अनुसार मकर संक्रान्तिक दिन सूर्य अपन पुत्र शनिक घर एक मासक हेतु जाइत छथि, कारण मकर राशिक स्वामी शनि छथि। यद्यपि ज्योतिषीय दृष्टिसँ सूर्य आ शनिक ताल-मेल संभव नहि अछि, तथापि एहि दिन सूर्य स्वयं अपन पुत्रक घर जाइत छथि। पुराणमे आजुक दिन पिता पुत्रक सम्बन्धमे निकटताक प्रारंभक रूपमे देखल जाइत अछि।

मकर संक्रान्तिक दिन गंगाकेँ पृथ्वीपर आनएबला भगीरथ अपन पूर्वजक तर्पण केने छलाह। हुनक तर्पण स्वीकार केलाक बाद एही दिन गंगा समुद्रमे मिलि गेल रहथि। तँए एहि दिन गंगा सागरमे मेला लगैत अछि। विष्णु धर्मसूत्रक अनुसार पितरक आत्माक शान्तिक हेतु एवम् अपन स्वास्थवर्द्धन ओ सबहक कल्याणक हेतु तिलक प्रयोग पुण्यदायक एवम् फलदायक होइत अछि। तिल-जलसँ स्नान करब, 'तिल'क दान करब, तिलसँ बनल भोजन, जलमे तिल अर्पण, तिलक आहुति एवम् तिलक उवटन लगाएब।

एहि दिन भगवान विष्णु असुरक अन्त कए युद्ध समाजिक घोषणा केने छलाह। ओ राक्षस सबहक मुड़ीकेँ मंदार पर्वतमे दबा देने रहथि। एतदर्थ एहि दिनकेँ अशुभ एवम् नकारात्मकताकेँ समाप्त करबाक दिनक रूपमे देखल जाइत अछि।

सूर्यक उत्तरायण भेलाबाद देवता लोकनि व्रह्म मुर्हुत उपासनाक पुण्यकाल प्रारंभ होइत अछि। एहि कालकेँ परा-अपरा विधाक प्राप्ति काल कहल जाइत अछि। साधनाक हेतु एकरा सिद्धिकाल सेहो कहल जाइत अछि। एहि समयमे देव प्रतिष्ठा, गृह निर्माण, यज्ञकर्म आदि पवित्र काज कएल जाइत अछि।

रामायण कालसँ भारतीय पत्र-पत्रिकामे दैनिक सूर्योपारायणक प्रचलन अछि। रामचरितमानसमे भगवान राम द्वारा गुड्डी उड़ेबाक कार्यक उल्लेख सेहो अछि। मकर संक्रान्तिक वर्णन वाल्मिकी रामायणमे सेहो भेल अछि।

राजा भगीरथ सूर्यवंशी छलाह। ओ भगीरथ तप-साधनाक द्वारा पापनाशिनी गंगाकेँ पृथ्वीपर आनि अपन पूर्वजक उद्धार केने छलाह। राजा भगीरथ अपन पूर्वजक गंगाजल, अक्षत,तिलसँ श्राद्ध-तर्पण केने छलाह। तहिआसँ मकर संक्रान्तिक स्नान आ मकर संक्रान्तिक श्राद्ध-तर्पणक परंपरा चलि रहल अछि।

कपिल मुनिक आश्रमपर मकर संक्रान्तिक दिन माँ गंगाक पदार्पण भेल छल। पावन गंगाजलक स्पर्श मात्रसँ राजा भगीरथक पूर्वजकेँ स्वर्ग प्राप्ति भेलनि।

कपिल मुनि वरदान दैत बजलाह-

"मातृ गंगे त्रिकाल तक लोक सबहक पापनाश करतीह एवम् भक्तजनक सात पुश्तकेँ मुक्ति एवम् मोक्ष प्रदान करतीह। गंगाजलक स्पर्श, पान, स्नान ओ दर्शन सभ पुण्यदायक फल प्रदान करत।"

सूर्यक सातम किरण भारतवर्षमे आध्यात्मिक उन्नतिक प्रेरणादायी अछि। सातम किरणक प्रभाव भारतवर्षमे गंगा-जमुनाक मध्य अधिक समय तक रहैत अछि। एहि भौगोलिक स्थितिक कारण हरिद्वार आ प्रयागमे माघमेलाक आयोजन होइत अछि। पितृतुल्य भगवान भास्कर दक्षिणायनसँ उत्तरायणमे जाइत काल उर्जामयी प्रकाश पृथ्वीपर वर्षा करैत छथि। अतुल्य शक्ति श्रोत प्रकृति रातिकेँ छोट एवम् दिनकेँ पैघ करए लगैत छथि। पृथ्वीमाता उदरस्थ आनाजकेँ पकबए लगैत छथि। चारू तरफ शुभे-शुभ होइत रहैत अछि। एहेन अद्भुत समयमे मकर संक्रान्तिक पर्व मनाओल जाइत अछि।

सक्रान्तिक दिन पंजाबमे 'लोहड़ी'क नामसँ मनाओल जाइत अछि। पंजाबक अतिरिक्त ई पावनि हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दक्षिणी उत्तर प्रदेश आ जम्मू काश्मीरमे सेहो धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि। पारंपरिक तौरपर 'लोहड़ी' फसलक रोपनी आ ओकर कटनीसँ जुड़ल एक विशेष पावनि अछि। एहि दिन बॉनफायर जकाँ आगिक ओलाव जरा कए ओकर चारूकात नृत्य कएल जाइत अछि। बालक सभ भांगड़ा, वालिका सभ गिद्धा नृत्य करैत छथि। लोहड़ीक आलावक आसपास लोक एकट्ठा भए दुल्ला-भट्टी प्रशंसामे गायन करैत छथि।

केतेको गोटेक मान्यता अछि जे 'लोहड़ी' शब्द लोई (सत कबीरक पत्नी) सँ उत्पन्न भेल मुदा अनेक लोक एकरा तिलोड़ीसँ उत्पन्न मानै छथि, जे बादमे लोहाड़ी भए गेल।

लोहड़ीक ऐतिहासिक सन्दर्भ सुन्दरी-मुंदरी नामक दूटा अनाथ कन्या छली। ओकर काका ओकर विवाह नहि करए चाहैत छल अपितु ओकरा राजाकेँ भेँट कए देबए चाहैत छल। ओही समयमे हुल्ला भट्टी नामक एकटा उफाँइट छौड़ाकेँ नीकठाम बिआह कए देलक। वएह उफाँइट वरपक्षकेँ बिआहक हेतु मनाओलक आ जंगलमे आगि जरा कए दुनू कन्याँक बिआह करओलक। कहल जाइत अछि जे दुल्ला शगुनक रूपमे गुड़ देलक। भावार्थ जे उफाँइट होइतो दुल्ला भट्टी निर्धन वालिका सबहक कन्याँदान केलक एवम् ओकरा अपन कक्काक अत्याचारसँ बँचओलक।

लोहड़ीक दिन बच्चा सभ दुल्ला भट्टीक सम्मानमे गीत गबैत घरे-घर घुमैत अछि। बच्चा सभकेँ मिठाइ एवम् अन्य वस्तु सभ दैत अछि। जँ कोनो परिवारमे कोनो खास अवसर जेना बच्चाक जन्म, विवाह आदि अछि तँ लोहड़ी आर धूम-धामसँ मनाओल जाइत अछि। सरिसवक साग आ मकईक रोटी खास कए एहि अवसरपर बनाओल जाइत अछि।

तामिलनाडूमे एहि समय 'पोंगल' मनाओल जाइत अछि। प्रचूर मात्रामे अन्नक उपजापर भगवान सूर्यकेँ धन्यवाद ज्ञापन हेतु पावनिक आयोजन कएल जाइत अछि। तामिलनाडूक अलावा पुडुचेड़ी, श्रीलंका, विश्व भरिमे पसरल तमिल लोकनि एकरा मनबैत छथि। ओइ पोंगलमे चारि दिन तक माने १४ सँ १६ जनवरी तक मनाओल जाइत अछि।

इन्द्र देवताक सम्मानमे पहिल दिन भोगी उत्सव मनाओल जाइत अछि। पोंगल दोसर दिन माटिक वर्तनमे दूधमे चाउर पका कए खीर भगवान सूर्यकेँ आन-आन वस्तु संगे चढाओल जाइत अछि। एहि अवसरपर घरक आगूमे कोलम (अपना ओइठामक अरिपन जकाँ) बनाओल जाइत अछि। पोंगलक तेसर दिन मट्टू पोंगल कहल जाइत अछि। एहि दिन गायकेँ नाना प्रकारसँ सजा कए ओकरा पोंगल खुआएल जाइत अछि। चारिम दिन कन्तुम पोंगल कहल जाइत अछि। घरक महिला सभ स्नानसँ पूर्व हरदिक पातपर मिठाइ, चाउर, कुसियार हरदि आदि राखि कए अपन भाय लोकनिक कल्याण कामना करैत छथि।

भाइक हेतु हरदि, चून, चाउरक पानिसँ आरती करैत छथि आ ई पानि घरक आगूमे बनल कोलमपर छिड़कि देल जाइत अछि।

जल्लीकट्टू मट्टू पोंगल दिन पोंगल पर्वक एक हिस्साक रूपमे खेलल जाइत अछि। एहि लेल ग्रामीण सभ पहिनेसँ साँढ़कँ खुआ-पिआ कए तैयार केने रहैत छथि। एहिमे मूलत: केतेको गामक मन्दिरक साँढ़ (कोविल कालइ-तमिल नाम) भाग लैत अछि। जल्लीकट्टूक तीन अंग होइत अछि : वाटि मन्जू विराट्टू, वेली विराट्टू आ वाटम गन्जु विराट्टू। वाटि मन्जु विराट्टूमे साँढ़कँ जे व्यक्ति किछु दूरीपर किछु समय तक रोकि लइ छथि, से विजेता होइ छथि। वेली विराट्टूमे साँढ़कँ खाली मैदानमे छोड़ि देल जाइत अछि आ लोक ओकरा नियंत्रणमे करबाक प्रयास करैत अछि। वाटम मन्जुविराट्टूमे साँढ़कँ नमगर रस्सीसँ बान्हि देल जाइत अछि, आ खिलाड़ी सभ ओकरा नियंत्रित करबाक प्रयास करैत छथि।

सम्पूर्ण देश जकाँ मिथिलांचलमे सेहो मकर संक्रान्तिक पर्व मनाओल जाइत अछि। गाम-घरमे एकरा तिला संक्रांति सेहो कहल जाइत अछि। अंग्रेजी नया सालक ई पहिल पावनि होइत अछि। लोकक घरमे नव अन्न भेल रहैत अछि। पहिनहिसँ लोक चूड़ा कुटा कए एहि पावनिक तैयारी केने रहैए। अपना एहिठाम माघ मासकँ अत्यन्त पवित्र मास मानल जाइत अछि। बूढ़-बूढ़ महिला सभ भोरे-भोर जाड़-ठाढ़कँ बिसरैत पोखरिमे डुबकी लगबै छथि। गाममे कएटा मसोमात, वृद्धा सभकँ थर-थर कँपैत स्नान करैत देखैत छलिएनि। सभसँ मनोरंजक दृश्य तँ तखन होइत छल, जखन ओ सभ महादेवक माथपर जल ढाड़ैतकाल गाम-घरक सभटा झगड़ा सोझराबएमे लागल रहैत छली। जानह हे महादेव! हमरा पेटमे किछु नहि अछि। हमर मोन गंगासन निर्मल अछि मुदा एहेन अत्याचारक निपटान तूँहीं करियह।

..पता नहि, महादेव सुनितो छलखिन की नहि। मुदा हमरा ई सभ सुनि कए जरूर वकोर लागल रहैत छल।

बच्चामे पावनि सभ अद्भुत आनन्दक विषय रहैत छल। सभसँ सरल ओ आनन्ददायी होइत छल तिला संक्रांति। भोरे-भोर पोखरिमे जा कए डुबकी लगाउ। माइक हाथे तिल-चाउर खाउ। तिल-चाउर खुअबति काल माए पुछथि-

"तिले-तिले बहब की नहि?"

ताहिपर कहिअनि-

"खूब बहब।"

विध समाप्त। तकरबाद चुरलाइ, तिलबा इत्यादि भरि मोन खाउ...।

कएक दिन पहिनहिसँ चुरलाइ, तिलबा (तिललाइ) आ लाइ (मुरहीक लाइ) बनेबाक कार्यक्रम प्रारंभ भए जाइत छल। घरक वातावरण चुरलाइक सुगन्धसँ परिपूर्ण। एहि पावनिमे सभसँ विशेषता ई अछि पावनिक सामग्री बनि गेल तँ ओकरा लेल बेसी प्रतीक्षा नहि करए पड़ैत अछि। दिनमे ब्राह्मण भोजन होइत छल। ब्राह्मण कियो आसे-पासक लोक होइत छलाह,कारण भरि गाममे भोजे रहैत छल। बट्टा भरि-भरि घी खिचड़िमे देल जाइत। संगे तरह-तरह केर पकवान सभ सेहो रहैत छल।

हमरा गाममे किछु गोटे ओइठाम तिला संक्रान्तिमे जिलेबी बनैत छल। भोजमे खिचड़िक संग जिलेबी खेबाक बच्चा सभकँ अद्भुत उत्साह रहैत छल। खिचड़िमे ततेक प्रचूर मात्रामे घी रहैत छल जे भोजनक बाद हाथ साफ-साफ धोनाइ कठिन। पावनिक कएक दिन बादो धरि चूरालाइ आ तिलबाक आनन्द भेटैत रहैत छल।

एहि पावनिमे चूड़ा, दही, खेबाक सेहो परंपरा अछि। चूरा-दहीक वर्णन करैत खट्टर कका कहलखिन जे जखन पातपर चूड़ाक संग आम, धात्रीक अँचार ओ तरकारी परसल जाइत अछि तँ बुझू जे अन्हरिया आबि गेल। तकर बाद जखन दही

परसाएल तँ बुझू जे इजोरिया। जेना पातपर चन्द्रमा उतरि गेलाह। ऊपरसँ जँ मधुर राखि देल जाए ओ कौर पेटमे गेल तँ पुछू नहि। पुरा सोनित ठण्ढा जाइत अछि आ आत्मा तृप्त भए जाइत अछि।

मिथिलांचलमे एहि पर्वकेँ मनेबाक अद्भुत परंपरा अछि। चुरलाइ खाउ, चुरा-दही खाउ, खिचड़ि खाउ, जे खाउ, जखन खाउ...।

वस्तुत: ई आनन्दक पर्व थिक जे कोनो-ने-कोनो रूपे सम्पूर्ण भारतपवर्षमे मनाओल जाइत अछि। सूर्यक तेजक मकर संक्रान्तिसँ जहिना बढ़ैत रहैत अछि, तहिना सभ लोक-वेदक सुख बढ़ैत रहए, सएह एहि पावनिक ध्येय थिक।

रबीन्द्र नारयण मिश्रक

दूटा लघुकथा

पढ़ू पूत चण्डी

समय एक गतिसँ आगा बढ़ल जा रहल अछि। मुदा हम-अहाँ ओकर प्रवाहमे कहि नहि कतए पहुँचि जाइत छी। जेना कोनो तेज धारमे छोट-मोट कतेको वस्तु स्वत: दहाइत कहाँ-सँ-कहाँ पहुँचि जाइत अछि, वएह हाल एहि जिनगीक अछि।

“अहाँ की केलहुँ? घूरतर बैसल प्राय: नित्य साँझमे गामक कैटा बूढ़सभ आपसमे चर्चा करैत छलाह।”

क्यो किछु, क्यो किछु कहैत। गप्प-सप्प बिबादक रुप धरैत आ अन्ततोगत्वा कहिओ काल झंझटोक संभावना भए जाइत। सभसँ ढीठ ओ दबंग ठीठरकका पहलमान वो अपढ़ छलाह आ ओहि घूरक महफिलमे डंकाक चोटपर कहितथि-

“पढ़ू पूत चण्डी जासे चले हण्डी।”

सद्य: लाभमे पूर्ण आस्था छलनि। भोरमे बच्चा महिष चरौलक आ साँझमे एक डाबा गरम-गरम दूध। एहिसँ नीक शास्त्र की भए सकैत छल? सभ पढ़ाइ-लिखाइ व्यर्थ। कहिआ पढ़त आ कहिआ कमाएत..? मुदा, ओहीठाम हीरा कक्काक स्वर एकदम दोसर रंग छल। धिया-पुता पढ़त तँ विचारवान होएत आ सुखी रहत।

गाममे ओहि घूरक चर्चा चर्चित छल। दूनू गोटासँ साँझमे जँ बैसितथि तँ अपन-अपन दर्शनक अनुसार जरूर बजितथि आ परिणाममे विवाद होइत।

ठीठरकका दबंग ओ लठैत छलाह। जबरदस्त खेती-पथारी रहनि। धिया-पुता सभ बेस मोट-सोंट आ लंठ। सभ खेतीमे लागल रहैत छल। परिवार सुखी छल। हुनका तुलनामे हीरा कक्काक हालत पातर छल। धिया-पुता सभ स्कूल-कॉलेजमे पढ़ि रहल छल। खेती-पथारी कोनो खास नहि। तँ कखनो काल ठीठर कक्काक कथन ठीक बुझाइत छलनि। मुदा दूनू गोटे अपन-अपन विचारपर दृढ़ छलाह।

हीरा ककाकेँ अपन धिया-पुताक बड़ आशा छलनि। आ तँ अपन सम्पूर्ण शक्तिसँ धिया-पुताकेँ शिक्षा व्यवस्थामे लागल रहैत छलाह।

समय बितैत गेल आ हुनकर सभ नेना सभ पढ़ि-लिखि यथायोग्य नीक-नीक स्थानपर पहुँचलाह। ओमहर ठीठरक गृहस्ती दिन-प्रति-दिन गड़बड़ाइत गेल। वृद्धावस्थाक जोर पकड़ितहि पुत्र सभ आपसमे लड़ैत रहैत छलाह। बात बिगड़ैत देखि वो सभकेँ फराक-फराक कए देलखिन। जमीन-जथा बँटि गेल।

बीस बर्खक बाद आइ ने हीरा बाबू छथि आ ने ठीठरकका। मुदा सुनबामे बहुत किछु आएल। ठीठरकका बड़ कष्टमे मरि गेलाह। बेटा सभ खेत-पथार बेचि लेलक आ पेट पोसबाक हेतु गामसँ पड़ा गेल। हीरा बाबू सेहो सुखी नहि भए सकलाह। धिया-पुता सभ पढ़लक-लिखलक जरूर मुदा सभ अपनामे व्यस्त। ककरो बूढ़ाक व्यथापर सोचबाक समय, इच्छा ओ सामर्थ्य नहि भेलैक। क्यो कलकत्ता तँ क्यो बंबई। पाँचो बेटा पाँचटा शहर धेने छलाह। सुनबामे ईहो आएल जे मझिला बेटा लखनउमे मकान बना लेलक अछि। हीरा बाबू ओहिना एसगर टकटक तकैत बिदा भए गेलाह।

ओहि स्कूलमे मौलाना-जोलहाक बेटा सेहो हमरा सभहक संगे पढ़ैत छल। पढ़एमे सामान्य छल मुदा अत्यन्त सज्जन वो संवेदनशील। कै दिन गामसँ स्कूल जाइत काल वो भेटि जाइत। मुदा वो स्कूल नियमित नहि जाइत छल। कै दिन बाधमे ओकरा हम सभ हर जोतैत देखियैक। हँसियो लागय आ दुखो भए जाए। कहिओ काल ओकर पिता सेहो भेटि जाइत, एकटा आग्रहक संग-

“बौआ, माहटर साहेब बाबूसँ कहि देबै जे हमर बचबा आज नै जाएत।”

पुछिऐक-

"किए?"

तकर जवाबमे पनपिआइ गमछामे बन्हने हर जेतइत अपन बेटा दिसि इसारा करैत।

कै दिन हमरा संगे वो स्कूल जाइत। रस्तामे भेँट भए जाइत छल। गमछामे पाँच-छहटा किताब ओ किछु कॉपी बन्हने हमरा देखैत घरेसँ आबाज दैत-

"हमहँ चलब। ठाढ़े रहब।"

आबाज सुनि कए हम-सभ पाकरी गाछक तरमे सुस्ताए लगैत छलहुँ। स्कूल पहुँचि सभसँ पछिलका सीटपर वो बैसि जाइत छल। आ कै दिन तँ सभ घण्टीमे मारि खाइत रहैत छल। बिना कोनो आक्रोश आ प्रतिकृयाक कै दिन कहितिऐक-

"एना मारि किएक खाइत रहैत छह! नीकसँ पढ़ाइ करह।"

मुदा वो हमर-सभहक बात सुनि किछु-किछु अकाट्य तर्क दए दैत छल।

बहुत दिनक बाद ओकरा एक दिन चौकपर रिक्सा लगौने देखलियैक। हमरा देखि ओकरा उत्साह भेलैक। प्राय: ओकरा भेलैक जे ई यात्रीपर ओकरा बिशेष अधिकार छैक। एक बेर हमरा मोन भेल जे ओही रिक्सासँ चली मुदा आत्मा सिहरि गेल। हमर वो सहपाठी रिक्सा चलाओत आ हम ओहिपर बैसल रहब। आ हम कात भए गेल रही। किछुए कालक बाद ओकर बूढ़ पिता एक गट्ठर कपड़ा लेने आएल। प्राय: हमरा नहि चिन्हि सकल। ओहि रिक्सापर गट्ठर राखि बाप-बेटा मिलि कए बीड़ी पीबए लागल। समयक एतेक अन्तरालक बादो बाप-बेटाक स्नेह बनल छल। हमरे सभहक संगे किछु वरिष्ठ विद्यार्थी सभ सेहो स्कूल जाइत छलाह। जाहिमे सँ कै गोटा मैट्रिकमे चारि-पाँच बेर फेल कए क्रान्तिकारी भए गेल छलाह। गाममे छोटका लोक सभकेँ संगठित कएक ओ सभ महा उपद्रव ठाढ़ कए देने छल। कैटा पैघ गृहस्थक हर-जन बन्द भए गेल छल। पनिभरनी सभ आँगनमे काज नहि करत आ भरिआ भार लए कए नहि जाएत। जकर घर जाहि जमीनपर छैक से तकर हेतैक। ई हेतै वो हेतै आ भए कए रहतै। दिन राति गाममे घोल-फचक्का होइत रहैत...।

सभसँ बड़का आफद बड़का मालिककेँ भेल रहनि। वो एकदम चिंतित भए गेल रहथि। दिन-राति हुनका ओहिठाम भण्डारा चलैत रहैत छल। इलाकाक पहलमान ओ लंठक जमघट रहैत छल।

समय बीतलाक संग-संग वो क्रान्तिकारी सभ शान्त भए गेलाह। अधिकांश कतहुँ-कतहुँ चाकरी कए रहल छलाह आ एकाधटा अकाल मृत्युक सेहो शिकार भए गेलाह।

बड़ीकाल बैसल इएह सभ सोचैत रही कि दिनेश भाए भेट भए गेलाह। ओ हीरा बाबूक जेठ भातिज छलाह आ अंतकालमे वएह बेचारेक सेवा केने रहथि। हीरा बाबूक छोट पुत्र टुना हमर सहपाठी छलाह। हुनके प्रति गप्प होमए लागल। कहलाह जे वो तँ बहुत दिनसँ लंदनमे रहैत अछि। बड़का हाकिम भए गेल अछि आ बहुत रास पैसा कमाइत अछि। मुदा कै बर्खसँ गाम नहि आएल अछि।

पुछलियनि-

“हीराबाबूक काजमे आएल रहथि की नहि?”

“नहि आएल रहथि।”

छगुन्तामे पड़ि गेलहुँ। पुछलऐक- “किएक?”

“कहि नहि!मुदा मृत्युसँ दू-तीन बर्ख पूर्व आएल छलाह। गाम डोलि गेल रहए। जाइत काल बहुत रास टाका पिताकेँ दैत रहथिन मुदा ओ नहि लेलखिन।”

बिच्चेमे चौंकैत पुछल-

“कारण?”

“कहाँ दनि कहलखिन जे ई पैसा अहीं राखू। काज आओत। जाहि पैसाक कारण अहाँ एतेक दूर चलि गेलहुँ, गाम-घर,माए-बाप ओ सभ किछु त्याग कए देलहुँ ताहि पैसाकेँ व्यर्थ हमरापर किएक नष्ट कए रहल छी। टुना तहिआसँ घुरि कए गाम नहि अएलाह।”

“मुदा ठीठर ककाकेँ की भेल?”

"की कहूँ!सभ बेटा घर छोड़ि पड़ा गेल। करबो की करितैक। गामपर किछु नहि बाँचल रहैक। असगर ठीठर कका काहि कटैत रहैत छलाह। जेठकी पुतोहु थोड़-बहुत सेवा कए दैत छलखिन।"

एक बेर फेर ठीठर कका भीमकाय ओ हुनक आप्त वाक्य मोन पड़ि गेल-

"पढ़ू पूत चण्डी, जा से चलए हण्डी।"

शरीरमे बड़ थाकान बुझि पड़ैत छल, कहि नहि कखन नीन्न आबि गेल।

मुख्यमंत्रीक स्वप्न

"की करी किछु फुरा नहि रहल अछि..! प्रेसबला सभ पाछू पड़ि गेल अछि। जतए जाउ ओतहि ई सभ पहुँचि जाएत।" मुख्यमंत्रीजी बाजि उठलाह। पुन: अपन प्रेस सचिवकेँ बजौलखिन-

"मिस्टर सिंह। अहाँ एकटा विज्ञप्ति अखबारमे प्रकाशित करबा दियौक जे प्रेसक आदमी मुख्यमंत्रीसँ सम्बन्धित ओही समाचारकेँ प्रकाशित कराबथि जे हुनकर सरकारी कारोबारसँ सम्बद्ध होइक आ जकरा छापब जनताक हेतु नितान्त आवश्यक होइक। संगहि ईहो समाचार प्रकाशित करबाओल जाए जे हमर व्यक्तिगत कृया कलाप छापए बला समाचार पत्र ओ सभ व्यक्तिक विरूद्ध कार्रवाई कएल जाएत।"

उत्तरमे प्रेस सचिव बाजि उठलाह-

"ठीक सर। प्रेस बला सभकेँ कहि नहि की भए गेल छैक? एकरा सभकेँ सबक सीखेनाइ बेस जरूरी थिक। हम आइए ई विज्ञप्ति प्रकाशित करबा दैत छियैक।"

"हद भए गेल!कहि नहि, प्रेसबला सभकेँ की भए गेलैक अछि।"

अहीं कहू अपना सभमे बलिदान देबाक तँ पुरान प्रथा छैक आ ताहि बातकेँ लए कए प्रेसबला सभ छापि देलकै अछि आ सौंसे देशमे हरविर्ड़ो मचि गेल। जे तिवारीजी अपन कुर्सी बचएबाक हेतु छागरक सोनितसँ स्नान कएलनि अछि। लगैत अछि जे प्रेसबला सभकेँ सबक सीखबहि पड़त। मुदा कोना? काल्हि एहि विषयपर बिस्तारसँ विचार-विमर्श कएल जएतैक।

"मैडम। प्रेस विल तँ अहींक आज्ञासँ लगाओल गेल।"

मुदा जाहि तरहक विरोध एकर भए रहल अछि से तँ अप्रत्याशित अछि। लगैत अछि हमरा नव मुख्यमंत्रीक नियुक्ति करहि पड़त।"

"हम तँ अहाँक शरणमे सदिखन रहलहुँ अछि। कही तँ एहि विलकेँ आपस लए ली?"

"एकर बादो हम ई आश्वासन नहि दए सकैत छी। फेर गप्प कएल जेतैक।"

-क्यो महिला स्वर एतबा कहि कए टेलीफोन काटि देने छल। एकर बादे माननीय भूतपूर्व मुख्यमंत्रीजीक निन्न उपटि गेलनि। सभटा बीतल गप्प सीनेमाक रील जकाँ सपनामे देखार भए रहल छलनि। असलमे हुनकर कुर्सीसँ हटब एकटा तेहन मार्मिक प्रसंग छल जे हुनका निरंतर ओझरौने रहैत छल।

ओना जहिआसँ ओ मुख्यमंत्री भेलाह तहिएसँ हुनका भयावह स्वप्न सभ आबए लागल छलनि। विपक्षी दलक नाकेबन्दी मजबूत भए गेल छलनि आ सत्तादलमे सेहो कै गूट भए गेल छल मुदा साहसक बले ओ आगा बढ़ैत जाइत छलाह। अकस्मात गाड़ीक पहिया धसैत देखलनि तँ वो ओकरा उखारबाक कोनो कम प्रयास केलनि से बात नहि, मुदा भावी प्रवल। कर्णोक रथ तँ एहिना धसि गेल रहनि। बेस संक्रमण कालमे ओ जहाँ ने आगू बढ़लाह कि रथक पहिआ धसए लागल। ठीक एकदम वएह हाल माननीय भूतपूर्व मुख्यमंत्रीजीकेँ भेलनि।

भए सकैए जे हमर गप्प अहाँकेँ तीत लगैत हो। अपने लोकनि भावुक नहि होइ। माननीय भू.पू. मुख्यमंत्रीजी कुर्सी बचएबाक हेतु कोन कुकर्म छोड़लाह?

कहबी छैक जे ने दौड़ चली ने ठेसि खसी। मुदा मुख्यमंत्रीजीकेँ ई गप्प के बुझेतनि। ओहि दिन अखबार पढ़ैत छलियैक तँ एकटा बेस नमगर अपील पढ़लहुँ। धूर्तताक चरम सीमा छल। मैथिलीमे समाचार पत्र निकालताह।

यौ महामहोपाध्यायजी। अपनेकेँ ई बुद्धि किछु दिन पूर्व किएक नहि भेल? की अहाँ जनताकेँ ओतेक मुर्ख बुझि रहल छियैक जे अहाँ ओकरा भुतिएने फिरिऐक। एकदम नहि। आब जमाना बदललै। खैर! देर अएलहुँ दुरुस्त अएलहुँ। मुदा ई तँ कहू जे ओहि समाचार पत्रमे की की खबरि छपतैक? मुख्यमंत्री पदक पुन: प्राप्तिक हेतु जँ अहाँ कोनो यज्ञ करबैक तँ ओकरा प्रमुखतासँ छपबैक वा नहि? आशा अछि जे एहि बेर ओ समाचार मैथिलीमे प्रकाशित समाचार पत्रक मुख्य पृष्ठपर अपने छापब।

ओहि दिन गाममे बैसार रहैक। नवतुरिआ सभ मैथिलीक प्रचार-प्रसारक हेतु बेस आन्दोलन केने छलाह। माननीय भू.पू. मुख्यमंत्रीजी प्रमुख वक्ता छलाह। वो बाजक लेल ठाढ़े छलाह कि क्यो दौड़ल आएल। कहलक-

“दिल्लीसँ फोन आएल अछि।”

ओ मंचपरसँ धड़फड़ाइत उतरए लगलाह ओ एही क्रममे लूढ़कियो गेलाह। फेर वएह नारी स्वर। फेर वएह हतप्रभ भू.पू. मुख्यमंत्री...।

एमहर बैसारीमे हल्ला छलैकजे भू.पू. मुख्यमंत्रीजी किछु महत्वपूर्ण घोषणा करताह। सम्भवत: ओहि अप्रत्याशित फोनक कारणसँ बैसारक कर्यवाहीपर गम्भीर प्रभाव पड़ल आ बैसार साधारण भाषणक बाद स्थगित भए गेल।

ओहि दिनुका बैसारक बाद भू.पू. मुख्यमंत्रीजी बहुत दिन धरि चुप रहलाह। पछिला महिना मुख्य पृष्ठपर समाचार छपल छल। ओकर किछु महत्वपूर्ण अंश प्रस्तुत अछि-

<u>दिनांक २ मई सन् १९७६</u>

आइ मुकुल पटना अएलाह। परम सन्तोष अछि जे हम हुनका प्रशन्न कए सकलहुँ। ओना हमर प्रतिद्वन्दी लोकनि हमरापर लागल छथि मुदा जाधरि मुकुल हमरापर नहि विगरताह ताधरि क्यो किछु नहि कए सकैत छथि। तेँ हुनका प्रशन्न करबाक हेतु जान लगा दी।

<u>दिनांक १२ सिदम्बर १९८१</u>

मैथिलीक अधिकार हेतु किछु मैथिल आएल छलाह। आखिर मैथिलीक की महत्व अछि? हमरा ई सभ तँ एकदम नीक नहि लगैत अछि, मुदा कएल की जाए। व्यक्तिगत हमरा मैथिल, मैथिलीसँ कोनो लगाव नहि अछि। हँ, जँ क्यो अपन सम्बन्धी होथि वा दोस्त-महिम होथि तँ तिनका नीक-सँ-नीक पद दिआबी आ मदतिओ करी। मैथिली, मैथिली चिचिएलासँ की होएत?

१४ अक्टुबर १९८२

बिहार बेस विवादास्पद राज्य अछि। मोन तँ होइए जे एहि पदकेँ छोड़ि जा कए आराम करी, वा पुन: अपन पहिलुका पेशामे लागि जाइ। मुदा एतेक आमदनी छैक एहि काजमे जे अन्यथा सातो जन्ममे नहि भए सकैत अछि। प्रेसबला सभ पाछू पड़ि गेल अछि। की करी बुझा नहि रहल अछि?

१ जनवरी १९८४

देखा चाही नव बर्ख की की रंग लबैत अछि। मुख्यमंत्री पदसँ हटलाक बाद तीव्र वैराग्य भए रहल अछि। खने मोन करैत अछि जे राजनीतिसँ सन्यास लए ली। खने मन करैत अछि जे 'युद्वाय कृत निश्चय'क पुनरावृत्ति कए दी। एकटा उपाय सुझि रहल अछि। मैथिलीक प्रचारमे पदयात्रा किछु सज्जन चला रहल छथि। हुनके संग धरी। गामे-गाम मैथिलीक नामे हमरो प्रचार भइए जाएत। सुनबामे आएल अछि जे दड़िभंगा लग एकटा बड़ सिद्ध तांत्रिक छथि। हुनकोसँ किछु परामर्श करब। आगा जगदम्बाक ईच्छा।

कैदिनसँ थाकल-झमारल भू.पू. मुख्यमंत्रीजी ओहि दिन दुपहरियामे कनेके आँखि मुनने छलाह कि सपनाए लगलाह। साक्षात् महिषासुर मर्दिनी कत्ता लए घुमि रहल छलीह। शत्रुक संहार करैत छलीह। नवका मुख्यमंत्रीक नाशक हेतु षडयंत्र जोर-सोरसँ चलि रहल छल। जतहि देखू ततहि भू.पू. मुख्यमंत्रीजीक स्वागतमे स्वागतद्वार सभ बनल छल। मैथिलीक प्रचार खूब भेलैक। भू.पू. मुख्यमंत्रीजीक नामक नगारा चारूकात बाजि रहल अछि। चुनाव घोषणा भए गेलैक। बड़का-बड़का उद्योगपति सभ अपन भविष्यक आशापर पर्याप्त चन्दा दए रहल छथि।

एहि सबहक परिणामो बहरेलैक आ हम पुनश्च मुख्यमंत्री भए गेलहुँ। सपथ ग्रहण समारोहमे किछु मैथिल सभ उपद्रव करए चाहैत छलाह कि पुलिस लाठीचार्ज कए देलक...।

एतबहिमे भू.पू. मुख्यमंत्रीजी सपनेमे गरजए लगलाह कि हुनक नीन्न खुजि गेल। उठलाह तँ वएह रामा वएह खटोला। पुनर्मुषिकोभव।

¦

१६ अगस्त १९८४

रबीन्द्र नारायण मिश्रक

नमस्तस्यै

आगाँ...

३५.

जाबे अरुणओ एडली लन्दनमे पढ़ाइ-लिखाइ करैत रहए ताबे दुनू गोटे दू देह आओर एक आत्मा छल। अरुण सोचैक तँ एडली बजैक। एडली सोचैक तँ अरुण बजैक। दुनूक दोस्ती से परमान चढ़ल जे दोसर सभकेँ इर्ष्या होमए लगलैक। क्यो-क्यो चौल करैक जे ई दुनू कहीं आपसेमे ने बिआह कए लिअए। जाधरि ओ सभ संगे रहल दिन रातिक कोनो पता नहि चलैक। दुनू संगे पढ़ए, संगे टहलए आओर संगे खाए यद्यपि दुनूकेँ छात्रावासमे अलग-अलग कोठरी रहैक मुदा बेसी काल दुनू एक्केठाम रहए। प्रेमक पराकाष्ठा कहल जाए तँ हर्ज नहि।

मुदा एकर सभक प्रेमक बीचमे आबि गेलैक एंगल। एंगल एडलीक मित्र छलैक। ओ एडलीक शिक्षको रहैक। मुदा ताहिसँ की? पाश्चात्य संस्कृतिमे ई सभ चलैत छल। अरुणक एडलीक संग घनिष्टताक कारण एंगलक अरुणो लग उठब बैसब होइते छल। देखए सुनएमे अरुण आकर्षक छलहे संगहि ओकर प्रतिभाक चर्च सगरे कालेजमे छल।

एक दिन एडली ओ एंगल पिकनिक मनाबए लन्दनक लगीचक झील जा रहल छल। एंगल कहलकै जे अरुणोकेँ संग कए लेल जाए। एडली ई प्रस्ताव अरुण लग रखलक तँ ओ सहर्ष तैयार भए गेल। तीनू झीलक कातमे बैसल छल। जाड़क समयमे हल्लुक रौद ओकरा सभपर पड़ि रहल छल। झीलक चारूकात अर्द्धनग्न जोड़ी सभ अपना-आपमे मस्त छल। क्यो ककरो देखत से होश नहि रहए।

एहन मनमोहक ओ उत्तेजक वातावरणमे एडली, एंगल ओ अरुण एक दोसरकेँ देखि रहल छल। एंगलकेँ की फुरेलैक जे ओ अरुणकेँ हाथ धए खिचलक आओर चलैत गेल। एडली देखिते रहि गेल। तहिआसँ अरुणक एंगलसँ आकर्षण बढ़िते गेल। साँझमे एडली, एंगलमे कहा-सुनी भेलैक। मुदा एंगल अपन जिद्दपर अड़ि गेलैक। ओ

अरुणक प्रति अपन आकर्षणक आगू किछु नहि सोचि सकल। एडली ओकर पुरान दोस्त रहैक, मुदा सेहो पाछु रहि गेलैक। एडली बाजी हारि चुकल छल।

एडली बुधियार छल। ओ बातकेँ बतंगर बनबएमे विश्वास नहि करैत छल। अस्तु स्थितिसँ समझौता करैत ओ अरुणसँ अपन मित्रता बनओने रहल। एंगलसँ विचार करएमे सेहो कोनो लाभ नहि छलैक। तँ सभ चुपचाप सहि गेल। तकर लाभ ओकरा भेलैक। गाहे-बगाहे एंगल ओकरो ध्यान रखैत रहल। एवम् प्रकारेण अरुण, एडली आओर एंगलक तिकड़ी बनि गेल, ताबे ओहिना रहल जाबे अरुण लन्दनमे रहए।

अरुण प्रशासकीय सेवामे उत्तीर्ण भए गेल छल। तकर बाद ओकरा अपन देश आपस अयबाक रहैक। एंगल संगहि जयबाक हेतु जिद्द कए देलकै। एडली सेहो एहि हेतु अरुणकेँ बुझओलक। अन्तगोगत्वा अरुण ओ एंगल संगहि दड़िभंगा आएल। एडली ओतहि रहि गेल।

q

३६.

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार दड़िभंगामे प्रगतिशील जागरण मंच ओ जनजागरण मंचक राष्ट्रीय कार्यकारिणीक सम्मेलन बजाओल गेल। देश भरिसँ ज्ञात-अज्ञात करीब पाँचसए प्रतिनिधिभाग लए रहल छलाह। दड़िभंगाक राज मैदान टेंटक शहर बनि गेल छल। कतहु लाल, कतहु हरिअर झंडा फहरा रहल छल। राष्ट्रभक्तिसँ भरल ओजस्वी गीत सभ बजाओल जा रहल छल। एहि वातावरणमे रहि-रहि कए तरह-तरहक सूचना प्रसारित भए रहल छल।

जनाधार पार्टीक सेहो आमंत्रित कएल गेल छल। परन्तु ओ सभ एहिमे भाग ली, नहि ली से दुबिधामे रहि गेलाह। स्वतंत्रताक लड़ाइ एकजुट भए लड़ब ई तँ नीक बात रहैक, मुदा नेतुत्वक समस्या ओझड़ाएल रहैक। अन्ततोगत्वा तय भेल जे ओ सभ फिलहाल यथावतक स्थितिमे रहत। माने अपन अलग आस्तित्व बनओने रहत। मुदा जनाधार पार्टीक नव निर्वाचित मुखिआ चेतन व्यक्तिगत स्तरपर आएल छल। ओकरा संगे दू-चारि गोटे आओर आबि गेल रहए।

कार्यक्रम प्रारम्भ होइते बंदे मातरम्-क नारासँ धरतीसँ आकाश एक भए गेल। सभ एक स्वरसँ "सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम्" गबैत गबैत भाव विभार भए गेल। तकर बाद राजकुमार विस्तारसँ राष्ट्रीय परिदृष्यक वर्णन करैत दुनू मंचक अंदरुनी स्थितिक चर्चा केलाह आओर घोषणा केलाह जे आइसँ दुनू मंचक विलय भय गेल अछि। आब एहि मंचक नाम राष्ट्रवादी दल रहत।

एतबे बात ओ कहने छल कि उमा अपन संगे १५-२० टा महिलाक संगे नारा लगबैत मंच धरि पहुँच गेलि। हुनका सभक हाथमे पट्ट छल जाहिपर मोट-मोट आखरमे लिखल छल-

"स्त्रीक सम्मान बिना स्वतंत्रताक गप्प निरर्थक थिक।"

उमाकेँ एहि तरहेँ आओर महिला सभक संगे एहि तरहेँ आक्रमण देखि सभ सकदम भए गेलाह। बैसारक कार्यवाही रुकि गेल। जे जेना छल, तहिना रहि गेल। लगलैक जेना सम्पूर्ण वातावरणकेँ लकबा मारि देने हो। राजकुमार ओ मास्टर साहेबकेँ किछु फुरेबे नहि करनि।

बैसारमे भाग लैत अधिकांश लोक उमाक समर्थनमे बाजए लगलाह। ओहिमेसँ किछु गोटे तँ उमा लग आबि ओकरे संगे नारा लगबएलगलाह। आब की होएत?

मास्टर साहेब स्वयं उठि कए उमा लग गेलाह। जन भावनाक आदर करैत उमाकेँ मंचपर लए अनलखिन। तकर बादे बैसारक कार्यवाही प्रारम्भ भेल।

चारूकातसँ लोक उमाक समर्थनमे आबि गेल आओर आग्रह करए लागल जे उमाकेँ नवोदित राष्ट्रवादी दलक अध्यक्षा बनाएल जाए। मास्टर साहेब, राजकुमार उमासँ मंत्रणा कए हुनका राष्ट्रवादी दलक अध्यक्ष चूनि लेल गेल। 'उमा देवीक जय' सँ वातावरण गुंजायमान भए गेल।

राष्ट्रवादी दलक गठनसँ जनाधार पार्टीमे आपसी सिरफुटौअल बढ़ि गेल। पार्टी कतेको गुटमे बँटि गेल छल। पार्टीमे किछु गोटे राष्ट्रवादी दलक संगे विलएकपक्षधर रहथि। एहिसँ स्वतंत्रता आन्दोलन प्रखर होइत। मुदा पार्टीक बूढ़ नेता सभ चाहथि जे यथावत बनाओल रहए देल जाए कारण ओ सभ अपन अपन कुर्सीकेँ संकटमे नहि देबए चाहथि।

उमाकेँ राष्ट्रवादी पार्टीक अध्यक्षा बनबाक समाचार अरुणकेँ जासूसक माध्यमसँ भेटलैक। ओ अत्यन्त विचलित भए गेल। उमाक एहि तरहक प्रतिकृयाक ओकरा आशा नहि छल।

महौलकेँ गड़बड़ाइत देखि अरुण एंगलक संगे किछु दिनक हेतु लन्दन सरकारी यात्रापर चलि गेलाह। हमर माए दुखित पड़ि गेल छल। ओकरा असगरमे बहुत दिक्कत भए रहल छलैक। तँ किछु दिनक हेतु हम अपन नैहर गेलहुँ जाहिसँ माएकेँ सेवाक अवसर भेटए। एक युगक बाद हम नैहर गेल रही। हमरा देखिते हमर माए बहुत प्रशन्न भेल। लगलैक जेना तुरन्त ठीक भए गेल। टन-टन बाजए लागलि।

असलमे ओ एकाकीपनसँ उबि गेल छलि। फेर दिआदसभ सेहो तंग करनि। सम्पत्तिमे हिस्सा नहि दैक जाहिसँ ओ बहुत दुखी छलि। हमर अपन पित्ती सेहो गुजरि गेलाह। हुनका तीनटा बेटीए रहनि। अस्तु, हमर सभक समस्त सम्पत्तिकेँ हमर पितिऔत काका हरपि लेबए चाहैत छल।

माएक स्वास्थ ठीक भेल। ओमहर हमरा सासुरसँ विदागिरीक हेतु समाद आबि गेल छल। मासो दिन नैहरमे नहि भेल छल। मुदा कै बेर विदागरीक हेतु आदमी आबि चुकल। अन्तमे ओ स्वयं आबि गेलाह आओर हम सासुर विदा भए गेलहुँ।

q

३७.

"वृन्दावन बिहारी लाल की जय।" निरंतर भजन, कीर्तन ओ प्रवचनमे तल्लीन भजनानन्ददासजी महराज अध्यात्मिक पराकाष्ठापर पहुँच गेल रहथि। एकहि जीवनमे व्यक्तित्वक एहन रूपातंरण कमे सूनएमे अबैत अछि। किन्तु जन्म-जन्मक संस्कार जोर मारैत अछि। जीवनक कतेको रहस्य अछि जकर गणितीय व्याख्या असम्भव। परन्तु सद्य: सत्य इएह छल जे एकटा डकैत गरम सिंह महान कृष्णभक्त भए गेलाह।

ततबे नहि लोक कल्याण हेतु सर्वस्व, समस्त सामर्थ्यकेँ अर्पित कए देने छलाह। जहिना ओहि आश्रममे धनक बर्खा होइत छल तहिना ओहि पैसाक जन कल्याण हेतु खर्च कए देल जाइत छल। कहबी छैक :

"पानी बाढ़े नावमे, घरमे बाढ़े दाम

दोनो हाथ उलिचिये, एही सयानो काम।"

एहि कथानकक भजनानन्दजी महराज एकटा जीवन्त उदाहरण छलाह। अपना लेल किछु नहि। "तेरा तुझको अर्पण" केँ चरितार्थ करैत छलाह, अपन आश्रममानव जातिक कल्याण हेतु उपलब्ध कए देने छलाह।

आश्रममे तँ भजन किर्तन चलिते रहैत छल। भण्डारा चलिते रहैत छल। भक्तगण सभ मृदंग, ढोलक, पखावज ओ झालि बजाए कृष्ण नाम संकिर्तन करिते रहैत छलाह। समस्त वातावरण ततेक धार्मिक ओ भावनापूर्ण रहैत छल जे ओहिठाम अएनिहार कोनो, केहनो व्यक्ति शान्तिक अनुभव करैत छल।

मुदा भजनानन्दजी एतबेपर नहि ठहरल छलाह। ओ अपन राष्ट्रक प्रति कर्तव्यसँ सेहो सचेत छलाह। हुनकर कहब छलनि जे जाधरि भारतमाता परतंत्रताक बेड़ीसँ जकड़ल छथि, ताधरि स्वर्गो व्यर्थ थिक। मुक्तिक कामना अन्याय थिक।

"के बोले मा तुमि अबले...।" नहि, नहि, भारत माता अवला कदापि नहि भए सकैत छथि। कोटि, कोटि हुनक संतान हुनक प्रतिष्ठा ओ स्वतंत्रताक रक्षा हेतु र्सवस्व त्याग करए हेतु कृतसंकल्प अछि। देश स्वतंत्र भए कए रहत। "भारत माताक जय! वन्दे मातरम्"- इएह कहि हुनकर प्रवचनक अन्त होइत छल।

राष्ट्रवादी दलक आर्थिक समस्याक समाधान तँ भजनानन्ददासजी महराजक आश्रमक माध्यमसँ भए जाइत छल। महराजजीक एकटा भक्तक दड़िभंगामे तीन महलक भवन छलैक। ओ तीनू महल भजनानन्दजी प्रेरणासँ राष्ट्रवादी दलकेँ दान कए देलक। स्वयं दुनू व्यक्ति दिन-राति राष्ट्र सेवामे लागि गेल। फिरंगी सभ एक हिसाबे हिलि गेल छल। ओकरा सभकेँ राष्ट्रवादी दलक बढ़ैत शक्तिसँ ततेक व्याकुलता भेलैक, ततेक भय भए भेलैक जे इज्जतिसँ देश छोड़बाक रस्ता ताकय लागल।

q

३८.

अरुण एंगल केर संग लन्दन हवाइ अड्डापर पहुँचले छल कि एडली हवाइ अड्डापर पहुँच गेल। लगैत छल जेना ओ बहुत दिनसँ एहि अवसरक प्रतिक्षामे छल। ओकर फाटल- फाटल हरिअर आँखि बहुत किछु कहि रहल छल। हवाइ अड्डासँ अरुण ओ एंगल वहिर्गमन द्वारपर एडलीक स्वागतसँ अभिभूत छलाह।

अरुण सरकारी काजसँ जोगार लगाए लन्दन गेल छल। ओहिठाम आवास सहित आओर आवश्यक सुख-सुविधाक प्रबन्ध छल। ओसभ ओतहि जेबाक हेतु उद्यत छल परन्तु एडली अड़ि गेल। ओकर बात काटबओकरा सभक बसमे नहि छल।

अस्तु, ओ सभ एडलीक बात मानि ओकर घर दिसि विदा भेल। अरुण लेल ओकर घर नव नहि छल। लन्दन प्रवासक दौरान ओ सभ कतेको दिन ओतए रहल छल। अबैत जाइत छल। एक हिसाबे ओ सभ ओकर पारिवारिक मित्र भए गेल छल। लन्दन पहुँचि अरुणकेँ उसास तँ भेलैक। कमसँ कम उमाक घात-प्रतिघातसँ तात्कालिक राहत भेटलैक। संगे पुरान दोस्त सभसँ भेँट-घाँट होइत रहलैक। ओकरा सभक संगे बिताओल मधुर, स्नेहिल समयकेँ पुन: सद्य: जीबाक अवसर भेटलैक। सरकारी कामकाज तँ बहाना छल।

एक दिन एडलीक ओहिठाम रहि अरुण सरकारी अतिथि गृहमे चलि आएल। एंगल ओ एडली ओतहि रहल। ई दुनू तँ पुरान दास्त छल। बहुत दिनक बाद एकठाम भेल छल। लगलै जेना बिर्डो उठि गेल। दुनूकेँ गप्पक अन्ते नहि होइक। गप्पेटाक बात रहितए तँ कोनो बात नहि। लगबे नहि करैक जे अरुण ओकरे संगे आबि कए कतहुँ आनठाम रुकि एंगलक प्रतीक्षा कए रहल अछि।

आखिर लन्दन, लन्दन छैक। ओहिठामक अन्मुक्त वातावरणमे बढ़ल, पढ़ल एंगल ककरो हेतु बान्हल छेकल कतेक रहि सकितैक? एहनमे तँ अरुण स्वयं सोचि सकैत छलाह। मुदा भावी प्रवल। जे हेबाक छल से भेल। दुखक बात तँ ई छल जे एहूकात गाड़ी घिसिर-फिसिर करैत छल। ओहिकात तँ सद्य: उमा गरजि रहल छलैक। अरुण सचमुचमे बेचारा भए गेल छल। कहबी ठीके छै- 'ने दौड़ि चली, ने ठेंसि खसी।'

एक सप्ताह बहुत नहि होइत छैक। देखिते देखिते शनि, रबि आबि जाइत छैक। पाँच दिनका खटैनी दू दिनका सप्ताहान्त अवकाशमे गलि जाइत छैक। अरुण सेहो पाँच दिन लन्दनक सरकारी काजमे व्यस्त रहल मुदा शुक्रक साँझ अएलापर माथ ठनकलै। आब की कएल जाए? एंगलक अएबाक गप्प कोन, फोनो नहि केलकै। ओ तँ एडली संगे तेना कए रमि गेलैक जे आगा- पाछा किछुक सुधि नहि रहलैक।

अरुण जखन एडलीक ओतए पहुँचल तँ पता लगलैक जे ओ सभ लन्दनसँ बाहर चलि गेल अछि। कतए गेल से घरक लोक ने अपना मोने किछु कहलकै आ ने अरुण पुछलक। ओहिठामक समाजमे बेसी खोध-बेधक परम्परा नहि छैक। बहुत रास बात व्यक्तिगत रहि जाइत अछि।

अरुण गुम्म छल। ओकरा एहि बातकेँ आब आभास भए रहल छलैक जे अपन सभक माटि-पानिमे जन्मल, पोसाएल पुरुखक बिआहक एहन कल्पना रहैत छैक जाहिमे ओकर स्त्री आजन्म ओकरा प्रति निष्ठावान रहैक, ओ जे चाहए सएह करैक, मुदा ई तँ लन्दन छै। से बात बहुत बिलंबसँ बुझए आबि रहल छलैक।

एडली ओ एंगल स्कूटरपर लन्दनसँ करीब चालीस किलोमीटर दूर एकटा रिजार्टमे ठहरए हेतु जा रहल छल कि एकटा तेज गतिसँ चलैत कार ओकरा टक्कर मारि देलकै। टक्कर ततेक जबरदस्त छल जे स्कूटर पचरा भए

ejournal 'विदेह' २५८ म अंक १५ सितम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १२९ अंक २५८) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

गेल। हेडली ओहीठाम कै पलटी खेलक मुदा कोनो बेसी चोट नहि लगलैक। परन्तु एंगल हवामे कै फीट ऊँचाइ धरि फेका गेल आओर धरामसँ नीचा बीच सड़कपर खसल। ई तँ संयोग छलैक जे पाछुसँ अबैत दोसर कारक वाहन चालक एकाएक ब्रेक लए लेलक नहि तँ ओतहि ओ टुकड़ी-टुकड़ी भए जाइत।

एहि दुर्घटनामे एंगलक दहिना जाँघक हड्डी टुटि गेल छलैक। कनी-मनी चोट तँ सौंसे देहमे छलैक। एडलीक हालत सेहो ठीक नहि छलैक। क्रमश: दुनू पैर फुलि गेलैक जाहिसँ चलबामे असोकर्य होइत छलैक।

कहुना कए स्थानीय पुलिस एकरा सभकेँ लन्दनक प्रतिष्ठित अस्पतालमे भर्ती करओलक। अरुणकेँ सेहो पुलिस द्वारा सूचना भेटल। ओ तुरन्त अस्पताल पहुँचल। ओ एंगलक हालत देखि दुखी भए गेल। जाबे एंगल अस्पतालमे रहल ताबे ओहो ओतहि रहल। मुदा तकर बादक चिन्तासँ ओ व्यग्र रहए लागल।

शुरूमे अरुणक कार्यक्रम छलैक जे ओ तीन-चारि मासमे अपन देश आपस आबि जाएत। मुदा गाम-घरसँ जे समाचार सभ भेटैक आओर जाहि प्रकारेँ उमा उग्रसँ उग्रतर भए रहल छलि, ओकर मोन बेचैन भए जाइक, कोनो समाधान नहि फुराइक।

संयोग एहन भेलैक जे अंग्रेजसभकेँ खुफिआ रिपोर्ट भेटलै जे अरुणकेँ हितमे नहि छल। ओकरा सभकेँ अरुणक गति-विधिपर सन्देह भए गेल छलैक। तँ ओकरा कम-सँ-कम साल भरिक हेतु लन्दनमे रहबाक आदेश कए देलक।

सरकारी आदेश छलैक, तँ अरुणकेँ कोनो विकल्पो नहि रहैक। ओकर मोन निरन्तर अपन गाम-घरपर टांगल रहैत छलैक। तथापि ओ अपना आपकेँ लन्दनमे व्यस्त कए लेलक। दिन भरि कार्यलयमे समय बीति जाइत छल। साँझ कए समय बिताबक हेतु एतए बहुत जोगार सभ छलैक।

एंगल अस्पतालसँ छुटि कए अरुणक डेरापर अएलैक। मुदा ओकरा नीकसँ चलल नहि होइक। डाक्टरक परामर्शक अनुसार ओकरा फिजिओथिरैपीक प्रयोजन रहैक। सभ सुविधा आसे-पासमे उपलब्ध छल। मुदा घरमे बैसल-बैसल ओ तंग भए रहल छलि। कोनो उपायो नहि रहैक। अरुण कार्यालय चलि जाइक। दिन भरि ओ एसगरि कहुनाक समय बिताबथि।

एहिना एक दिन ओ उदासघरमे किछु पढ़ि रहल छलि कि एडलीक फोन आएल। एंगल ओकरा तुरन्त आबए हेतु आग्रह केलक। एडली बिना विलम्ब केने ओतए आबि गेल। दिनभरि दुनू गोटाकेँ गप्प-सप्पमे समय कोना बीति गेल सेपता नहि चलल। साँझमे ओ अपन घर आपस जेबाक इच्छा व्यक्त केलक। ताबत अरुण सेहो आबि गेल रहए। अरुण ओ एंगल दुनू गोटे ततेक आग्रह केलकै जे ओ ओहीठाम रहि गेल। एंगल, एडली संगे तेहन तल्लीन भए जाइक जे अरुणकेँ करए हेतु किछु रहिए नहि जाइक। कखनहुँक ओहो गप्पमे लारि देबाक प्रयास करैक मुदा ओकरा सभक हेतु धनिसन।

q

३९.

अरुण लन्दन चलि गेल से समाचार हमरा सभकेँ खबासिनीक माध्यमसँ भेटल। एहि बेर ओ बहुत दिनपर आएल छलि। गप्प-सप्पक क्रममे कहए लागलि जे हमर माए सम्पत्तिमे बँटबारा हेतु बहुत हल्ला केलकै। मुदा हमर पितिऔत काका टस सँ मस नहि होइत छैक। ओकर कहब जे बेटीक बिआह भइए गेल। तखन अहाँकेँ खोरिसक अतिरिक्त किछुके अधिकार नहि अछि। कतेको बेर बैसार भेलैक। पंचसभ सेहो ओकरे संग भए गेलैक। बहुत रास सम्पत्ति तँ ओ अपना नामे करा चुकल छल।

ई बात सभ जखन हुनकर कानमे गेलनि तँ दड़िभंगामे मोकदमा कए देलाह। दड़िभंगाक नामी ओकिल मोना बाबू हमर सभक केस लड़ि रहल छलाह। कोर्टसँ नोटिस जारी भेल। हमर पितिऔत काकाकेँ दिआद सभ बहुत कहलकै। अनततोगत्वा ओ पसीजल आओर पाँच बीघा जमीन हमरा माएकेँ देबाक हेतु तैयार भए गेल। ओ एहि प्रस्तावकेँ मानि लेलाह। जतए हम सत्तरि बीघाक उत्तराधिकारी रहितहुँ कतए मात्र पाँच बीघापर समझौता करए पड़ल। कोनो विकल्पो नहि छलैक। कानूने तेहने छलैक।

समय बीतैत देरी नहि होइत अछि। देखिते-देखिते हमर बच्चा सभ जबान भए गेल। तीनू बेटीक पढ़ाइ पूरा भए गेल। ओ सभ अपन अपन रूचिक विषयमे एमए पास कए चुकल छलि। एकमात्र पुत्र सेहो इंजीनियरिंगमे पढ़ैत छल। एकरा सभक पढ़ाइ-लिखाइमे अरुणक गम्भीर योगदान छलैक। आर्थिक चिन्ता तँ कहिओ होमए नहि देलक।

पढ़ि-लिखि तँ गेल मुदा आब की कएल जाए। ई समस्या विकट छल। कारण ओहि समयमे बेटीक पढ़ाइ-लिखाइ बिरलैके क्यो करैत छल। से हम सभ केलहुँ आओर जेना-तेना पार लागि गेल। मुदा भविष्यक संघर्ष आओर प्रवल लगैत छल।

इएह सभ सोचैत रही कि हमर तीनू बेटी गाम आएल। ओकरा सभकेँ देखि मोन गदगद भए गेल। सभक व्यक्तित्वमे अद्भुत चमक छलैक। आत्मविश्वाससँ भरल छल। विद्यासँ ओकरा सभकेँ बहुत आत्मशक्ति प्राप्त भए गेलैक आओर ओ सभ जीवनमे किछु स्थान बनबए हेतु कृतसंकल्प लगैत छलि।

जहियासँ राष्ट्रवादी दल बनल, जनाधार पार्टीक जनाधार तेजीसँ खसकि रहल छल। राष्ट्रवादी दलक कमान उमाक हाथमे पड़िते चारूकातक स्त्रीगण खास कए मध्यवर्गीय परिवारक, ओहि दलसँ जुड़ए लागलि। लगैक जेना देशमे क्रान्ति आबि गेल अछि।

शिक्षा नहि, पारिवारिक सम्पत्तिमे हिस्सा नहि, घरसँ बाहरो निकलबाक परिस्थिति नहि, आखिर एहि बातक प्रतिकार तँ भेनहि रहैक। अस्तु, अवसर भेटिते एक दिस तँ "बन्देमातम्"केर नारा लगैत तँ दोसर दिस स्त्री सम्मानक रक्षाक चर्चा सेहो जोर पकड़ने जाइत छल।

फिरंगी सभ एहि बातसँ चिन्तित छल। ओकरा सभकेँ किछु फुरेबे नहि करैक जे एहि परिस्थितिसँ कोनो निपटी। तखन ओ सभ सोचलक जे जनाधार पार्टीक मदति लए आपसेमे उठापटक कराओल गेल।

जहिआसँ चेतन जनाधार पार्टीक अध्यक्ष भेल छल, ओकर फिरंगी सभसँ पहिल भेँट-घाँट रहैक। मुदा फिरंगीसभ ओकरा प्रभावमे नहि आनि सकल।

राष्ट्रवादी दलक प्रभावसँ हमर तीनू बेटी- हीरा, वाणी ओ गंगा प्रभावित छलीह। देश ओ समाजक हेतु किछु करबाक इच्छा हुनका सभकेँ उद्वेलित कएने छल। उच्च शिक्षा प्राप्त कए ओ समाजक दुर्दशाकेँ बेसी नीकसँ बुझैत छलीह। अस्तु, ओ सभ सभ काजकेँ पाछु कए उमाक संग भए गेलीह। राष्ट्रवादी दलक सक्रिय सदस्यता ग्रहण कए गाम-गाममे घूमए लगलीह।

आब उमा एसगरि नहि छलीह। छोट, पैघ, जवान, बूढ़ सभ ओकरा संग दए रहल छलैक। असलमे गाम-गाममे पसरल एहि अन्यायसँ मुक्तिपाबक एकटा अवसर आबि गेल छल। जतहि देखू "बन्दे मातरम्" केर नारा लागि रहल अछि। भारत- माताक जयगान भए रहल अछि। एकहि स्वरमे समाजमे युग-युगसँ पसरल वैमनस्यता,भोदभाव, शोषणक विरुद्ध आक्रोश सेहो तीव्रतर भए रहल अछि। क्यो-क्यो कहैत छल जे समाजकेँ बिखण्डित करबाक ई फिरंगी सभक नव हथकंडा अछि।

राष्ट्रवादी दलमे महिलाक पैठसँ सभसँ बेसी प्रशन्नता भजनानन्ददासजीकेँ भेलनि। हजारो सालसँ यातनापूर्ण जीवन जीबए हेतु विवश स्त्रीगणकेँ अभिव्यक्ति एकटा साधन भए गेल छल राष्ट्रवादी दल। जखन कखनो नव प्रयोग होइत अछि, चाहे ओ सही हो, गलत हो, जे हो, ओकर विरोध, प्रतिरोध होइते अछि। मुदा ओहो विकासक एकटा पदचापे बुझबाक चाही। अन्ततोगत्वा मनुक्खक प्रयास सफल होइते अछि। से नहि होइत तँ मनुक्खक विकास नहि भए सकैत अछि। आदिकालसँ लोक परिस्थितिसँ संघर्ष केलक आओर आगा बढ़ल अछि।

भजनानन्ददासजी भक्ति, अध्यात्म ओ राष्ट्रवादक प्रखर ध्वजवाहक भए गेल छलाह। गाम घरमे भए रहल सामाजिक, राजनीतिक घटनाक्रमसँ आश्रममे अएनिहार लोकक माध्यमसँ ओ पूर्ण अवगत छलाह। हुनकर एहि उदारताक लाभ राष्ट्रवादी आन्दोलनकेँ भेटि रहल छल। एही बात सभकेँ ध्यानमे रखैत राष्ट्रवादी दलक अगिला बैसार वृन्दावनमे करबाक निर्णय भेल।

q

ऐ **रचनापर अपन मतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

जगदीश प्रसाद मण्डल- पंगु (उपन्यास) धारावाहिक आ दूटा लघुकथा

१

जगदीश प्रसाद मण्डलक

पंगु

उपन्याससँ...

8.

बीसम शदीक छठम दशकक अन्तिम समयमे, माने करीब 1958 इस्वीमे कोसी नदीमे फाटकबला पुलनेपालक सीमामे भारत सरकार बनौलक। कोसीक दुनू कात, माने उत्तरे-दच्छिने कोसी बहैए, पूबो आ पच्छिमो बान्ह सेहो बनल। कोसी पुलक संग-संग, पच्छिमी आ पूर्वी मुख्य नहर बनबैमे सेहो हाथ लगौल गेल। तैबीच 1958 इस्वीमे कोसीमे बाढ़ि आएल। ओना, बरखो बेसी भेल छेलैजइसँ कोसीक बान्ह कतेकोठाम टुटि गेल। इलाकाक फसल जे दहाएल से तँ दहेबे कएल जे गाम-गामक घरो-दुआर खसलआइनार-पोखैर सेहो भराएल-भोथाएल। तेतबे नहि, धारो जैठाम बहै छल तइसँ थोड़ेक पच्छिम घुसकल। केते गाम ओहन छल जइमे कोसीक बाढ़ि नइ अबै छल, तोहू सभ गाममे बाढ़ि आबए लगल। तैसंग ईहो भेल जे ओ बान्ह साले-साल केतौ-ने-केतौ टुटौ लगल आ ओ इलाका दहाइत रहल। कोसीक जे पूर्वी आ पच्छिमी मुख्य नहर छल, जइसँ शाखा नहर सभ बनैक योजना छेलै, ओइ सभ जमीनक सर्वेक काज सेहो हुअ लगल। माने नहर बनैक, नापी-जोखी शुरू भेल। मुदा ने अखन तक मुख्य नहरे पूर्ण रूपेण बनि सकल छल आ ने शाखा नहर सभमे हाथे लागि सकल।

बीसमी शदीक सातम दशक चढ़िते, माने 1962 इस्वीमे चीनक संग भारतक सीमा-विवाद लऽ कऽ लड़ाइ भऽ गेल। जे देशक अर्थ बेवस्थाकेँ आरो चरमरा देलक। तैसंग गाम-गाममे अफवाह पसरल जे अनेको ग्रह एकठाम भऽ गेल,जइसँ जबरदस हानि मनुखो आ मालो-जालकेँ हएत। गाम-गामक देवालयमे अष्टयाम, कीर्तन, नवाहक संग सबा मास,अढ़ाइ मासक कीर्तनक संग यज्ञ-जाप सेहो हुअ लगल। सीतापुरमे सेहो सबा मासक कीर्तन ठकुरबाड़ीमे भेल। मुदा समय बीतैत गेल कोनो तरहक दैवी प्रकोप तेहेन नहियेँ भेल।

1967 इस्वीमे जबरदस रौदी भेल। अखन तक देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर नहि बनल छल। आन-आन देशसँ अन्नक आयात होइत रहइ। 1967 इस्वीक रौदी चारि सालक भेल। जइसँ केतेको पोखैरक संग इनारोक पानि सुखि गेल। जइसँ खेतीक संग पीबैक पानिक समस्या सेहो उपस्थित भऽ गेल। सीतापुरमे एकटा बड़की पोखैर अछि,जेकर पनिझाउसँ लऽ कऽ भिण्डा सहित बाबन बीघाक अछि। किंवदन्ति अछि जे ओ पोखैर दैंतक खुनल छी। गामक जे आन पोखैर आ इनार छल, ओ तँ सुखिये गेल जे ओइ बड़की पोखैरक पानि सेहो सटैक कऽ पाँच कट्ठापर चलि गेल, जइमे मात्र भरि ठेहुन पानि बँचल। तहूमे तेतेक गादि छल जे पानि तक पहुँचब कठिन छेलइ। अन्न-पानिक बेतरे केतेको मालो-जाल मरल आ लोको मरबे कएल। गाम-गामक जमीन ओहिना परती-पराँत बनि गेल। उपजा-बाड़ीक कोनो ठेकान नहि रहल। अन्तमे गामक लोक ओइ बड़की पोखैरसँ बिसाँढ़ खुनि-खुनि आनि-आनि उसैन-उसैन खा-खा कऽ प्राण बँचौलक।

सरकारक दोसर पंचवर्षीय योजनामे दरभंगा-लहेरियासरायमे अस्पताल बनल। जइसँ दुनू तरहक लाभ आमजनकेँ भेल। जहिना बिमारीक इलाजक सुविधा भेल तहिना डॉक्टरी पढ़ाइ भेने नव-नव डॉक्टरक निर्माण सेहो हुअ लगल। ओना, जइ हिसाबसँ दुनूक जरूरत छल, माने डॉक्टरो आ बिमारीक इलाजोक, तेतेक पूर्ति तँ नहियेँ भेलमुदा किछु तँ भेबे कएल।

1942 इस्वीमे जे देशक जन-आन्दोलन अंगरेजी शासनक खिलाफ उठल ओ अपन चरम सीमापर पहुँच गेल। अंगरेजी शासनक खिलाफक संग-संग अंगरेजी वस्तुक[i] सेहो वहिष्कार भेल। ओइ समय इंगलैंडक

मेनचेष्टरक कपड़ा उद्योग दुनियाँमे बहुत आगू छल। भारत सन विशाल देशक विरोध भेने इंगलैंडक कपड़ा उद्योगकेँ जबरदस धक्का लगल। ठीक ओकर विपरीत देशक हथकर्घाकेँ अवसर भेटल, जइसँ गाम-गाममे सूत काटैक संग-संग कपड़ा बुनैक रोजगारकेँ नीक मौका भेटल।

जमीन्दारी उन्मूलनसँ खेतक मालगुजारी जमीन्दारक हाथसँ निकैल बिहार सरकारक हाथ आएल। अपन-अपन जमीन्दारीक चार्ज दइमे जमीन्दार सभ सेहो रंग-रंगक अरंगा लगा-लगा देरी करबे केलैन। मुदा जे भेलसे भेल, जमीनक मालगुजारी बिहार सरकारक हाथ एबे कएल। ओना, गाम-गामक सभ जमीनक मालगुजारी एकरंग नहियेँ छल, मुदा कम कि बेसी तँ छेलैहे। कम-बेसीक माने भेल जे जे जमीन ब्रह्मोत्तर, शिवोत्तर वा अन्य कोनो कारणे मालगुजारीसँ मुक्त छल, ओहू जमीनक मालगुजारी टैक्स रूपमे तँ नहि मुदा 'शेष' रूपमे लागए लगल। ओना, 'शेष' नाम-मात्रे रूपमे छल। टैक्सक अतिरिक्त जे टैक्स लगैत रहै, शेष मात्रओतबे छल।

बिहार सरकारक कर्मचारीक माध्यमसँ मालगुजारी असुलल जाए लगल। गामक किसान सभ जमीनक निलामीसँ बँचैक नमहर साँस लेलक।

ओना, अंगरेजक समयमे 1888 इस्वीसँ 1903 इस्वीकबीच जमीनक सर्वे भेल छल, जइ आधारपर अखन तक जमीनक हिसाब-किताब चलैत आबि रहल छल, ओइमे अनेको रंगक ओझरी लगले जा रहल छल। माने ई जे किछु ओझरी[ii] सर्वेक पहिनेसँ आबिये रहल छल तेकर अतिरिक्तो अनेको रंगक नव-नव ओझरी उठि-उठि ठाढ़ भेल। तँए,सर्वेक जरूरत भेल।

बीसम शदीक सातम दशकमे जमीनक सर्वेक काज शुरू भेल। गाम-गाममे सर्वेक पहिल सीढ़ीक काज किश्तवार रूपमे शुरू भेल। मुदा किश्तवार करैबला कर्मचारी जे आएल ओ भीतरे-भीतर तेहेन हवा बनौलक जे गामक लोक,जमीनबला सभ आँखि मुइन कऽ अपन-अपन खेतक नक्शा बढ़बैले ओकरा घूस दिअ लगल। जइसँ सर्वे की हएत जे पैसाक खेल शुरू भेल, जइसँ गाम-गाममे आरो विवाद फँसि गेल।

1967 इस्वीक रौदी आमजनसँ लऽ कऽ सरकारोकेँ कृषिक लेल पानिक की जरूरत अछि, तइ दिस धियान खिंचलक। ओना, अखन धरिक किसानक संस्कारमे सिंचाइक कृत्रिम बेवस्थाक प्रति ओ आकर्षण नहि आएल छल, जेकर जरूरत छेलइ। मुदा रौदी से अनलक। ओना, कोसी नहरक चर्च किसानक कान तक जरूर पहुँच गेल छेलै मुदा ओइ रूपमे नहि, जइ रूपक खगता छेलइ। कोसीक पच्छिमी मुख्य नहर जे छल, ओकर खुनाइयो समुचित ढंगसँ नइ भेने,अखनो धरि ओहिना लटकले छल।

तैबीच विदेशी[iii] सहायतासँ स्टेट बोरिंग गाड़ैक योजना बनल। ओइ बोरिंगक ओहन पाइप आ इंजिन अछि जे हजारो बीघा खेतक सिंचाइ कइये सकैए। ओना, बोरिंग तेहेन इंजिनसँ गाड़ल जाइ छेलै जे एक्के दिनमे माने आठसँ दस घन्टामे बोरिंग गड़ा जाइत रहइ। मुदा जइ इंजिनसँ पानि निकालल जाइत ओ बिजली चालित छल। जे बिजली केतौ छेलैहे नहि, आ कनी-मनी जँ छेलैहो, से बहुत कम मात्रामे छल, जइसँ बोरिंगक इंजिन चलब कठिन छेलइ। तेकर अतिरिक्त बोरिंगक पानिक लेल नाला चाहै छल, से केतौ बनबे ने कएल। जँ केतौ-केतौ कनी-मनी बनबो कएल तँ तेहेन घटिया काज भेल जे ढहि-ढुहि गेल। एक तँ ओहुना लोक बुझैए जे सरकारी काज आ जेठुआ गरेक[iv] कोनो भरोस नहि। से भेबो कएल। दर्जनो बोरिंग गामे-गाम गड़ाएल मुदा सिंचाइ केतौ ने भेल।

सरकारोक नजैर जखन रौदीपर पड़ल तँ ओहो बोरिंग गड़बैक योजना बनौलक। बैंकक माध्यमसँ एक-तिहाइ,एक-चौथाइसब्सिडीपरबोरिंगक पाइपो आ पानि निकालैबला पम्पसेटोक बेवस्था करौलक। केतौ-केतौ गोटि-पंगरा गड़ेबो कएल, मुदा जेते जरूरत छलसे नहियेँ भेल।

1967 इस्वीमे आम चुनाव भेल। ई चारिम आम चुनाव छल। पहिल 1952 इस्वीमे, दोसर 1957 इस्वीमे, तेसर 1962 इस्वीमे भेल छेलै आ चारिम 1967 इस्वीमे।क्रमश: केन्द्रमे सरकार बनल पहिल प्रधानमंत्री पण्डित जवारलाल नेहरू, दोसर- लाल बहादुर शास्त्री, ओना, किछु दिनक लेल गुलजारीलाल नन्दा सेहो प्रधानमंत्री बनला, आ तेकर बादक प्रधानमंत्री पदपर आसिन भेली इन्दिरा गाँधी।

चारिम आम चुनावमे बिहारक शासन बदलल। ओना, केन्द्रमे काँग्रेसी शासन रहबे कएल मुदा बिहारमे काँग्रेस विराधी सरकार बनल। ओना, कएटाआनो-आनो राज्यमे काँग्रेसी सरकार बदलबे कएल। काँग्रेस छोड़ि सभ पार्टी मिलि बिहारो सरकार बनौलक। नव सरकार बनिते बिहार सरकारक 33 सूत्री कार्यक्रम बनल। मैट्रिकमे अंगरेजी विषयकेँ उठौल गेल। मैट्रिक तकक शिक्षा सेहो फ्री कएल गेल। तेकर अतिरिक्तो कार्यक्रम सभ छल मुदा सरकारमे जहिना एक दिस वामपंथी शामिल छल तहिना दोसर दिस दच्छिणपंथी सेहो रहबे कएल। दुनूक बीच तेना विवाद फँसल जे अठारह मास बीतैत-बीतैत सरकार टुटि मध्यावधि चुनाव भेल।

1971 इस्वीमे पाकिस्तानमे सेहो चुनाव भेल। ओइ चुनावमे पूर्वीयो आ पच्छिमियो पाकिस्तानक बीच लड़ाइ फँसल। पच्छिमी पाकिस्तान कश्मीर, पंजाबआराजस्थान कटि कऽ बनल छल, आ बंगालसँ कटि कऽ पूर्वी पाकिस्तान बनल रहइ। ओना, अजादीसँ पूर्व 1947 इस्वी तक भारत देश जेतेटा छल तइमे पाकिस्तान कटने कमी एबे कएल। जे एकटा देश छल ओ दूटा बनि तीन टुकड़ी भऽ गेल। ओना,
1931 इस्वीमे, अंगरेजीए शासनमेबर्मा सेहो अलग भेल, जे भारतेक पूर्वी भाग छल। पछाइत सिक्किम जे कि एकटा छोट देश छल ओ भारतमे मिलबो केबे कएल।

इन्दिराजीक नेतृत्वमे केन्द्र सरकार छल, ओ पूर्वी पाकिस्तानकेँ संग देलैन। ओना, चारि सालसँ जे रौदी आबि रहल छल ओ 1971 इस्वीमे सालो भरि बरखा भेने समाप्त सेहो भेल। जहिना भारत पूर्वी पाकिस्तानकेँ मदैत केलक तहिना अमेरिका पच्छिमी पाकिस्तानकेँ केलक। अमेरिका शक्तिशाली देश छेलैहे। जेकरासँ मुकाबला करब कठिन छेलइ। सोवियत संघ सेहो शैन्य-शक्तिमे शक्तिशाली भइये गेल छल। इन्दिराजी सोवियत संघसँ शैन्य-सन्धि केलैन। सोवियत संघक सहायतासँ लड़ाइ जमगर भेल। अन्तो-अन्त बंगला देश स्वतंत्र देशक रूपमे जन्म लेलक। पाकिस्तान दू टुकड़ीमे विभाजित भऽ पाकिस्तान, बंगलादेशक नाओंसँ दू देश बनि गेल।

अखन तक, माने 1971 इस्वी तकभारत जे अमेरिकासँ अन्नक[v] आयात करैत आबि रहल छल, तेकरा अमेरिका रोकि देलक। जइसँ पेटक समस्या अपना देशमे उठबे कएल। जइ सभ देशमे अमेरिका अन्नक निर्यात करै छल ओ सभ देश अमेरिकाक प्रभावमे रहै, तँए ऐगला मुँहराबनिकोनो देशसँ अन्नक आयात करब कठिन छेलैहे। सोवियत संघ सेहो अन्नक उपजमे ओतेक सशक्त नहियेँ छल जेते आन-आन शक्तिमे छल। ओना, सोवियत संघ ठण्ढ देश अछि, तहू कारणे ओइठाम अन्नक उपज कम होइ छल। खास कऽ साइबेरियाक जे भाग सोवियत संघमे छल ओइ भागमे तीन माससँ नअ मास तक जमीन बर्फमे डुमल रहै छल, जइसँ ओइठाम कृषि कार्यमे बाधा छेलैहे।

भारतमे अनेको राज्य अछि आ सभ राज्यक अपन-अपन समस्या अछि। किछु राज्य एहेन अछि जइमे बरखो कम होइ छै आ माटियो उपजाउ नहियेँ अछि। तहिना किछु राज्य एहनो अछि जैठाम अधिक बरखो भेने ओइठामक पैदावार सीमित भऽ गेल अछि। तैसंग किछु राज्यमे खाइबला अन्नक उपज तँ कम होइए मुदा तेलहन, कपास इत्यादिक उपज अधिक होइए। सभ किछु होइतो किछु राज्य एहनो तँ छेलैहे जे अपन भरण-पोषण करैत आनो-आन राज्यकेँ अन्न दइ छल। पंजाब राज्य, जैठाम माटियो ओहन उर्वर शक्तिबला नहि अछि आ बरखो कम होइ छै, मुदा ओइठाम एहेन कृत्रिम बेवस्था[vi] केने छल जइसँ अपेक्षाकृत नीक पैदावार छेलइ।

आजुक बिहारक नक्शा तँ बदैल गेल अछि मुदा जखन उत्तर बिहार आ दच्छिन बिहार छल, माने बिहार आ झारखण्ड मिला कऽ जखन एक राज्य छलतखन उत्तर बिहार जहिना धार-धुरसँ भरल छल, जइसँ दाहियो होइते अछि,तहिना दच्छिन बिहार पहाड़, खानसँ सेहो भरल छल जइसँ कृषि क्षेत्र कम रहने कृषिक पैदावार कम रहबे करए।

मिथिलांचल सहित उत्तर बिहारमे धार-धुर तँ अछिए मुदा कृत्रिम बेवस्था नहर, बोरिंग क तँअभाव अछिए,जइसँ ऐठामक कृषि-कार्य अनबिसवासू बनले अछि। रौदी-दाहीक खेल साले-साल चलिते अछि। जइसँ अपना ऐठाम कृषि कार्य पंगु बनल अछि। अखन धरिक जे कृषि बेवस्था अपना ऐठाम रहल ओ प्राचीन पद्धतिक अनुकूल रहल। जइसँ उपजक मात्रा निम्नसँ निम्नतर स्तरमे रहल।

देशक सोझा जखन अन्नक समस्या उठि कऽ ठाढ़ भेल तखन केन्द्रो सरकार आ राज्यो सरकारक नजैर कृषि दिस उठल। ओना, अनेको रंगक अन्नक खेती-बाड़ीक लेल अनुकूल क्षेत्र बिहार छीहे मुदा उपजाक जे रेशियो हेबा चाही से नहियेँ छल। सरकारक नजैर उठने किसानकेँ रंग-रंगक सहायताक सुविधा भेटल। पूसा, ढोली, सबौर इत्यादि जगहमे कृषि फार्म सेहो बनल, जैठाम कृषिक पढ़ाइक संग-संग अनुसन्धान सेहो हुअ लगल। जइसँ अन्नक नीक-नीक बीजक अनुसन्धान भेल, जे परम्परासँ अबैत पैदावारमे धक्का मारलक। माने डेढ़िया-दोबर-तेबर उपजाक बढ़ोत्तरी भेल। जइ खेतमे कच्ची मन कट्ठा उपजै छल, तइमे तीन-तीन, चरि-चरि पक्की मनक उपज हुअ लगल।

तैसंग कोसी नहरक लाटमे आनो-आन नहरक खुनाइ हुअ लगल जइसँ खेतक सिंचाइ होइत। बैंकक माध्यमसँ एक-तिहाइ, चौथाइ अनुदानित रूपमे बोरिंग-पम्पसेट लॉनक माध्यमसँ किसानकेँ भेटए लगल। जइसँ गाम-गाममे किछु बोरिंग भेने उपजमे किछु-ने-किछु बढ़ोत्तरी सेहो भेबे कएल। अखन धरि जइ खेतमे मात्र छाउर-गोबर देल जाइत छल,रसायनिक खादक प्रयोग नहि भेल छल, तइ सभ खेतमे रसायनिक खादक संग-संग गोबर-घास-पातसँ निर्मित जैविक खाद सेहो पड़ए लगल। तेतबे नहि, किसानकेँ जैविक खाद बनाएबो सिखौल गेल।

अखन धरि जे सरकारी विभागमे कृषि विभाग मृतप्राय छल ओइमे जान फूकल गेल। ब्लॉकमे कृषि विभागक अलग कार्यालय बनल। गाम-गाममे कृषि विभागक कर्मचारीक[vii] बहाली भेल, जेकरा माध्यमसँ गामक किसानकेँ नव तकनीकक जानकारी देल जाए लगल। ब्लॉक स्तरपर सरकारी कृषि फार्म सेहो स्थापित भेल।

सरकारी माध्यमसँ किसानकेँ खाद-बीज, कृषि-यंत्र अनुदानित दरपर कर्ज रूपमे सेहो भेटए लगल। पूसा, ढोली,सबौर फार्मक माध्यमसँ अन्नक संग तीमनो-तरकारी आ फलो-फलहरीक बीजक संग गाछ सेहो उपलब्ध करौल जाए लगल।

ejournal 'विदेह' २५८ म अंक १५ सितम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १२९ अंक २५८) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

'जय-जवान, जय किसान'क नारा देशमे बहल। अखन धरिक जइ किसानक शकल-सूरत बिगैर गेल छल ओइ किसानमे नव उत्साह जगल, कृषि पैदावार बढ़ल, देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर भेल। आत्म-निर्भर भोजनक मामलामे जरूर भेल मुदा कृषि पैदावारमे पंगुपन बनले रहल। जैठाम कृषि आधारित माने कृषि पैदावारसँ पैंतालीस प्रतिशतसँ अधिक कच्चा माल कारखानाकेँ भेटै छै, ओ उपज ठमकले रहि गेल। जइसँ कल-कारखानाक विकास बिहारमे नइ भेल।

ओना, जहिना एक दिस प्रगतिक दिशामे देशक शक्ति बढ़ल तहिना समाजक किछु लोक ओकर विरोध नहि केलैन सेहो बात नहियेँ अछि। रंग-रंगक अफवाह सभ उठबे कएल जइसँ प्रगतिमे बाधा नइ भेल सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अन्ध-बिसवास आ रूढ़िवादी विचार सेहो जमि कऽ विरोध करबे केलक।

q

शब्द संख्या : 1945, तिथि : 4 जून 2018

जारी....

---

[i]इंगलैंडक समानक

[ii]जमीनक बीच समस्या

[iii]चेकोस्लोवाकिया

[iv]जेठक बर्खाक मेघक

[v]गहुम, बाजरा

[vi]नहर, बोरिंग आ भखड़ा-नांगल डैमसँ सिचाइक बेवस्था

[vii]भी.एल.डब्ल्यू.क

२

जगदीश प्रसाद मण्डल

दूटा लघुकथा

गपक पियाहुल लोक

दीनबन्धु काकाकेँ आइ अगिलग्गी केसक फैसलाक तारीख छिऐन। ओना, केस पचीस साल पहिलुका छिऐन, जइसँ पैंतीस मुद्दालहमे पाँचकेँ मरि गेने तीस गोरे जीवित छैथ। काल्हि साँझेमे सभ कियो विचारि लेलैन जे सभ काज छोड़ि भिनसरे समयपर तैयार भऽ सभ कियो संगे साइकिलसँ मधुबनी चलब। सेशन कोर्टक केस छी तँए अपना सभ दिससँ कोनो नियम भंग करबाक नहि अछि, जँ कोर्टे वा मुद्दैये दिससँ कोनो गड़बड़-सड़बड़ हएत तँ ओकरा आगू फरिछा लेब। जखन विचारसँ प्रेम केने छी तखन डरैक कोन बात अछि। कोर्ट-कचहरी हुअ कि थाना-बहाना आकि कस्टडी-जहल, सभठाम जाइले तैयार छीहे।

हरे-हरे सभ कियो माने तीसो मुद्दालह, एक जुटताक परिचय देलैन। ओना, जहिया केस भेल वा केससँ पहिने जे कारण भेल तहू समयमे सभ कियो एकजुटताक परिचय दइये देने छेलखिन मुदा पचीस साल जे बीचमे समय बीतल, तैबीच कोनो तेहेन काजे नहि भेल जइमे एकजुटताक परीक्षा होइत। एकर माने ईहो नहि जे पैंतीसो डरसँ देह-हाथ समेट लेलैन। समाजिक स्तरक जे काज छल ओ काज बीचमे चलल तँए परीक्षाक घड़ी उपस्थित नइ भेल। मुदा समाजिक बदलावक जे प्रक्रिया अछि तइमे तँ परीक्षा होइते आबि रहल अछि।

खेला-पीला पछाइत जखनदीनबन्धु काका ओछाइनपर पड़ला आ निन्द्राक आगमन हुअ लगलैन तखन चिन्त्य मनमे काल्हुक काज धियानमे जगैत एलैन। धियानमे जगिते नजैर छिटैक कौल्हुका केसपर गेलैन। उठि कऽ बैइसैत पत्नीकेँ सोर पाड़ि बजला-

''कनी एम्हर आएब।''

'कनी एमहर आएब' सुनिते प्रेमलता अकचकेली। किएक तँ दीनबन्धु काकाकेँ ओछाइनपर गेला आधा घन्टा भऽ गेल छेलैन। परिवारक लोक सभ बुझिते छैन जे जहिना काज लग पहुँचते काजमे हाथ लगा दइ छैथ तहिना ओछाइनपर पहुँचते निन्द्रासँ तन्द्रा होइत निनिया देवीक कोरामे पहुँच जाइ छैथ, तँए अधिक-सँ-अधिक पाँच मिनट समयक दूरी जागल आ सुतलक बीच हिनका लगै छैन। ओना, प्रेमलता अखन तक ओछाइनपर नहि गेल छेली किएक तँ मरदा-मरदीकेँ खुएला-पीएला पछातिये ने स्त्रीगण सभ खेबो-पीबो करै छैथ आ बरतन-बासन धोइत-उसारैत एक-सबा घन्टा बीचमे लगिये जाइ छैन। अकचकाइत प्रेमलताक मनमे भेलैन जे भरिसक किछु सपना देखलैन तँए एहेन अवाज मुहसँ निकललैन। तथापि शान्त-चीत भऽ प्रेमलता बजली-

''कनी हाथ लागल अछि, अबै छी।''

योजनाबद्ध ढंगसँ विचारैत दीनबन्धु काका विचारि नेने छला जे परिवार हुअ आकि समाज, अपन जवाबदेहीक जे काज अछि ओ अगुआ कऽ चलबे ने इमानदारीक परिचय दइए। पत्नीकेँ लगमे अबिते दीनबन्धु काका बजला-

''दस बजेसँ कोट-कचहरी खुजैए तइसँ पहिने एक घन्टाक रस्ता सेहो टपब अछि, तँए साढ़े आठ बजे अहाँ भोजनक प्रबन्ध करि लेब। जलखै नइ करब, एकेबेर खाइये कऽ घरसँ निकलब।''

ओना, प्रेमलता गपक पियाहुल लोक छैथ तँए किछु गप-सप्पकेँ आगू बढ़बैक विचारसँ केसक विषयमे खोर-चाल करब मनमे जगबे केलैन मुदा बरतन-बासनकेँ उसारब आ पतिकेँ सुतैमे बाधा उपस्थित करब विचारकेँ रोकि देलकैन। तँए, प्रेमलता एतबे बजली- ''बड़बढ़ियाँ।''

पत्नीक मुहसँ 'बड़बढ़ियाँ' सुनि अपन गोटीकेँ सहपर चलैत देख दीनबन्धु कक्काक योजना अन्तिम चरणमे पहुँच गेलैन। काजक अन्तिम साँस लैत विचारलैन जे चारि बजे भोरे ओछाइन छोड़ि पहिने संगी-साथीकेँ जना देब अछि। पछाइत अपन नित्य-कर्म दिस बढ़ैक अछि। किएक तँ सबहक अपन-अपन नित्य-कर्म अछि तइमे जेते समय लगैए ओ तँ सभकेँ लगबे करत, तँए जँ पहिने अपन नित्यकर्म दिस बढ़ब तँ हो-न-हो केकरो नीन समयपर नइ टुटइ। अन्तिम निर्णय मनमे जगिते निनियाँ देवीक लगौल टौहकीमे दीनबन्धु काका फँसि गेला।

जहिना सुतैक अन्तिम बेलामे चारि बजे भोरे उठैक बेल दीनबन्धु काका रोपि लेलैन तहिना चारि बजे आँखि खुजि गेलैन। आँखि खुजिते घड़ीपर नजैर दिअ लगलैथ कि देवाल घड़ीक घन्टी टनटनाए लगल। जेकरा गनि दीनबन्धु काका जखन धड़ीपर नजैर खिरौलैन तँ ठीक चारि बजि रहल छल। ओछाइनसँ उठिते अपना संग तीसक जमानतदारक संग एक साथ कचहरीमे उपस्थित हेबाक छेलैन। मनमे कने शंका जगलैन जे अपना देवाल घड़ी अछि तँए समयक गवाही बनि गेल, मुदा जेकरा घड़ी नइ होइ ओ तँ सुतले रहि जाएत। जखने एक गोरेकेँ बिलम हएत तखने तीसो बिलमबे करत। से नै तँ दोसरो-तेसरोकेँ उठा दिऐ जे ओहो सभ उठि कऽ अपन-अपन काजमे लगि जाएत।

मनमे काज अबिते काजक रूपकेँ निहारए लगला। अपना छोड़ि उनतीस आदमी अछि जेकरा घरे-घर सबहक ऐठाम जा-जा कऽ जगाएब अछि, ऐमे जँ पँच-पँचो मिनट समय लागत तखन तँ पाँच मिनट कम अढ़ाइ घन्टा समय लगि जाएत! तहूमे कोट-कचहरीक काज छी, बिनु पाइये चलत नहि, जँ कहीं केकरो पाइक ओरियान नहि भेल होइ तखन तँ आरो काजमे काज जनमिये जाएत किने, जइसँ आरो बेसी समयक नोकसान हएत। अढ़ाइ घन्टा समय निकलला पछाइत जँ अपने अपन नित्य-कर्म दिस बढ़ब तखन तँ अपने सभसँ पछुआ जाएब। यएह ने विपरीत परिणामक विपरीत क्रिया भेल, से नै तँ काजकेँ सघन रूपमे करैक अछि। सघन रूप भेल, एक गोरेकेँ उठेलौं, उठला पछाइत दू गोरे भेलौं, दुनू गोरे दू गोरेकेँ उठौला पछाइ चारू गोरे चारि दिस भऽ गेलौं। जइसँ आठ भऽ जाएब, आठसँ सोलह भऽ जाएब, जइसँ पनरह-बीस मिनटमे सभ जगि जाएत। दस बजे कचहरीमे हाजिर हेबाक अछि तइ बीचक जे काज अछि ओइमे जँ एक-एको मिनटक बचत करैत चलब तँ पनरह-बीस मिनट पुरिये जाएत।

घरसँ जे सोचि दीनबन्धु काका निकलला, रस्तामे तइ सोचमे अशोच जगलैन। अशोच ई जगलैन जे कोट-कचहरीक काज छी, मधुबनी पहुँचते पहिने मुंशियो आ वकीलो साहैबसँ भेँट करब अछि, पछाइत कोर्ट-ऑफिसक सेहो पता लगाएब अछि जे बन्द रहत कि खुजल रहत। खुजलोमे जज साहैब उपस्थित हेता कि नहिइत्यादि-इत्यादि अनेको काज दीनबन्धु कक्काक नजैरपर आबि गेलैन। सभ जुति-भाँति लगबैत घरपर अबैत-अबैत आठ बजि गेलैन। माने चारि घन्टा समय बीत गेलैन। ओना, अपन नित्यो-कर्मो आ चाहो-ताहो रस्ते-रस्ते पार-घाट लगि गेल छेलैन।

घरपर अबिते दीनबन्धु काकाकेँ नहाइसँ पहिने विचार उठलैन जे गामक चौहद्दी ने बान्हि लेलौंमुदाघरक की हाल अछि सेहो तँ जानबे अछि। आँगन पहुँच, पत्नीकेँ अछप्पे पुछलखिन-

''भानसक की हाल अछि?''

तरकारी कटैकाल प्रेमलताकेँ बामा हाथक आँगुरमे थोड़ेक कटि गेल छेलैन तँए मन पीड़ासँ पीड़ाएल रहैन। बजली-

"हाल की रहत, बेहाल अछि!"

पत्नीक तामसकेँ दीनबन्धु काका आँकि नहि सकला। आँकबो असान नहियेँ छेलैन, किएक तँ दरबज्जा दिसक मुहसँ आँगन प्रवेश केने छला आ आँगन दिसक रस्ता दिस घुमि प्रेमलता मुड़ी गोंति बैस कटल आँगुरकेँ दहिना हाथक आँगुरसँ दाबि कऽ पकड़ने छेली। ओना, पत्नीक मुहसँ सुनल 'बेहाल' शब्दक दोसर माने दीनबन्धु कक्काक मनमे उठि गेल छेलैन जे भरिसक कोनो कारणे भानसमे गड़बड़ भेल अछि। सहटैत दीनबन्धु काका पत्नी दिस बढ़ला। ओना, कक्काक मनमे तेहेन उमकी उठि गेल रहैन जे जहिना कोनो प्रेमी अपन प्रेमिकाकेँ सात अरब लोकमे सभसँ नीक रूप देखैए तहिना आनन्दसँ आन्दोलन कएल आन्दोलनीक तेहेन रूप पकैड़ नेने छेलैन जे दुनियाँक कोनो दोसर समस्या आकि दोसर काज हवा जकाँ उड़ियाइत बुझि पड़ै छेलैन। आध लग्गा हटलेसँ देखलैन जे पत्नी बामा हाथक कटल आँगुरकेँ दहिना हाथक आँगुरसँ कसि कऽ दाबि खून रोकने छैथ। धरतीपर पसरल खून, आँचरसँ आँगुर दाबि कऽ पकड़ने प्रेमलताकेँ बिजलोका जकाँ बिजकल मुँह देख एकाएक दीनबन्धु कक्काक मनमे विचारयुद्ध ठाढ़ भऽ गेलैन। एक दिस अपन जिनगीक ओ समय जे सेशन केसक जजमेन्टक दिन छी, एहिठाम भाग्यक पलटा-पलटी हएत तँए कोर्टमे उपस्थिति भऽ डटैक लेल तैयार रहबअछि आदोसर दिस पत्नीक कटल आँगुरक इलाज नइ कराएब तँ हो-न-हो लोहासँ कटल छैन, कहींएक बिमारीमे दोसर बिमारी ने ठाढ़ भऽ जाए..!

बिमारीमे बिमारी जगने जहिना पत्नीकेँ मरैक सम्भावना दीनबन्धु काकाकेँ बुझि पड़लैन तहिना कोर्टमे अनुपस्थित भेने अपनो मृत्यु नजैरपर एबे केलैन। कोर्टसँ लऽ कऽ बाहर तकक लोक कहबे करत जे जाबे ओ अपराधी नहि अछि ताबे कोर्टसँ नुकाएल किए..?

दीनबन्धु कक्काक मन ओझरीमे ओझराए लगलैन। मुदा लगले मनमे निर्णित विचार जगलैन। पहिल, जीवन तखन ने जिनगी। अखन अपन मृत्युक परवाह करब आकि अनकर? एक तँ ओहुना जँ परवाह-परवाहक अन्तर काजक वजनसँ नापल जाइए...।

नव ऊर्जाक संग दीनबन्धु काका विचारकेँ रोकि बजला-

"केना आँगुर कटल?"

प्रेमलता बजली-

"तरकारी-ले बैगन बनबै छेलिऐतहीकाल नवटोलवाली कनियाँ धड़फड़ाएल आबि बाजल।"

समयक संकीर्णताकेँ देखैत दीनबन्धु काका बिच्चेमे बजला-

"की बाजल?"

"बाजल जे झंझारपुर लग एन.एच.पर एकटा चरि-चकिया गाड़ी उनैट गेलै तइमे एकटा खूब मोटगर-डटगर मौगी चक्का-तरमे मुँह बाबि मरि गेल।"

पत्नीक बात सुनि दीनबन्धु कक्काक मन मानि गेलैन जे पत्नीक मन उछैट कऽ ओमहर चलि गेल हेतैन जइसँ बैगनक संग-संग अपनो आँगुर काटि लेली। बजला-

"बैगन काटैकाल ने आँगुर कटल। तइसँ पहिलुका विहीत तैयार भेल अछि किने?"

मुड़ी डोलबैत प्रेमलता बजली- "हँ, भात-दालि तँ बनि गेल मुदा तरकारी नइ बनल।"

मने-मन दीनबन्धु काकाकेँ काम-चलाउ संतोख भइये गेलैन। बिहुसैत बजला- "अहाँ सन सन जँ गपक पियाहुल लोक[i] रहत तँ लोकक[ii] उपकार सभ दिन होइते रहतैन।"

बजैक क्रममे दीनबन्धु काका बाजि तँ गेला मुदा लगले मन बिचड़ैत विचार देलकैन जे समाजक बीच कर्मक जिनगीक संग गपोक जिनगी बनि गेल अछि। काज आ गपक बीच नमहर दूरी बनि गेल अछि। जे बनब सोभाविको अछि। जहिना एक छोरपर महिला दिन-राति अपन दुख-धन्धाक पाछू बेहाल अछि तहिना दोसर छोरपर ईहो तँ अछिए जे महिला जगतमे की ओहन महिला नइ छैथ जिनका जिनगीक हर काजक लेल नोकर-चाकर नहि छैन। तखन तँ प्रेमलता ओहन छैथ जिनका बीच-बिचाउमे देख सकै छी।

प्रेमलता बजली- "आब की करब?"

दीनबन्धु काका बजला- "किछु ने करब। सभ काज रस्तासँ होइ छै, रस्तासँ करब। संगी कऽ दइ छी, डॉक्टर ऐठाम जा कऽ पहिने पट्टी बन्हबा दवाइ लऽ लिअ। हम अपनेसँ परोसि कऽ खा लेब।"

q

शब्द संख्या : 1420, तिथि : 13 जुलाई 2018

उदय-प्रलय

विदेशसँ पी.एच-डी.क डिग्री पाबि धरणीधर गाम पहुँचला। गाममे पएर दइते गामक बात मन पड़ए लगलैन- यएह गाम छी, जैठाम सात पुस्तसँ बास अछि आ आगूओ केतेक दिन धरि बसले रहब। मुदा लगले समाजिक परिवेश सोझामे आबि धमकलैन। धमकलैन ई जे जहिना अपन जन्म ऐ सुखपुरमे भेलतहिनाबच्चामे पालन-पोषण सेहो भेल, पछाइत गामेक स्कूलमे शिक्षा पेबा लेल पिताजी नाओं लिखा देलैन। दस बर्ख धरि गामक स्कूलमे पढ़ि पड़ोसी गामक हाइ स्कूलमे नाओं लिखेलौं आ हाइ स्कूल टपला पछाइत दरभंगा कौलेजमे नाओं लिखा एम.ए. पास केलौं। पढ़ैक अपन जिज्ञासा आ परिवारक सहयोग पेब विदेशसँ विशेषज्ञताक डिग्री सेहो उपार्जित केलौं। डॉक्टर वा आन प्रोफेसर जकाँ तँ नहियेँ भेल जे किछु दिन नोकरी केला पछाइत विदेश गेलौं। नोकरी करैसँ पहिने विदेशसँ डिग्री हाँसिल केलौं, आब नोकरी करब।

'आब नोकरी करब' वाणीमे अबैत-अबैत धरणीधरक अपनो जिनगीक बानि उबानिसँ सुबानि हुअ लगलैन। उबानि-सुबानिक बीच बाटपर धरणीधरक मन ठमकए लगलैन। एक दिस पूर्वक सात पुस्तसँ गाममे बासभूमि रहल आ आगूक तँ निश्चित ठेकानो नहियेँ अछि जे केतेक दिन रहत। निश्चित ठेकान ऐ दुआरे नहि जे समाजिक परिवेश एहेन बनि गेल अछि जे पढ़लो-लिखल आ बिनु पढ़लो-लिखल लोक अपन बाप-दादाक जन्मभूमि छोड़ि-छोड़ि अनतए बसए लगला अछि, तँए गाम उपैट गेल सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए। अखनो ओहन गाम अछिए जे अनेको पुस्तसँ बास करैत अनेको परिवारक वंश आबियो रहल अछि आ आगूओ केतेक पुस्त धरि बसबे करत...।

एकाएक धरणीधरक विचारक व्यारमे लपट उठलैन। लपट ई उठलैन जे गाम छोड़ि जे कियो बहराइ छैथ तेकर हजारो कारण अछि, से अखन नहि, अखन एतबे जे जे अपन गामकेँ चीन्हि गामसँ बहराइ छैथ वा बिना चीन्हने गामसँ बहराइ छैथ। जँ गाम चीन्हि बहरेता तँ गामो जरूर चीन्हतैन आ जँ गामकेँ बिनु चीन्हने जे बहराइत हेता, तँ हुनका संग गामे किए चीन्हि-पहचीन्ह रखतैन?

...ऐठाम आबि धरणीधरक वैचारिक व्यारक लपट सेहो लपटए लगलैन। ओना, धरणीधरक सोभावो अन्वेषी बनि गेल छैन। मुदा अन्वेषियोक तँ अपन संसार छै,आगूमे जे संसार ठाढ़ अछि तोहूसँ किछु लइ छैथ आ अपन जे संसार[iii] निरमै छैन तोहूसँ उपार्जित करै छैथ...। दुनू संसारक बीचक क्षितिजपर लटकल धरणीधर ने ऊपर चढ़ि रहल छला आ ने निच्चेँ उतरल होइन। एक दिस गाम-समाजक विराट रूप, जे रूप यशोदा मैंयाकेँ कृष्ण अपन बालपनेमे देखौने रहथिन आ दोसर ओ विराट रूप जे महाज्ञानी-महापण्डितक संग दुर्योधनक दरबारमे देखौने छेलैथ, दुनूक बीचक जे हजारो योजनक दूरी अछि तइ दलदलमे धरणीधर फँसि गेला।

ओना, अनजान सुनजान महाकल्याण सेहो होइते अछि मुदा ओ जीवन-मृत्युक बीचक बाट छी किने तँए, थोड़ेक कठिन, थोड़ेक उकडू आ थोड़ेक भारीक संग जबदाहो अछिए। गाम दिस उनैट कऽ जखन धरणीधर देखए लगला तँ बुझि पड़लैन जे नवतुरिया छौड़ा सभसँ जँ किछु बुझए चाहब आ पुछबै तँ ओकरा बकछुहुल लगतै। तेकर कारणो अछि। आजुक जे नवसृजन भऽ रहल अछि ओ ठीक विपरीत दिशामे अछि, जइसँ ओ लगले कहत जे फल्लाँ गुरुआइ करए चाहैए। ओना, एकर दोसरो पक्ष अछि, जँ अहाँ परिवारसँ समाज धरिक बच्चाक बीच बालपन रूपमे रमि किछु पुछबै तँ ओ एहनो बहुत बात सोझामे रखि दइए जेकर नाँगैर पकैड़ अहाँ नेंगरियबैत ओकर मुँह धरिक परिचय पेब सकै छी। ओना, उम्रक कारणे वा उदित ज्ञानक कारणे धरणीधर ने आगू सोझ[iv] बाट देख रहल छला आ ने मनविचार पाछू सहैट रहल छेलैन। हराएल-भोथियाएल बाटपर ठाढ़ बटोही जकाँ धरणीधर चारू दिस चकोना भऽ भऽ देखए लगला। मुदा केम्हर मुहेँ बढ़ब से निश्चय कइये ने पाबि रहला अछि। ओना, धरणीधरक मनक बीच स्पष्ट रूपमे विचार जगि चुकल छेलैन जे जहिना कोनो भूमिक[v] लेल मनुखक खगता अछि तहिना मनुखोक लेल भूमिक खगता सेहो अछिए। ओना, खाली मनुखे मात्रकेँ नहि, आनो-आनो जीव-जन्तुक लेल भूमिक खगता अछिए। मुदा ओकरा ने चिन्तन शक्ति छै आ ने सोचन क्रिया...।

इतिहासक विद्यार्थी रहने धरणीधरकेँ एतेक तँ मनमे छैन्हे जे केना-केना राज-पाटक छीना-झपटी दुनियाँमे होइत आबि रहल अछि आ कोन-कोन रूप[vi]क देश दुनियाँमे बनल-बसल अछि। मुदा किए अछि आ किए भेल से बुझिये ने पेब रहल छला। खाएर.., अन्वेषी मन धरणीधरक बनियेँ गेल छेलैन तँए देखल संग मन किछु दूर बिनु-देखलोक आगू दिस दौड़िये जाइ छेलैन। मुदा जेतएसँ सुनसान बुझि पड़ैन तेतए-सँ घुमि जाइ छला। आगू दिस जखन नजैर उठैन तँ देख पड़ैन जे दुनियाँक जननिहार विशेषज्ञ रहितो अपन गाम-घरक इतिहास जनिते ने छी। ओना, एहेन दुर्भाग्य मिथिलावासीकेँ शुरूहेसँ रहलैन जे अध्यात्मिक रूपमे मिथिलाक परिचय भेलैन मुदा वैज्ञानिक रूपमे नहि भेलैन अछि जइसँ ज्ञान रहितो सज्ञानसँ दूर छथिए। किएक तँ ज्ञानक पाछू विज्ञान अबैए आ विज्ञानक पाछू सज्ञान अबैए...। लगले मन पिघैल कऽ मोमबत भऽ गेलैन। मोमबत होइते धरणीधरक मन बिचड़ए लगलैन- अखन तक विद्यार्थीक जिनगी रहल, एक अध्येताक रूपमे गुजैर रहल छी, जँ केतौ प्रोफेसर भेल रहितौं तखन किछु पदक मदो रहैत मुदा से तँ अछि नहि। किए ने अपन गामेक बुढ़-पुरानसँ अपन गामक इतिहासक पता लगाबी। ज्ञाने तँ एहेन गुण छी जे केकरोसँ कियो छिपबैत नहि अछि। ई दीगर भेल जे ज्ञानोमे क्षलज्ञान कहियौ आकि चोरज्ञान आकि बलज्ञान सेहो अछिए जे एक-दोसरकेँ छलितो अछि, चोरोबितो अछिआछीनतो अछिए। मुदा जैठाम तीनू संगे अछि, तैठाम तँ थोड़ेक भरिगर भइये जाइए। अन्वेशी सोभाव रहने धरणीधरकेँनिर्णय करैमे सिर-संकोच नहि होइन। निर्णय कऽ लेला जे गाममे ने कियो दोस छैथ आ ने दुश्मन, सभ गौंआँ भेला तँए किनको ऐठाम जा कऽ पुछब (बुझब) सँ हिचकब नहि। सभठाम जाएब आ सभसँ गामक पुरान गति-विधिसँ लऽ कऽ आजुक गति-विधि तक जानैक कोशिश करब। जेतेक भेटत तेतेक अपन अनुसंधान भेल जे नहि भेटत ओ ऐगला पीढ़ी-ले रहत।

दोसर दिन धरणीधर गामक जे सभसँ बुढ़ बड़गद बाबा छला तिनका ऐठाम पहुँचला। बड़गद बाबा एक जोड़ बकरी लऽ कऽ चरबैत रहैथ। अपने बड़क गाछक निच्चाँक छाहैरमे बैसल आ बकरी बाधमे चरैत रहैन।

धरणीधर पहुँचते बजला-

"बाबा, अहींसँ किछु बुझैक अछि?"

ओना, पहिने बकरी चरबाह बड़गद बाबाकेँ अनसोंहाँत लगलैन जे हमरा सन बुड़िवानसँ एकटा नवजुगक बुधियार लोक की पुछत..! मुदा अपन उमेरक लेहाज करैत बड़गद बाबा बजला-

"बाउ, बकरी चरवाह सन लोककेँ बुइधिक ओकाइतिये केते रहै छै जे किछु पुछब, मुदा जएह रहै छै ओइसँ जँ दोसरकेँ उपकार हएत तँ ऐसँ पैघ कीर्तिये की हएत आ दाने की हएत।"

धरणीधर बजला-

"बाबा, अहाँ तँ अस्सी बर्खसँ ऊपर चढ़ि गेल छी, तँए अस्सी बर्खक दिन-रातिक घटना तँ गामक देखल-सुनल अछिए।"

बड़गद बाबा बजला-

"बौआ, जेते देखलौं आ जेते गुणलौं ओते जँ मन रखितौं से ओहन चौरगर बुइधिक बखारी थोड़े अछि। मुदा तैयो नइ सोलह अना तँ सोलह पाइयो बरबैर नइ अछिसेहो नहियेँ कहल जा सकैए।"

धरणीधर-

"आब तँ उमेरक हिसाबसँ ऐसँ भारी, माने बकरी चरवाहिसँ भारी काजो नहियेँ कएल हएत, तखन तँ जीवन-ले किछु करब आवश्यक अछिए।"

धरणीधरक विचारमे जेना बड़गद बाबाकेँ अमृत भेट गेल होनि तहिना मन तिरपित[vii] भेलैन। बिहुसैत बजला-

"बौआ, अहाँ नव पीढ़ीक लोक छी, अखन दुनियाँमे पएरे रखलौं अछि, नीक जकाँ भरिसक रोपाएलो हएत कि नहि से तँ हमरा नइ बुझल अछि।"

बड़गद बाबाक विचारमे धरणीधरकेँ की भेटलैन से तँ असल धरणीधरे बुझता, मुदा मुँहक रोहानी कहए लगलैन जे जेना सजमनिक सिर भेट गेल होइन। लंकामे राम-रावणक लड़ाइमे मेघनादक वाणे जखन लक्ष्मण मुरछेला तखन जीबैक लेल मात्र सिर सजमनियेक खगता पड़ल रहैन, जे हनुमान सुमेर पर्वत उठा कऽ आनि पुरौलकैन। पएर रोपैक बात सुनि धरणीधर बजला-

"बाबा, पएर रोपैसँ पहिने जगह-जमीन चाही किनेआतेकरो पहिने चीन्हब तखन ने ओइपर अजमा कऽ पएर रोपब।"

ओना, धरणीधर जइ रूपे बुझए चाहै छला तइ रूपे तँ बड़गद बाबा नइ बुझा सकै छेलैन, मुदा एते तँ मनुखक सोभावमे रहिते अछि जे दस-पाँच छोड़िसैंकड़ामेनबे-पनचानबेटा ओहन लोक तँ छथिए जे प्रश्न बुझैथ वा नइ बुझैथ मुदा किछु-ने-किछु जवाब देबे करता, भलेँ ओ प्रश्नक उत्तर होउ वा नइ होउ, प्रश्नसँ मेल खाउ वा नइ खाउ...। मुदा एते तँ धरणीधरक अन्वेशी सोभाव मानियेँ गेल छेलैन जे जँ कोनो विचारक छाहोँ-छूँह देख लेब तँ ओइसँ अनुमान कइये सकै छी जे पहाड़क छाँह छी आकि गाछ-बिरीछक,तँए धरणीधरक मन प्रमुदित भइये गेल छेलैन।

बड़गद बाबा बजला-

"बौआ, आइ दस बर्खसँ बकरी चरवाहि करै छीजइसँ दुनू परानीक दुनू साँझक बुतातक जोगार भऽ जाइए।ओना, बेटा-पुतोहु सेहो अछि मुदा ओकरा तँ अपने तेतेक डारि-पात भऽ गेल छै जे दिन-राति हेरान रहैए। बाल-बच्चा अवोध छै, ओ कियाँने गेल जे उपार्जन केकरा कहै छै आ एकर की खगता लोककेँ छै, मुदा हमर तँ धाँगल जिनगी अछितँए बातकेँ बुझै छी।"

बड़गद बाबाक कर्मठता सुनि धरणीधर बजला-

"बाबा, ईहो तँ लोक कहै छै जे 'बड़ रे बालकएक समाना' माने जहिना बच्चा तहिना वृद्ध दुनू एके रंग भेला।"

बड़गद बाबा बजला-

"बाउ, एके मुहेँ लोक केकरो गारियो पढ़ैए आ केकरो आसिरवचन सेहो दइए, मुदा दुनू एक थोड़े भेल। बच्चा जिनगी (मनुखक) पूर्व पक्ष भेल, वृद्ध उत्तर पक्ष भेल, तँए दुनूकेँ एक थोड़े मानल जा सकैए।"

धरणीधर बजला-

"बाबा, बकरी चरवाहिसँ पहिने की करै छेलिऐ?"

मुस्की दैत बड़गद बाबा बजला-

"महराइ गबै छेलौं। भरि-भरि राति अपने ढोलको बजबी आ महराइयसँ लोककेँ जगेबो करिऐ, मुदा गाम दिस जखन नजैर उठा तकै छीतँ अपनासँ पुरान[viii] कहाँ केकरो देखै छिऐ। अखन जेतेक लोक गाममे अछि, ओकर जनम हमरा आगूमे भेल छइ।"

धरणीधर बजला-

"अपन मन केहेन कहैए?"

बड़गद बाबा-

"मन की कहत, जिनगी जीबैमे कहियो अभाव भेल जे मन किछु कहत आकि उपराग देत। उपरागक भागी तँ ओ अछिजे परजीवी अछि, वा जे अनका भरोसे जीबैए।"

बड़गद बाबाक बात सुनि धरणीधरकेँ जेना मन प्रस्फुटित भऽ गेलैन तहिना सोलहन्नी मुस्कान दैत बजला- "वाह!"

'वाह' सुनि बड़गद बाबा फुटि पड़ला-

“गामक माटि-पानिक उदय-प्रलय केना भेल आ केना होइए, गामक उदय-प्रलय केना होइए, मनुखक उदय-प्रलय केना भेल आ केना भऽ रहल अछि। तहिना दुनियोँक उदय-प्रलय केहेन अछि आ केहेन हएत, एते बात बुझैक ने खगता अछि वाउ आ ने बुझिये पएब। तखन तँ..?”

धरणीधरक मन जेना भरि गेल होनि तहिना बजला-

“बाबा, चाह पीबैक बेर भऽ गेल अछि, अखन जाइ छी।”

बड़गद बाबा-

“बाउ, नव पीढ़ीक कर्ता-धर्ता अहीं सभ छी, हमरो सभपर धियान राखब।”

q

शब्द संख्या : 1574, तिथि : 15 जुलाई 2018

---

[i]पत्नी

[ii]पतिक

[iii]सोचन क्रिया

[iv]स्पष्ट

[v]जन्मभूमिसँ लऽ कऽ बासभूमि माने देशक

[vi]भौगौलिक

[vii]तृप्ति

[viii]उमेरक हिसाबसँ, उमेरगर

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

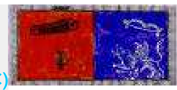
३. पद्य

३.१. नन्द विलास राय- किछु कविता

३.२.कवि प्रीतम कुमार निषादक किछु कविता

३.३.रामविलास साहु- किछु कविता

३.४.१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २.कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु कविता


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

नन्द विलास राय

सभसँ पैघ माए-बाप

सुनू यौ बाबू, सुनू यौ भैया
सुनू लगा कऽ धियान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे आन यौ।

माएकेँ बुझू माता पारबती
पिता शंकर भगवान यौ
पएर छुबि दुनूकेँ करियौ
सुति-उठि कऽ प्रणाम यौ।

नअ मास धरि अपन पेटमे
माए अहाँकेँ रखलैन यौ
अहाँ खातिर, अपन सुख-सुविधा दिस
घुरियो कऽ ने तकलैन यौ
पिताक कोरामे केलौं पैखाना
तेकर ने कोनो ठेकान यौ
माए बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

कन्हपर लऽ कऽ पिता अहाँकेँ
समूचा गाम घुमबए यौ
माए अहाँकेँ गोदीमे लऽ कऽ
लोरी गाबि सुनबए यौ
अहाँकेँ नीक भोजन भेटए से
हरदम रखलैन धियान यौ

अहाँक जिनगी नीक बनए
केलैन नइ कहियो आराम यौ
माए बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

गरीब रहितो माए-बाप अहाँक
कन्वेंटमे नाओं लिखौलैन यौ
अपन माथपर चाउर-दालि सभ
होस्टलमे पहुँचेलैन यौ
माए अहाँक गहना बेचलैन
पिता बेचलैन जमीन यौ
बेटा हमर हाकिम बनतै
हेतै हमर सुदिन यौ
जिनगीमे कहियो यौ बाबू
करब नइ एहेन काज यौ
माए-पाक माथ झूकत
आओर भऽ जाए अपमान यौ
हुनका सभकेँ आशा बड़ छैन
आओर पूर्वक काज करब सभ
करब समाजक विकास यौ
करबैन रौशननाम हुनक अहाँ
आओर बढ़ेबैन शान यौ
अहूँकेँ भेटत सम्मान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

दस लाख टकाक दहेज बुड़ौलिऐ
अपने पसिनक कनियाँ अनलिऐ
तैयो केलैन कबूल यौ
केतबो बड़का गलती करैथ ओ सभ

देबैन नइ कहियो तूल यौ
माएकेँ बुझब माता जानकी
पिताकेँ भगवान राम यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

माए-बाप जखन
अथबल भऽ जाइथ
भऽ जाइथ
जखन लाचार यौ
हुनका सबहक भार उठेबैन
बनि कऽ श्रवण कुमार यौ
पुरा करबैन हुनक मनोरथ
देखेबैन चारू धाम यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...।

सेवासँ बढ़ि कऽ नइ कोनो व्रत अछि
आ ने धार्मिक अनुष्ठान यौ
तीनू लोकमे सभसँ पैघ माए-बाप
आओर छथिन बड़ महान यौ
माए-बापसँ पैघ नइ अछि कियो
तीनू लोकमे...। q

इन्दिरा आवास

एक दिन मुखियाजीक चमचा एलैथ
ओ हमरासँ हाथ मिलौलैथ

हम हुनका कुर्सीपर बेसौलयैन
प्योर दुधक चाह पियौलयैन
खैनीमे चुन मिलेलौं
अपनो खेलौं हुनको खियेलौं
खैनी खा कऽ ओ बजला
अपना असंवाक भेद खेललाह।

बड़ मोसकिलसँ मुखियाकेँ मनेलौं हेन
अहाँक नाओं हुनका डायरीमे लिखेलौं हेन
ओ कहाँ मानै छला
अहाँकेँ कहाँ जानै छला
जँ करेबाक हुअए काम
तँ जल्दी करू इन्तजाम
जुनि करू सोच-विचार
लाउ टका पाँच हजार
नहि तँ दोसरो अछि तैयार
मुदा अहाँ अपन छी खास
अहाँपर अछि पूरा बिसवास
दियाएब अहाँकेँ इन्दिरा आवास
की यौ अहाँकेँ नहि लागल
हमर बात रास।
ऐ बकलेल बनि जाएत
मोफतमे अहाँकेँ मकान
भऽ जाएत धिया-पुताक कल्याण
समाजमे बढ़ि जाएत अहाँक मान
अहाँ बुझब एकरा अपन शन
जँ हमर गप्प अहाँकेँ कनीको पसन अछि
तँ जल्दी करू भैया किएत समय चन्द अछि।
नहि तँ बादमे बड़ पचताएब
आ हमर दिमाग खाएब

मुदा हम की किछु कऽ सकब
अहाँकेँ की किछु दऽ सकब।

आखिर हम चमचाजीक बातमे एलौं
महाजन लक्ष्मी भैयाक ओइठाम गेलौं
हम केलिऐन हुनकासँ अर्ज
यौ महाजन दिअ हमरा पाँच हजार टका कर्ज
लऽ लिअ कागजपर औंठा निशान
मुदा टाका करू जल्दी भुगतान।

ई लिअ रूपैआ करू अपन काम
समयेपर आपस करब
नहि तँ भऽ जाएत अहाँक महींस नीलाम।

हम देलिऐन चमचाजीकेँ टका पाँच हजार
ओ मुस्की दैत भऽ गेला फटफटियापर सवार
हम केतेको बेर ब्लॉकक चक्कर लगेलौं
मुदा आइ धरि इन्दिरा आवासक राशि नहि पौलौं।

ब्लॉक दौड़ैत-दौड़ैत हमर चप्पल घिसल
ओमहर महाजनक टाका आपस करबाक समय बीतल
हम चमचाजीसँ कहलयैन
अपना बोलीमे साए मन मिश्री घोरलयैन
यौ नेताजीअन्नतादा, बड़का बौआ
कृपाकय आपस कऽ दिअ हमर पाँच हजार ढौआ
मुदा ओ करए लगला टाल-मटोल
किएक तँ हुनकर नेति छेलैन, करब पाँच हजार टाका गोल
हम सोचलौं जे हमरा ठकलक
आ हमर महींस नीलाम करौलक
ओकरो बिगाड़ि दिऐन खेल

आ चमचाजीकेँ पहुँचए दिऐन जेल

मुदा हम ई काज नहि करि सकलौं

चमचाजीसँ लड़ाइ नहि लड़ि पेलौं

किएक तँ आजादीक 72म बर्खक बादो हमरा

जकाँ गरीब असहाय अनाथ छै

जबिक चमचाजीकेँ माथपर

एम.एल.ए; एम.पी.क हाथ छै

आखिर हमर महींस भऽ गेल नीलाम

नहि बनि सकल हमर मकान

बिगड़ल हमर सभ काम

दुख बेचि कऽ करै छेलौं गुजर

आब जीरी रोपैले

करै छी पंजाब प्रस्थान।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

कविप्रीतम कुमार निषादक

किछु कविता

यात्रीक स्मृति

हे साकेती जनकवि बाबा

यात्रीजी लियऽ स्नेह सुमन।

मोन पड़ल अछि अपनेक प्रतिभा

तैं अनुरागी भेल सुजन।।

हे साकेती जनकवि बाबा...।।

संत कबीरक अक्खरता लऽ

फक्कर भऽ घुमलौं सगरो

मिथिलासँ सिंहल लंकाधरि
यात्री भेलौं काशीनगरो
साम्यवाद क्रान्तिक वाणीसँ
काव्यकथा कए देल सृजन
मोन पड़ल अछि अपनेक...
हे साकेती जन कवि बाबा...।।

गाम-कुरीत औ घर-चुल्ही संग
विधवा-विलापक दरद कहल
सत्ताक सनकीसँ निर्भय भऽ
अपनेक लेखनी मरद रहल
तैं काव्यार्थी प्रीतम अर्चए
निवसू यौ बाबा अन्तर्मन।
मोन पड़ल अछि अपनेक...
हे साकेती जनकवि बाबा...।।
¦

अमर शहीदक श्रद्धांजली

भारत मिथिलाक राष्ट्रपूतसँ
मर्यादित माऽए मैथिली...
अमर शहीद विकास मिश्रकेँ
अछि अर्पित श्रद्धांजली।।
रईमा गाम समाजक गरिमा
गौरवसँ किछु सीखली...
अमर शहीद विकास मिश्रकेँ
अर्पित अछि श्रद्धांजली।। 0।।

एहने सन शत सापूत सैनिक
मिथिलाक धरती दैत रहल

इतिहास भूगोल मैथिल पूतसँ
घटना वृत्ति कहैत रहल
कर्णाट तुरक मोगलिया युद्धक
मिथिला योद्धाक रीत ली...
अमर शहीद विकास मिश्रकेँ
कए अर्पित श्रद्धांजली।।1।।

हजारो बरिससँ मिथिलाक आभा
असलान ओइनवार रण पसरल
कामेश्वर वंशज कीर्त्तिसिंह
औ शिवसिंह धरि यश पसरल
कन्दर्पीघाट युद्धक गाथा
मैथिल शहीदक सीखली
अमर शहीद विकास मिश्रकेँ
अर्पित करू श्रद्धांजली।।2।।

तहिना नवयुग काल संगोरए
मिथिला वीर सपूतन केँ
राष्ट्र धर्म औ जन्मभूमि धरि
सहजल सैनिक कर्मणकेँ
मातृ कुक्षिकेँ नमनए प्रीतम
शहीद कीर्त्तियश लिखली
अमर शहीद विकास मिश्रकेँ
दैत रहब श्रद्धांजली...।। 3।।
¦

सार बहिनोई (हँस्सी-चौल)

सार : सुसुसुसु... सुनियौ पाहुन...
दीदीक कहब संगे जाहुन

पड़लहुँ अपनेक पाला, अंगरेजीक ब्रॉदर इनलॉ छी
दुन्नू जीजा-साला...।। 0।।

बहनोई : स-स-स-सड़बे... हेहरई करब...
अहाँक दीदी सँ हम लड़ब...
अहाँ छी गड़बड़ झाला... अंगरेजीक ब्रादर इन लॉ छी...
दुन्नू जीजा-साला...।। 1।।

चाइल-कुचाइल कियऽएदेखबै छी,
अल्हड़ असटाइलमे,
हेल्लो वेल्लो ओके थैंक्यू
कहै छी मोबाइलमे...।।
बुझलौं अपने छी बड़ काबिल
कम्प्यूटर सिस्टमछी।
हम्मर लाइफकेँ बेस मिनिस्टर
केर अपने कस्टम छी।।

सार : तैं एहि सारकनामे हे पाहुन
बहिन करू केवाला...
अंगरेजीक ब्रॉदर इन लॉ छी
दुन्नू जीजा-साला।।2।।

बहनोई : शहर-बजारक नेना छी मुदा
भऽ गेलहुँ बुरहाठी।
टीवी-टेबलेट-लैपटॉप फेसबुक
सँ बनलौं कवि-काठी।।

सार : धऽत्तुरि केहन बुड़बक छी अहाँ
माऽए-बाप शान गिनएलौं
नामी-गामीक सन्तान भऽ कऽ

पुरखोकँ नाम घिनएलौं।।

बहनोई : पुरखा-माऽए-बाप केर जुनि ऊकटू
मुँहपर लगबू ताला
अंगरेजीक ब्रॉदरइन लॉ छी
दुनू जीजा साला...।। 3।।

सार : हँसी-मजाक केर अछि रिवाज तैं
पाहुन हम हुत्थै छी।
सरहोइज-साइरक बत गड़हीमे,
अहाँ सदिखन कुत्थै छी।।

बहनोई : लाजे हम सकदम्म भऽ सभकँ
देल-फजहैतो सुनै छी।
सासुरक मौजक मत्था-पच्ची
गुण-अवगुणकँ गुनै छी।।

सार : चलियौ-भोजन करए पाहुन
गमकए चिकेन मसाला
अंगरेजीक ब्रॉदरइन लॉ छी
दुन्नू जीजा साला...।। 4।।
¦

आहत अगस्त

भारत देशक धरती करुणित
शहीदाञ्जली दऽ प्रणमए हस्त।
धुजातिरंगा दुलरैत बाजए
अछि एखनो आहत अगस्त।।

चहुँदिशि गूंजए पन्द्रह अगस्त

नेना-भुटका संग-लोक व्यस्त
आजाद हिन्द भए रहल त्रस्त
स्वारथ सह-सह देखैछ मस्त
तैं अछि आहत पन्द्रहअगस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

अछि जन प्रतिनिधि मौका परस्त।
भारत मिथिला अछि अस्त-व्यस्त।।
सत्ता सेवक खुशहाल मस्त।
कोन भष्ट पतिक अछि वरद हस्त।।
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

किछु संविधान सुख अछि निरस्त
मर्यादित अछि-फिरका परस्त
किए, आतंकी दिन-दिन प्रशस्त
राष्ट्रीयताकेँ देवए शिकस्त...।। 0।।

आशाक तिरंगा कोटि हस्त
झण्डोत्तोलन भए रहल सस्त
औ, सर्व धर्म समभाव पस्त
हाय, राष्ट्र पर्व केर उदय-अस्त
आहत अगस्त आहत अगस्त...।। 0।।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

राम विलास साहुक

किछु कविता

हमरा मोन पड़ैए

बच्चामे बादशाह जकाँ घुमै छेलौं
चौरी-चाँचरमे कड़हड़ खुनि
भैँट तोड़ि खाइ छेलौं
बाड़ी-झाड़ी घुमि-घुमि कऽ
पकल तिलकोर भुटका
तोड़ि-तोड़ि खाए झुमै छेलौं
आम-लताम बरहर कटहर
बैर तोड़ि हम खाइ छेलौं
बिनु धनि-फिकीरक रहै छेलौं
सभ किछु हमरा मोन पड़ैए।

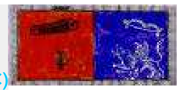
नाच देखै आ महराइ सुनैले
जाइ छेलौं हम कोसो दूर
सलहेश, हल्हारूदल, बिहला
गोपीचन, राजा कुंबर-वृजवान
भिखारी ठाकुरक विदेशिया नाच
राति-राति जगि देखै छेलौं
धर्मराज, दीनाभदरी, लोरिक-मनियारक
महराय संगी सेंगे सुनैत छेलौं
नाचैत-गबैत घर अबै छेलौं
ओहिना सभटा हमरा मोन पड़ैए।

मुदा अखैन कौल्हुक बरद जकाँ
दिन-राति परिश्रम करैत रहै छी
जिनगीक गाड़ी क्षणे-क्षणे
आगू कहुना बढ़बैत चलै छी
परिवारक बोझ पहाड़सँ भारी
माथपर लऽ मरितो सहै छी
कखनो नइए दम मारैक पलखैत
जे घुमि देखब दुनियाँ-दारी
ई बनल अछि सदिखन लचारी
तैयो ने भेल अखनो समझदारी
हराएल हमरा बेवहार पुश्तैनी
मिथिलाक रीति-रिवाज संस्कृति

अखनो ओ दिन रहि-रहि कऽ
सभटा हमरा मोन पड़ैए। q

अनजनुआँ

भोरक पहर उठि कऽ
जखने गेलौं पोखरिक कात
करीनसँ पानि भरि-भरि
गहुम पटबै छेलौं एकान्त
माघक कुहेस केने अन्हार
किछु दूरेक अबाज कान पाथि
जनमौटी बच्चाक सुनलौं
करीनक पानि करीनेमे छोड़ि
अबाज अकानैत खोजैत बढ़ैत
पहुँचलौं पोखरिक दोसर महार
झाड़ी-झंखारमे घास-पातपर
राखल लहुआएल जनमौटी लाल
जननी छोड़ि भेल रहए निप्पता
जे बुझना गेल छी अनजनुआँ
केहेन निष्ठुर छल ओ माता
माइक धर्म-कर्म छोड़ि ओ
केलक कुकर्म जानि अंजानि
मुदा बच्चा देखते हमरा मोनमे
उपजल दया धर्मक भाव
बच्चा उठा कऽ कोरामे लेलौं
झटसँ लेलौं हृदय सटाए
ओढ़नासँ झाँपि जाड़सँ बँचबैत
हर्षित मनसँ अनलौं अपना घर
अबाज देलौं घरवाली पहुँचल
दरबज्जापर आबि कहए लगली
गहुमक पटौनी छोड़ि अहाँ
किएक एलौं घर जानि-प्राणि
कहलौं हम छेलौं नि:संन्तान
सभ कहै छेलए निपुतराहा
मुदा भगवान बनला दयावान



आब बनलौं हम पुत्रवान
पालि पोसि कऽ बनाउ महान
इहए करत वंशक कल्याण
अनजनुऑं बच्चा नै कहतै एकरा
धर्मक माए बाप छै जेकरा। q

धरतीक बोझ

देश प्रेम, मातृ-पितृ भक्ति
जे नर नहि कऽ सकल
ओ मानव नै दानव छी
धरतीक बोझ समान छी।

जे करैए जन-जनसँ प्रेम
से नर देव समान छी
जे दुखियाकेँ दुख हरैए
ओ साक्षात भगवान छी।

जे दोसरकेँ दुख दइए
वएह नर रावण-कंस छी
जे दुख सहि सुख बँटैए
ओ मानव नै महामानव छी।

जे अपने सुखमे बेहाल रहैए
वएह नरकक भोग भोगैए
जे भुखलकेँ रोटी नै दइए
से मानव केना कहा सकैए।

जे मातृ, मातृभूमि, मातृभाषाक
सेवा जीवनमे नहि कऽ सकैए
से इंसान नहि, शैतान कहाइए
तेकरा केना स्वर्गकसुख भेट सकैए।

जे सभ दिन देशकेँ लूटि खेलक
तेकरा धरती केना समाए सकत
गरीबक हक जे मारि खेलक
वएह धरतीपर मलेछ बनल।

जे सभ दिन अनके खेलक
अपन कहियो दोसरकेँ नै देलक
ओकर जिनगी अकारथ भेल
धरतीक बोझ बढ़बैत गेल। ।q

हरबाहाक जिनगी

जाड़क समय ठीठुरैत खाटपर
दुबकल पड़ल रहए फाटल चद्दैरमे
सोचैत रहए कखन हएत भोर
गाए बरदकेँ खुआ जाएब खेत
मुदा जाड़सँ कँपैत रहए सौंसे देह
ओस-कुहेससँ झाँपल छल धरती
संतोख बान्हि सोचलक जाएब खेत
जाड़क ठंढसँ देह झुलैत देख
थोकरा बुटी ओलि धुरा जरा कऽ
देह सेकलक जखन भेल गरम
फुरफुरा उठि हर जोतए लगल
खेत जेतबाक तँ बहुत रहए
मुदा उघारे देह ठरि भऽ गेल शरद
मालिकक डरसँ केना खोलत बरद
चिन्ता रहै घरक, की खाएत धिया-पुता
हूबा बान्हि खेत जोतैत रहल
भूखसँ लूत्ती छिटैक अन्हार लगैत रहए
एक तँ जाड़क मारल देहक हारल
भूखसँ लगैए आब निकलत प्राण
भोरसँ दुपहर भेल, बेर खसल तखन
जलखै लऽ मालिक पहुँचला खेत
बजला- एतबे खेत भोरसँ जोतलेँ
जलखै खाए सभ खेत जोइत दिहक
हरबाहा दुखीत मने कुहरैत बाजल

भूखे मरब जखन स्वर्ग पहुँचब
तखने जोइत देब सभटा खेत। q

माछ

हम छी जातिक माछ
नै बिगाड़ै छी किनको
तैयो तड़पा मारै छी
पोखैर-नदीक कात
सभ मिलि कऽ हमरा जातिकेँ
करै छी जानि विनाश
हम निश्छल जीव छी
सभक करै छी उपकार
मुदा निष्ठुर भऽ मारि खाइ छी
केतेक निर्दयी बनि कऽ
हमर जिनगी उजारि रहल छी
हम पानिक जीव छी
धरतीक अधिकारी अहीं छी
की मजबूरी अछि अहाँ सभकेँ
हमर वंश उजारै छी

केना बुझब दयावान छी
की जीव जीवक हत्यारा छी
विवेकशील छी मुदा
निर्दोषक संघारा छी
अखनो चेतु सीखू
अपनो जीब आ आनोकेँ
जीबैक अधिकार दियौ
हमरो जातिपर उपकार करियौ
दया धर्मक मान रखियौ
आब हम किछु नै कहब
अपने विवेकसँ लिअ काज
हम छी जातिक माछ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

१.अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी) २. कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

१

अनुवादक डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु अनुदित काव्य (मूल रजनी छाबड़ा- हिन्दी)
(PAGHALAIT HIMKHAND

Maithili translation of 'PaighalteHimkhand'
An Anthology of Hindi Poems by Rajni Chhabra from Hindi into Maithili by Dr. Sheo Kumar Prasad.)

साँसक संग

खनकै कंगना
छनकै पायल
ओझरल केश
छितरल काजर।

टुटल-फुटल
साँसक हलचल
धरतीक पियास
मेघक तरपब।

रौद सोहनगर
कुनमुनाइत सन
ओकर छुअब।

एक आँचमे
पघलए तन-मन।

सपना बनि गेल

सपनौती जीवन।

साँस-साँस संग बहब
बिनु कहने सभ कहब। q

चर्चा

ओ संसार हमर नहि भS सकैत अछि
जेतए अहाँक गमक नहि हो
अहाँक स्मृति नहि हो,
चर्चा नहि होजेतए अहाँकेँ
ओ सभा हमरा अनसोहाँत लगैए। q

दिगंतक नजीक

दिगंतक नजीक
करै छी
हमर उमेद

जेतए दू संसार
मिलियो कS
नहि मिलै छइ।

अपूर्ण अछि आस
अपूर्ण अछि मिलन केर आग्रह
आब तँ फूल फुलाइयो कS

नहि फुलैत छै
फुलाएलो-फुलाएल नहि लगैए। q

केहेन उपराग

लाल जागल आँखि
पैछला रातिक
करोट
रात्रिक जागरण
कहियो खतम नहि होमए बला
सत्तैर।

वियोगनिक
यएह
अमाबसक
भाग्य छै
किनकासँ शिकाइत
केहेन उपराग..! q

सुख-दुख

समय केर अन्हारसँ
जुनि डेराउ हे मन।

मेघक अन्तिम छोरपर

चमकैत बिजुरिक
अहाँ अन्दाजि कऽ करू
अपन नाप-जोख।

जखन निकसै छै
गुनगुनाइत रौद
ठरल बसातक पछाइत
ओकर मृदुल-मृदुल स्पर्शसँ
फुलवारीक कोण-कोण
अबाद भऽ जाइ छइ।

सुख आ दुखकेँ
संगे-संग सहैमे
जीवनक सहजता छै।

काँटक नमहर बाट
पारे कऽ कें ने
गुलाब शानसँ
महकै छइ। q

आन

जाहि आँखिमे
हिलैत रहै छल सपना
आब ओहू आँखिमे
बस बिराने-बीरान नजैर अबैए।

देखै छी जखन

पूर्वकालिक छबि
हमरा अपनहिमे
आन देखैत अछि। q

कारण

ओ पुछै छथि
चुप रहै छी किए
ठोर गुम्मे रहल
नोर छलैक जाइए।

की दिऐ हम जवाब
सबाल दुनियाँक सुनि
जखन जिनगीए हमर
सबाल बनि कऽ
रहि गेल-ए। q

सतरंगा आनन्द

सभ ॠतुमे
फुटपाथपर ठाढ़
ओ काँच उमेरक नेना
बेचैत अछि सतरंगा बेलुन
आ छिड़ियाबैत अछि
आनन्द केर रंग।

नन्हकिरबा सभ कुदैत अछि
नान्हिटा हाथमे पकड़ने बेलुन।

बेलुन ओकरो ललचाबै छै
मुदा ओ कहियो
अपनो लेल कीनि पौत?

गरीबी अभिशाप छै
सतरंगा सपनाकेँ
चुरमचूर करए-बला।

ओकरा बचेबाक छै
एक-एक गोट कैंचा
आनए लेल
बेराम माइयक दबाइ।

छोट भाइयक लेल
एक कपटी दूध
सभ दिन पुड़ेबाक छै
अपनाकेँ तँ बस
काममे खटेबाक छै।

एहि सोचमे डुमल
ओकरासँ किछु कीनि कऽ बेलुन
पकड़ा दइ छिऐ
ओकर नान्हिटा हाथमे
ई छोट-छीन उपहार।

ओकर बिमल मुँहपर
चमकलै आनन्द

हमरो दैत अछि ओ
सतरंगा आनन्दक अभास। q

अहाँक थाती

हम जोगा कऽ राखब
अपन देशक खातिर
पैरुखक थाती
अहाँ जे हमरा नाम कऽ गेलौं।

मुस्किया कऽ सहब
सभ समय केर धाह
देशभक्तिक मनसूबा
ने कहियो हएत कम।

बलिदानक फूल
देलौं जे अहाँ आँचरमे
ओकर गमकसँ
गमकतै हमर बतन।

हमहीं जीजाबाई
हमहीं अमर सिंह राठौड़क छी माए
लोरी केर बदला
कहबै बेटाकेँ हम
बलिदानक कथा।

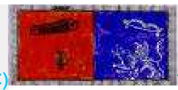
जँ फेर कोनो आफत
एतै देशक मानिपर

आ मंगतै जँ बलिदान
देशक मानि लेल
कऽ देबै हँसैत-हँसैत
अपन दुलरुआ
बलिदान।

जे जान दइ छथि
देशक लेल
ओ छोड़ि जाइ छथि
बलिदानक चिन्हासी
जइपर चलि कऽ
अक्षुण्ण रखै छथि नवतुरिया
मुक्त राष्ट्र, मुक्त संसार। q

बिसबासक मूर्ति

सभ शहरक
सभ गलीमे
किछ प्रार्थना-घर आ
मण्डिल होइत छै
जेतए लोक
अपन-अपन
बिसबासक मूर्ति
बना दैत छथि,
अपन-अपन
बेवहार आ चलैनसँ
ओकरा सजा लइ छथि।


मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

शेष संसारक
धरम-करमसँ
फेर ओ अजान भऽ जाइ छथि।

नहुँ-नहुँ ओ
एना हेरा लइ छथि
सतही प्रार्थनामे,
अपन धरमकेँ ओ
अपन इमानसँ
पटेबाक बदला
रंगि दइ छथि
हुनक लेहुसँ
जे हुनक धरमसँ
इतर छैन।

बिसबासक मूर्ति
बनबैत-बनबैत
हुनका पतो ने चलै छैन
कि ओ अपनहि
कखन मूर्ति बनि जाइ छथि। ٩

२
कवि डॉ. शिवकुमार प्रसादक
किछु कविता

बौआइत

मनुज हृदयक गहन गहवरमे
आर्त क्रन्दनक स्वर भरल अछि
मनुज मनुजकेँ दुतकारैए सदिखन
दस्युकेँ अभिनन्दन करैत अछि।
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि।

अगम अछि ई सृष्टिक रचना
दिनकर तँ उगिते रहतइ
किन्तु ई निश्चित हुनका संगे
नित अन्हारो संगे रहैत अछि।
मनुआँ...।

जँ इजोरियाक संग पुर्णिमा
तँ अन्हरिया संग अमावस्या
जनमसँ जिनगी जौं जुड़ल तँ
मृत्यु कहाँ फराक रहैत अछि।
मनुआँ...।

जग संगे जन-जन अछि जुड़ल
नेहक भूखल जग टौआइत अछि
अपन आन आ जाति-पाति संग
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि।
मनुआँ किए बौआइत रहैत अछि। q

झूठ

झूठक ओढ़ना झूठेक बिछौना
खेनाए पीनए झुट्ठे,
झूठक सभतैर हाट लागल छै
आँखियो भऽ गेल झुट्ठे।

हम छी झूठ झूठ अछि दुनियाँ

काज बेपार अछि झुट्ठे,
किनको नहि छैन महल अटारी
आँखि मुनैत सभ झुट्ठे।।

झुट्ठे सभ उपछै छथि पोखैर
अपसियांत छथि झुट्ठे,
झूठक हाट साँचो भेल झुट्ठे
गुरु गोंसांइ सभ झुट्ठे।।

सत्य करम आ सत्य विचार बिनु
जिनगी सबहक झुट्ठे,
अपन करम अपने सभ भोगब
नहि हमर बात ई झुट्ठे। q

भातक थारी

गमकि रहल गामक फुलवारी
मेघक कृपा रहल शुभकारी।

चननचूर तुलसीफूल गमकए
धानक एहिबेर भरल बखारी।

रोम रोम सुख पाबि रहल छै
भूख सुतत एहिबेर गोरथारी।

गाम दलान सुहावन शुभकर
सबहक आगू भातक थारी।

उसना भात साग बथुआ केर
अल्लुक चोखा अछि सुखकारी।

लाल चटनी धनिया केर पत्ता

खाइत रहू भरि भरि सभ थारी। q

मधुर प्रात

जागू हे मधुर प्रात।
पुष्पकँ पराग धएल
मधुकरकँ करैत याद
फुलैत छए पाबि किरण
सुरुज दऽ रहल धाहि
कण कण स्पंदित छै
पाबि क अहिंक राग।
जागू हे मधुर प्रात। q

जुग-पुरुष

जुग पुरुष
बाते नहि
करमे होइत छैक।

गाए चरबऽ बला सभ
किसुनमे नहि भऽ
जाएत छैक
ताहि लेल
गोबरधन सेहो उठबऽ
पड़ैत छैक।

राखऽ परैत छै
गीताक ज्ञान
लड़ऽ पड़ैत छै

गाण्डीवधारी संग
रथवाह बनि
भीष्म द्रोण कृपाचार्य आ अश्वथामा संग
आ वंश बचेबा लेल
जेष्ठ भ्राता कर्ण संग।

मारए पड़ै छै स्वकेँ
एकटा दोसर वंशकेँ बचेबा लेल
नव राष्ट्र केर निर्माण
आर नव धर्मक स्थापना लेल।
शकुनी सन चरित्रकेँ
कुत्तो नहि पुछै छै। q

दीप

दीप नेसलहुँ बुच्ची
दीपे सन तँ अहूँ छी
अपनाकेँ जरा कऽ
एहि आँगनमे इजोत कऽ
ओहि आँगन तक
अपनाकेँ जारैत
तन मन ज्योतित करैत रहलहुँ
एहि कुलसँ ओहि कुल तक
आइसँ नहि
अदौ कालसँ..!

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]

विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

Maithili Books can be purchased from: http://www.amazon.in/

For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/

विदेह सम्मान: *सम्मान-सूची*

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ**।

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

विदेह- प्रथममैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com कँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ कैंhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html ‘‘भालसरिक गाछ’’- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा ‘‘’विदेह’- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका’’ धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब ‘‘भालसरिक गाछ’’जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

*सिद्धिरस्तु*